Manoj Singh Rana

17 Sep 1975

10:21 PM

Allahabad

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 109337101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**17/09/1975**
दिन	बुधवार
जन्म समय	**22:21:00 घंटे**
इष्ट	41:19:58 घटी
स्थान	**Allahabad**
राज्य	Uttar Pradesh
देश	India

अक्षांश	25:26:08 उत्तर
रेखांश	81:50:46 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:02:37 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	22:18:23 घंटे
वेलान्तर	00:05:13 घंटे
साम्पातिक काल	22:02:22 घंटे
सूर्योदय	05:49:00 घंटे
सूर्यास्त	18:05:20 घंटे
दिनमान	12:16:20 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	00:39:17 कन्या
लग्न के अंश	19:47:08 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	वृष - शुक्र
राशि-स्वामी	**कुम्भ - शनि**
नक्षत्र-चरण	**धनिष्ठा - 3**
नक्षत्र स्वामी	मंगल
योग	सुकर्मा
करण	कौलव
गण	राक्षस
योनि	सिंह
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मार्जार
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	गू-गूजरमल
पाया(राशि-नक्षत्र)	ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1897	भाद्रपद	26
पंजाबी	संवत : 2032	आश्विन	2
बंगाली	सन् : 1382	भाद्रपद	31
तमिल	संवत : 2032	पुरुटासी	1
केरल	कोल्लम : 1151	कन्नी	1
नेपाली	संवत : 2032	आश्विन	1
चैत्रादि	संवत : 2032	भाद्रपद	शुक्ल 12
कार्तिकादि	संवत : 2032	भाद्रपद	शुक्ल 12

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 12
तिथि समाप्ति काल _____: 10:22:31
जन्म तिथि _____: 13
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: श्रवण
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 08:42:37 घंटे
जन्म योग _____: धनिष्ठा
सूर्योदय कालीन योग ____: सुकर्मा
योग समाप्ति काल _____: 27:01:11 घंटे
जन्म योग _____: सुकर्मा
सूर्योदय कालीन करण ____: बालव
करण समाप्ति काल _____: 10:22:31 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 34:05:56
भभोग _____: 66:44:30
भोग्य दशा काल _____: मंगल 3 वर्ष 4 मा 30 दि

घात चक्र

मास _____: चैत्र
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: आर्द्रा
योग _____: गण्ड
करण _____: किंस्तुघ्न
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: मूषक
लग्न _____: मिथुन
सूर्य _____: वृष
चन्द्र _____: धनु
मंगल _____: मिथुन
बुध _____: वृष
गुरु _____: कर्क
शुक्र _____: सिंह
शनि _____: मेष
राहु _____: कन्या

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

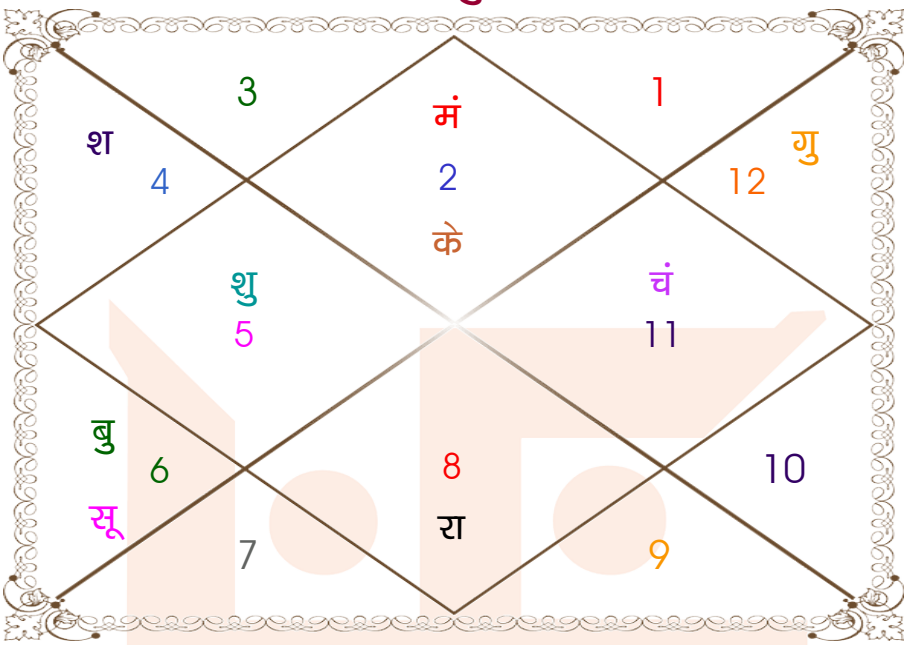

चन्द्र कुंडली

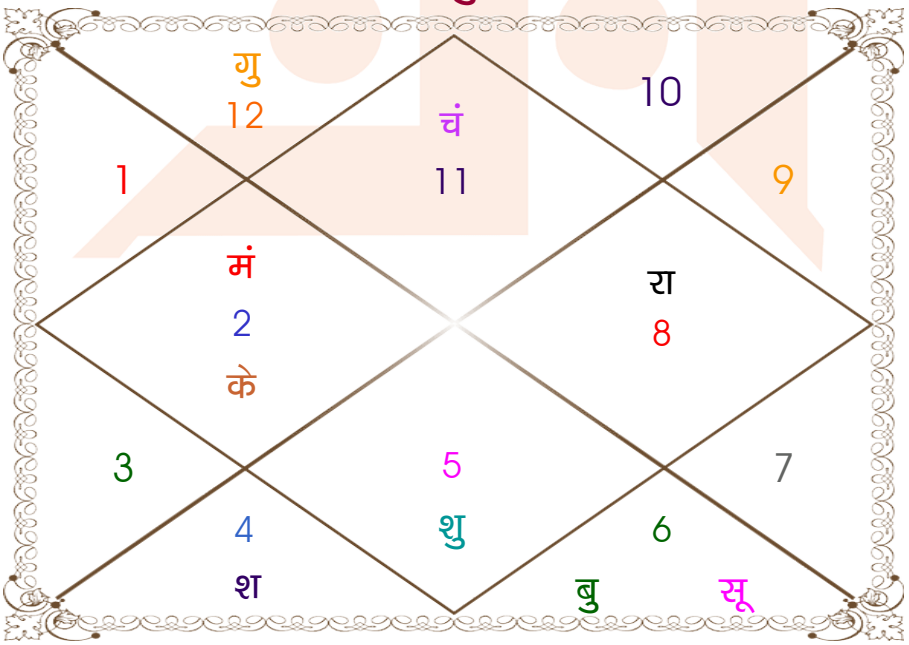

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

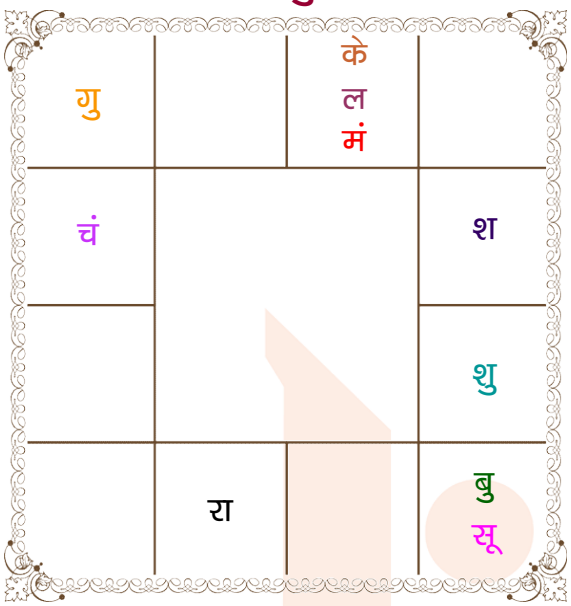

लग्न कुंडली

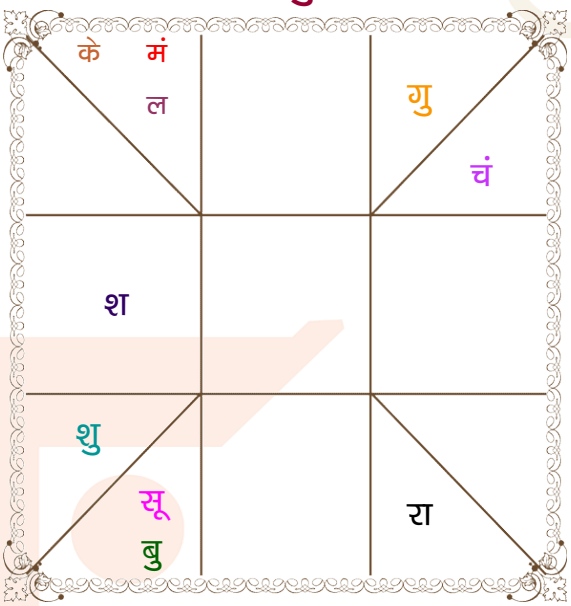

विंशोत्तरी

मंगल 3वर्ष 4मा 30दि

मंगल

17/09/1975

17/02/2092

मंगल	16/02/1979
राहु	16/02/1997
गुरु	16/02/2013
शनि	17/02/2032
बुध	16/02/2049
केतु	17/02/2056
शुक्र	17/02/2076
सूर्य	16/02/2082
चन्द्र	17/02/2092

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 11मा 21दि

उल्का

08/09/2024

08/09/2030

उल्का	08/09/2025
सिद्धा	08/11/2026
संकटा	09/03/2028
मंगला	09/05/2028
पिंगला	08/09/2028
धान्या	10/03/2029
भ्रामरी	08/11/2029
भद्रिका	08/09/2030

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	19:47:08	359:28:04	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	केतु	---
सूर्य			कन्या	00:39:17	00:58:31	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	सम राशि
चंद्र			कुंभ	00:09:32	11:59:01	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	सम राशि
मंगल			वृष	25:18:02	00:28:46	मृगशिरा	1	5	शुक्र	मंगल	राहु	सम राशि
बुध			कन्या	26:55:24	00:46:17	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	गुरु	स्वराशि
गुरु	व		मीन	29:20:56	00:06:10	रेवती	4	27	गुरु	बुध	शनि	स्वराशि
शुक्र	व		सिंह	01:54:33	00:00:53	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	शत्रु राशि
शनि			कर्क	06:31:29	00:05:36	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	बुध	शत्रु राशि
राहु	व		वृश्चि	00:13:38	00:10:25	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	चंद्र	शत्रु राशि
केतु	व		वृष	00:13:38	00:10:25	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	राहु	सम राशि
हर्ष			तुला	06:57:48	00:03:13	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	---
नेप			वृश्चि	15:41:57	00:00:52	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	गुरु	---
प्लूटो			कन्या	15:01:22	00:02:16	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	---
दशम भाव			कुंभ	04:54:51	--	धनिष्ठा	--	23	शनि	मंगल	सूर्य	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:31:19

लग्न-चलित

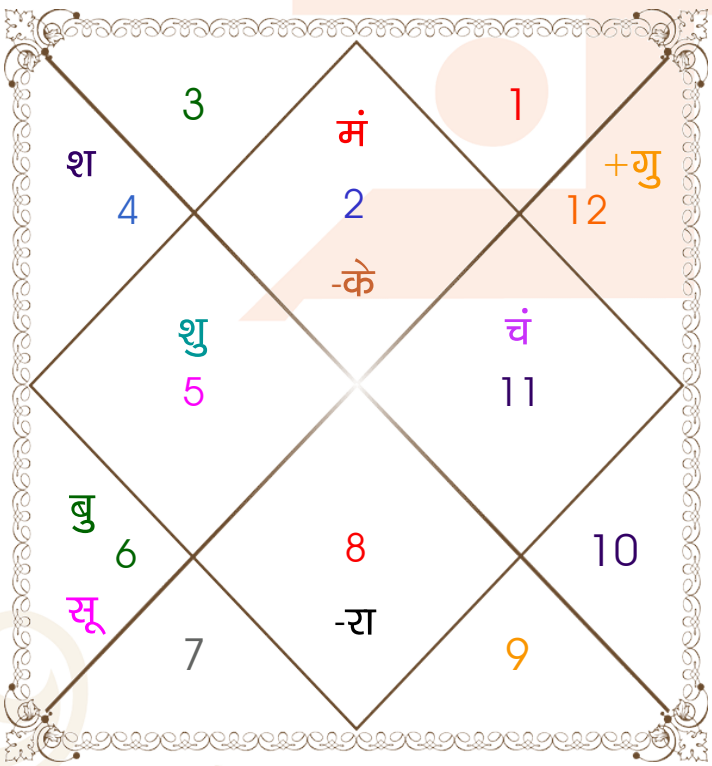

चन्द्र कुंडली

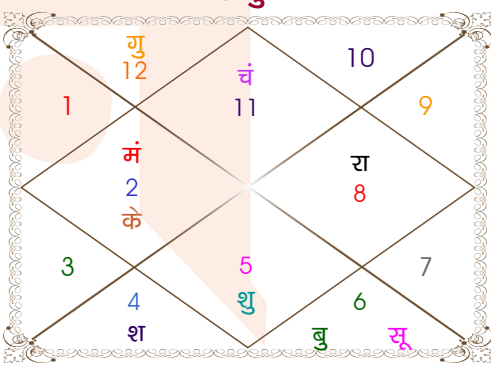

नवमांश कुंडली

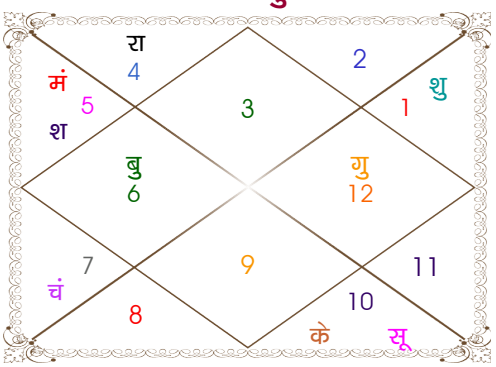

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृष	02:18:25	वृष	19:47:08
2	मिथुन	02:18:25	मिथुन	14:49:42
3	मिथुन	27:21:00	कर्क	09:52:17
4	कर्क	22:23:34	सिंह	04:54:51
5	सिंह	22:23:34	कन्या	09:52:17
6	कन्या	27:21:00	तुला	14:49:42
7	वृश्चिक	02:18:25	वृश्चिक	19:47:08
8	धनु	02:18:25	धनु	14:49:42
9	धनु	27:21:00	मकर	09:52:17
10	मकर	22:23:34	कुम्भ	04:54:51
11	कुम्भ	22:23:34	मीन	09:52:17
12	मीन	27:21:00	मेष	14:49:42

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष	19:47:08
2	मिथुन	14:13:55
3	कर्क	08:06:45
4	सिंह	04:54:51
5	कन्या	07:10:23
6	तुला	13:58:19
7	वृश्चिक	19:47:08
8	धनु	14:13:55
9	मकर	08:06:45
10	कुम्भ	04:54:51
11	मीन	07:10:23
12	मेष	13:58:19

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण

चलित कुंडली

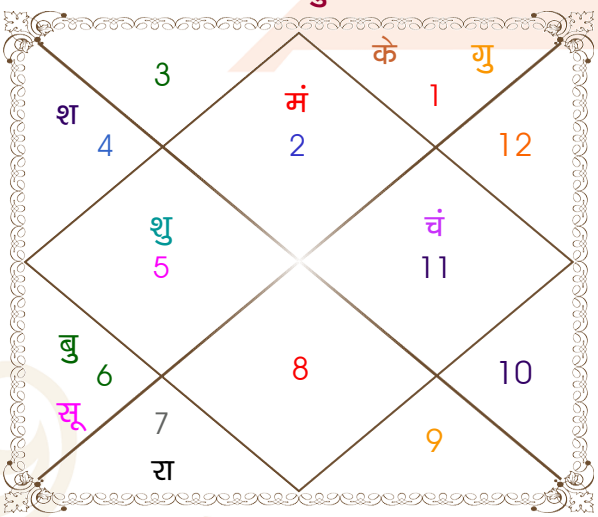

भाव कुंडली

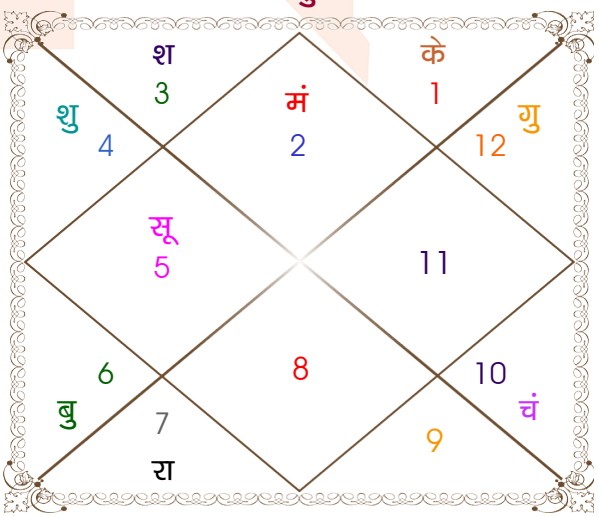

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			-------- अवस्था --------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	मृत	शक्त	आगमन	1.09	26 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	बाल	निपीदित	प्रकाश	2.18	36 %
मंगल	भ्रातृ	भ्रातृ	बाल	निपीदित	आगमन	2.09	53 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	बाल	स्वस्थ	आगमन	7.00	36 %
गुरु	आत्मा	धन	बाल	स्वस्थ	भोजन	4.92	76 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	बाल	खल	आगमन	2.45	47 %
शनि	मातृ	आयु	वृद्ध	खल	नृत्यलिप्सा	0.85	24 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	खल	उपवेशन	0.00	11 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	निपीदित	भोजन	0.00	0 %
कुल						20.58	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण

चलित कुंडली

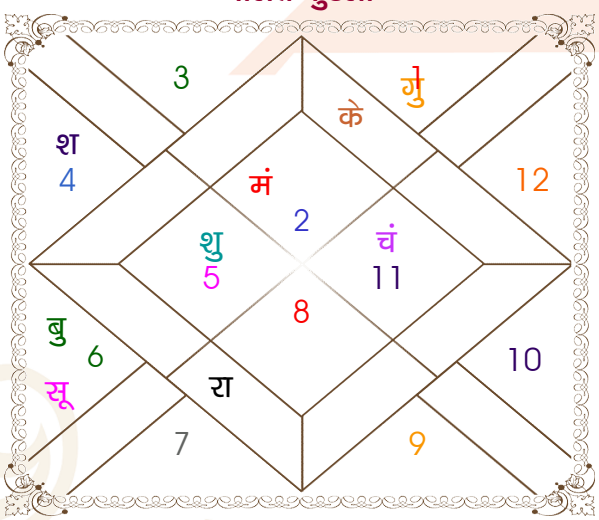

लग्न-चलित

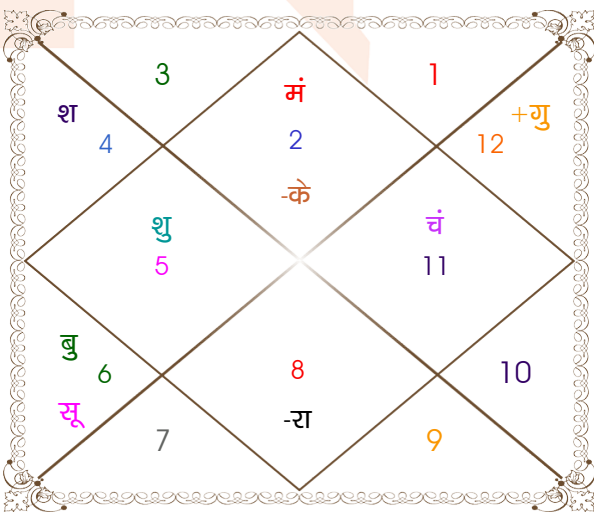

सुदर्शन चक्र

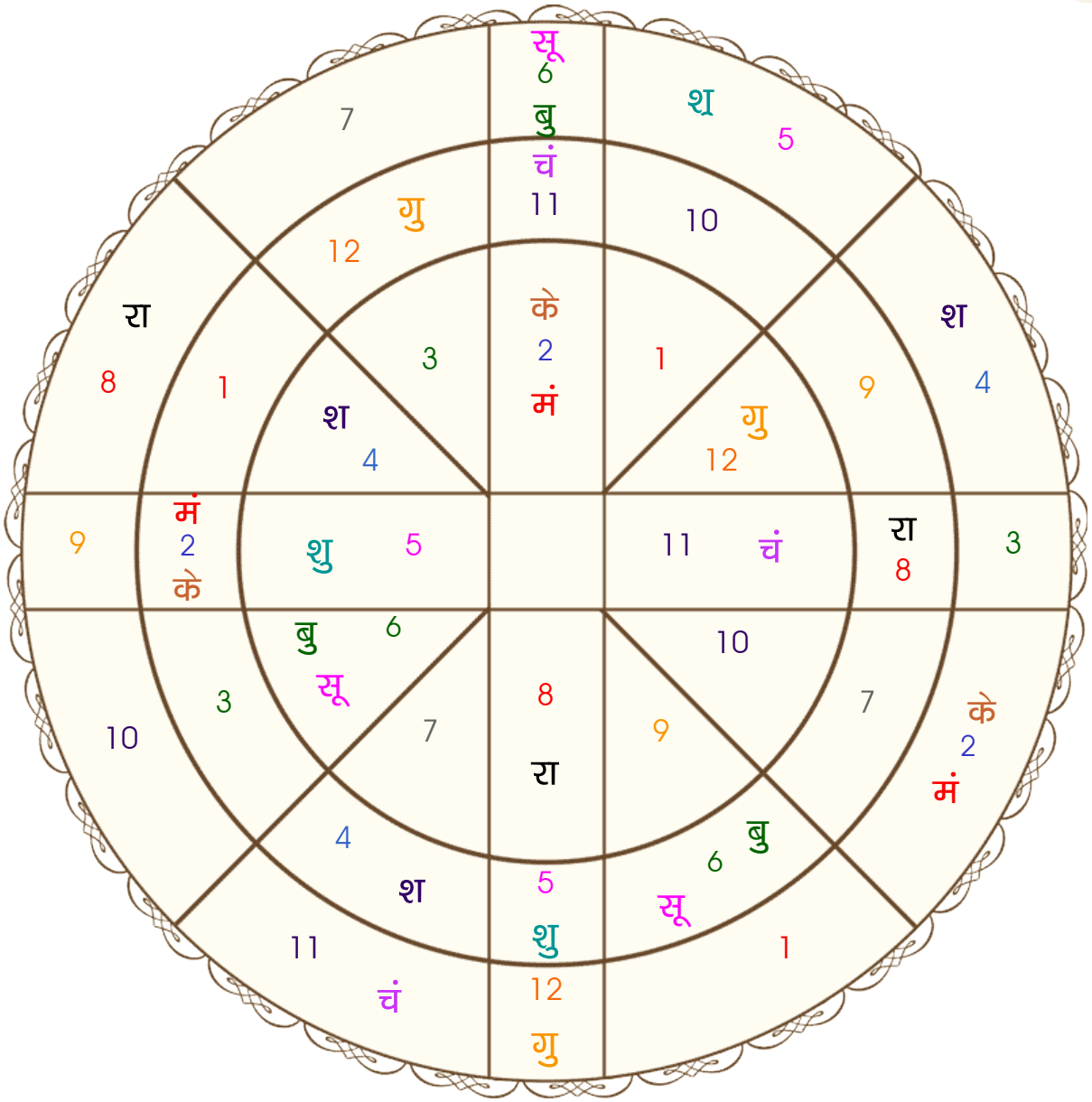

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

भोग्य दशा काल : मंगल 3 वर्ष 4 मास 10 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कन्या	00:45:40	बुध	सूर्य	राहु	शुक्र
चंद्र		कुंभ	00:15:54	शनि	मंगल	बुध	बुध
मंगल		वृष	25:24:25	शुक्र	मंगल	राहु	शुक्र
बुध		कन्या	27:01:47	बुध	मंगल	गुरु	शुक्र
गुरु	व	मीन	29:27:19	गुरु	बुध	शनि	राहु
शुक्र	व	सिंह	02:00:56	सूर्य	केतु	शुक्र	गुरु
शनि		कर्क	06:37:52	चंद्र	शनि	बुध	राहु
राहु	व	वृश्चि	00:20:01	मंगल	गुरु	चंद्र	शुक्र
केतु	व	वृष	00:20:01	शुक्र	सूर्य	राहु	बुध
हर्ष		तुला	07:04:11	शुक्र	राहु	राहु	गुरु
नेप		वृश्चि	15:48:20	मंगल	शनि	गुरु	शुक्र
प्लूटो		कन्या	15:07:44	बुध	चंद्र	गुरु	सूर्य

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृष	19:53:30	शुक्र	चंद्र	केतु	चंद्र
2	मिथु	14:20:18	बुध	राहु	बुध	शनि
3	कर्क	08:13:08	चंद्र	शनि	शुक्र	शुक्र
4	सिंह	05:01:14	सूर्य	केतु	मंगल	गुरु
5	कन्या	07:16:46	बुध	सूर्य	केतु	मंगल
6	तुला	14:04:42	शुक्र	राहु	बुध	गुरु
7	वृश्चि	19:53:30	मंगल	बुध	शुक्र	चंद्र
8	धनु	14:20:18	गुरु	शुक्र	शुक्र	राहु
9	मक	08:13:08	शनि	सूर्य	शुक्र	सूर्य
10	कुंभ	05:01:14	शनि	मंगल	सूर्य	राहु
11	मीन	07:16:46	गुरु	शनि	बुध	शनि
12	मेष	14:04:42	मंगल	शुक्र	शुक्र	मंगल

के.पी. अयनांश : 23:24:56

फॉरच्युना : तुला 19:23:45

लग्न कुंडली

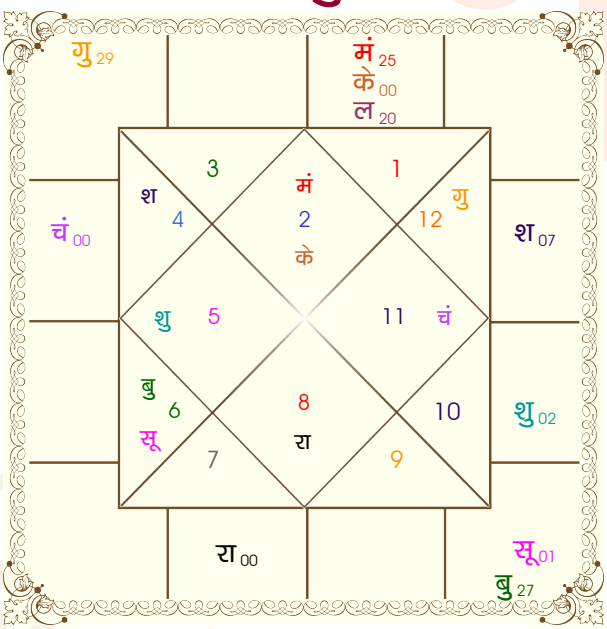

भाव कुंडली

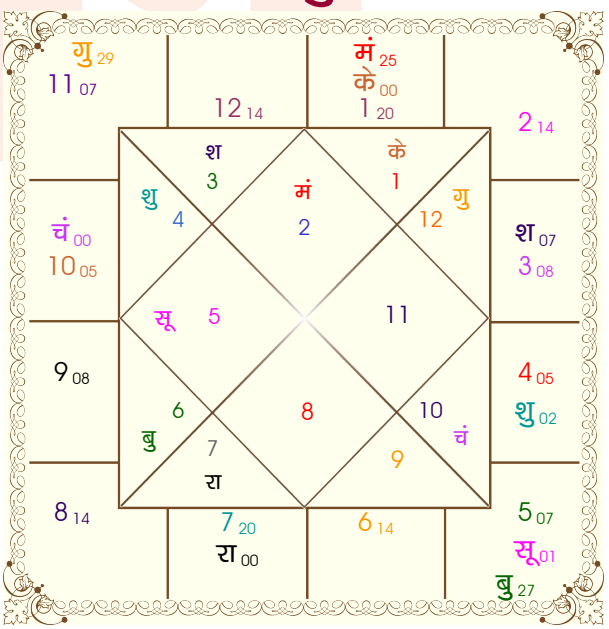

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र, मंगल+ बुध, शुक्र-
2	बुध- गुरु- शनि+
3	चंद्र- शुक्र,
4	सूर्य+ केतु+
5	बुध, गुरु+
6	शुक्र- राहु,
7	चंद्र- मंगल, बुध-
8	गुरु- राहु-
9	चंद्र, शनि,
10	शनि,
11	गुरु, राहु+
12	चंद्र- मंगल, बुध- शुक्र, केतु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4+
चंद्र	1, 3- 7- 9, 12-
मंगल	1+ 7, 12,
बुध	1, 2- 5, 7- 12-
गुरु	2- 5+ 8- 11,
शुक्र	1- 3, 6- 12,
शनि	2+ 9, 10,
राहु	6, 8- 11+
केतु	4+ 12,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
लग्न राशि स्वामी	शुक्र
राशि नक्षत्र स्वामी	मंगल
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	बुध

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	चं मं बु	मं	--	शु
2	श	श	गु	बु
3	--	शु	--	चं
4	सू के	सू	सू के	सू
5	गु	बु	गु	बु
6	--	रा	--	शु
7	--	--	चं मं बु	मं
8	--	--	रा	गु
9	--	चं	श	श
10	--	--	श	श
11	रा	गु	रा	गु
12	शु	के	चं मं बु	मं

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	4	5,9	कन्या	4
चंद्र	3	1	कुम्भ	9
मंगल	7,12	10	वृष	1
बुध	2,5	7	कन्या	5
गुरु	8,11	---	मीन	11
शुक्र	1,6	8,12	सिंह	3
शनि	9,10	3,11	कर्क	2
राहु	---	2,6	वृश्चिक	6
केतु	---	4	वृष	12

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	4	5,9	4	---	2,6	6
चंद्र	7,12	10	1	2,5	7	5
मंगल	7,12	10	1	---	2,6	6
बुध	7,12	10	1	8,11	---	11
गुरु	2,5	7	5	9,10	3,11	2
शुक्र	---	4	12	1,6	8,12	3
शनि	9,10	3,11	2	2,5	7	5
राहु	8,11	---	11	3	1	9
केतु	4	5,9	4	---	2,6	6

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	150.65	300.16	55.30	176.92	359.35	121.91	96.52	210.23	30.23	186.96	225.70	165.02
सूर्य	--	षष्ठ	--	--	--	--	--	तृती	--	--	--	युति
150.65	0.00	0.71	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.98	0.00	0.00	0.00	0.66
चंद्र	--	--	पंच	--	तृती	सप्त	--	--	चतु	--	--	--
300.16	0.00	0.00	0.88	0.00	2.93	9.83	0.00	0.00	3.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	4था	--	--	पंच	--	--	--	--	--	--	सप्त	--
55.30	8.47	0.00	0.00	2.73	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.36	0.00
बुध	--	पंच	--	--	सप्त	--	--	--	--	युति	--	युति
176.92	0.00	1.99	0.00	0.00	9.68	0.00	0.00	0.00	0.00	4.96	0.00	3.19
गुरु	--	--	तृती	सप्त	--	5वां	--	--	--	सप्त	9वां	सप्त
359.35	0.00	0.00	1.47	9.68	0.00	9.64	0.00	0.00	0.00	6.99	1.41	0.70
शुक्र	--	सप्त	--	तृती	--	--	--	चतु	--	तृती	--	--
121.91	0.00	9.83	0.00	0.79	0.00	0.00	0.00	2.71	0.00	0.74	0.00	0.00
शनि	3रा	--	--	--	10वा	--	--	--	--	चतु	--	3रा
96.52	8.17	0.00	0.00	0.00	7.31	0.00	0.00	0.00	0.00	2.98	0.00	6.29
राहु	--	चतु	--	--	षष्ठ	--	--	--	सप्त	--	--	--
210.23	0.00	3.00	0.00	0.00	0.19	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	पंच	--	--	--	--	चतु	--	सप्त	--	--	--	अष्टां
30.23	2.98	0.00	0.00	0.00	0.00	2.71	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00	0.95
हर्ष	--	--	--	युति	सप्त	--	--	--	--	--	--	--
186.96	0.00	0.00	0.00	4.96	6.99	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	--	--
225.70	0.00	0.00	5.36	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	अष्टां	--	युति	सप्त	--	--	अष्ट	--	--	तृती	--
165.02	0.66	0.98	0.00	3.19	0.70	0.00	0.00	0.95	0.00	0.00	2.95	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	49.79	74.83	99.87	124.91	159.87	194.83	229.79	254.83	279.87	304.91	339.87	14.83
सूर्य	--	--	--	--	युति	अष्ट	--	--	--	--	सप्त	--
150.65	0.00	0.00	0.00	0.00	5.69	0.27	0.00	0.00	0.00	0.00	5.69	0.00
चंद्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	--
300.16	0.00	0.00	0.00	8.79	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.79	0.90	0.00
मंगल	युति	--	--	--	4था	--	सप्त	8वां	8वां	--	--	--
55.30	8.38	0.00	0.00	0.00	0.45	0.00	8.38	4.57	0.45	0.00	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
176.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	5वां	--	--	9वां	--	--	--	--	--
359.35	0.00	0.00	0.00	8.35	0.00	0.00	5.39	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
121.91	0.00	0.00	0.00	9.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.51	0.00	0.00
शनि	--	--	युति	--	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा
96.52	0.00	0.00	9.39	0.00	9.39	0.00	0.00	0.00	9.39	0.00	0.00	6.45
राहु	--	--	--	--	--	--	--	--	--	चतु	--	--
210.23	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.01	0.00	0.00
केतु	--	अष्ट	--	चतु	--	--	--	--	--	--	--	--
30.23	0.00	0.81	0.00	1.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	--	--	सप्त
186.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.80	0.00	0.00	2.17	0.00	0.00	6.80
नेप	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	षष्ठ
225.70	9.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.10	0.00	0.14	0.00	0.00	0.20
प्लूटो	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--
165.02	0.00	0.00	0.00	0.00	8.58	0.00	0.95	3.00	0.66	0.00	8.58	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	49.79	74.23	98.11	124.91	157.17	193.97	229.79	254.23	278.11	304.91	337.17	13.97
सूर्य	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--
150.65	0.00	0.00	0.00	0.00	7.76	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.76	0.00
चंद्र	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
300.16	0.00	0.00	0.00	8.79	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.79	0.00	0.00
मंगल	युति	--	--	--	4था	--	सप्त	8वां	8वां	--	--	--
55.30	8.38	0.00	0.00	0.00	3.22	0.00	8.38	4.00	2.27	0.00	0.00	0.00
बुध	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
176.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	5वां	--	सप्त	9वां	9वां	--	--	--	युति
359.35	0.00	0.00	0.00	8.35	0.00	0.39	5.39	0.12	0.00	0.00	0.00	0.39
शुक्र	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--
121.91	0.00	0.00	0.00	9.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.51	0.00	0.00
शनि	--	--	युति	--	3रा	--	--	--	सप्त	--	--	10वा
96.52	0.00	0.00	9.86	0.00	9.98	0.00	0.00	0.00	9.86	0.00	0.00	7.11
राहु	--	--	--	--	--	--	--	--	--	चतु	--	--
210.23	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.01	0.00	0.00
केतु	--	अष्ट	--	चतु	--	--	--	--	--	--	--	--
30.23	0.00	0.01	0.00	1.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	--	चतु	--	षष्ठ	सप्त
186.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.43	0.00	0.00	2.87	0.00	0.95	7.43
नेप	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
225.70	9.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.10	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--
165.02	0.00	0.00	0.00	0.00	6.81	0.00	0.95	2.94	0.00	0.00	6.81	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

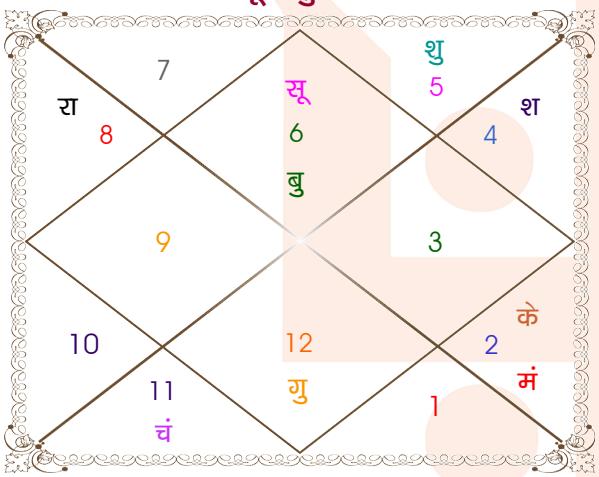

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

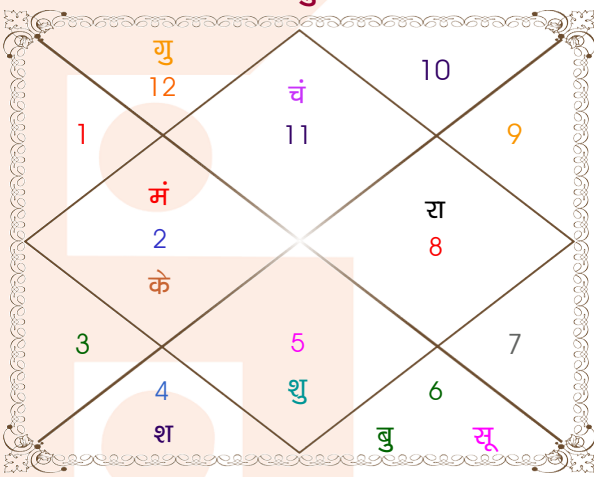

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

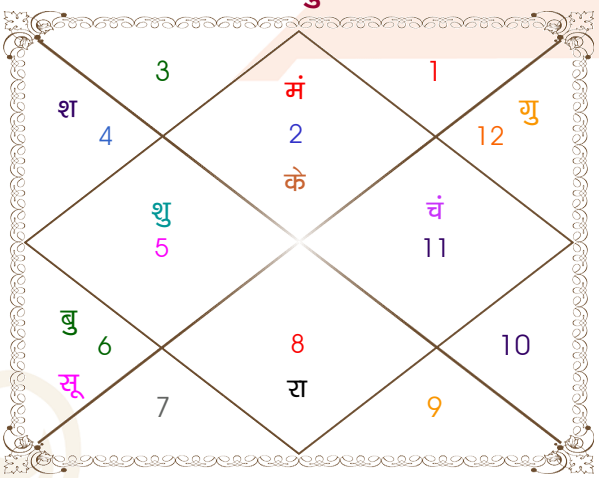

देह विचारः

होरा कुंडली

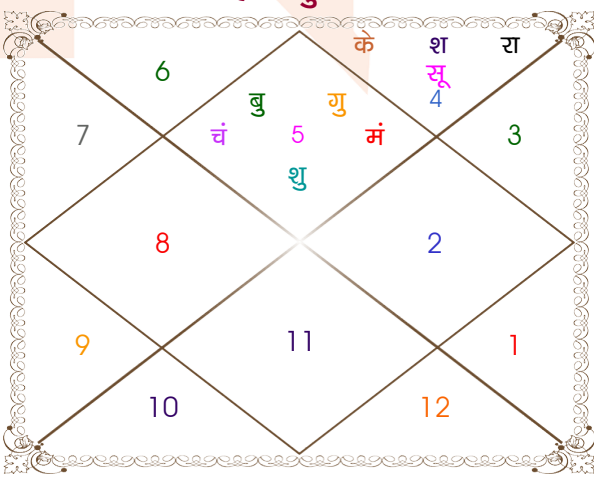

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

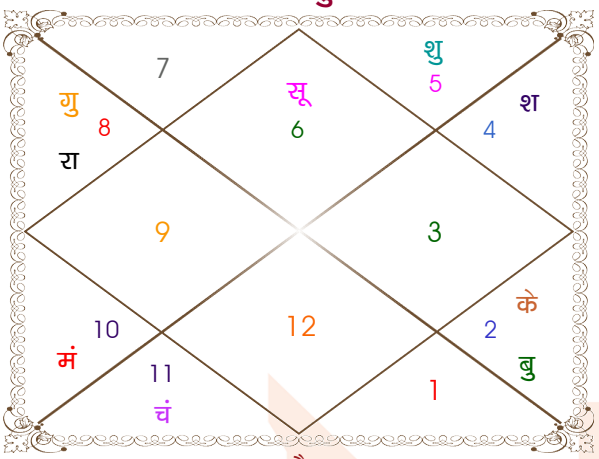

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

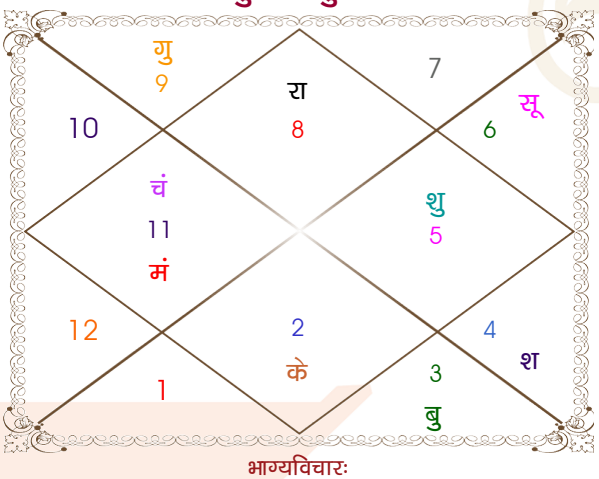

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

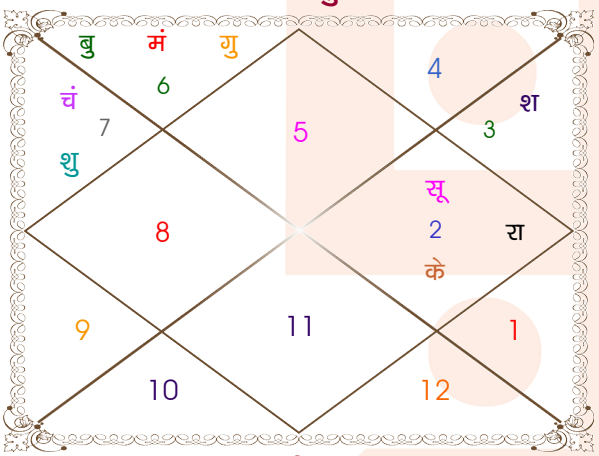

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

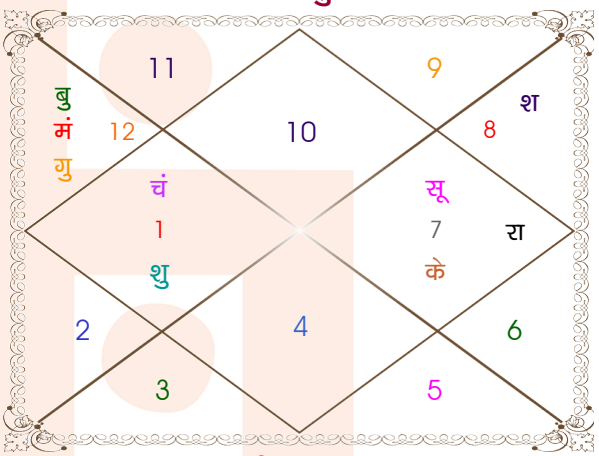

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

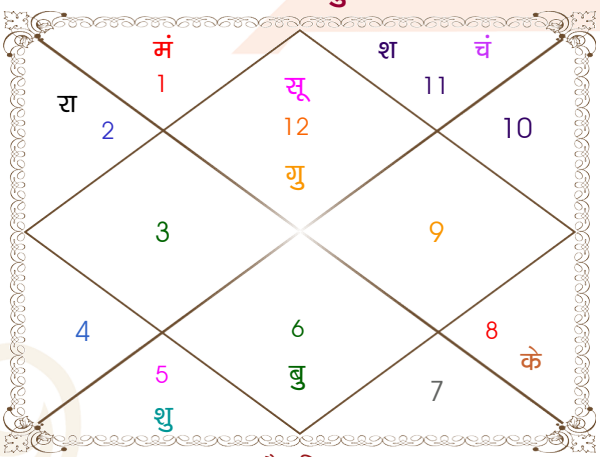

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

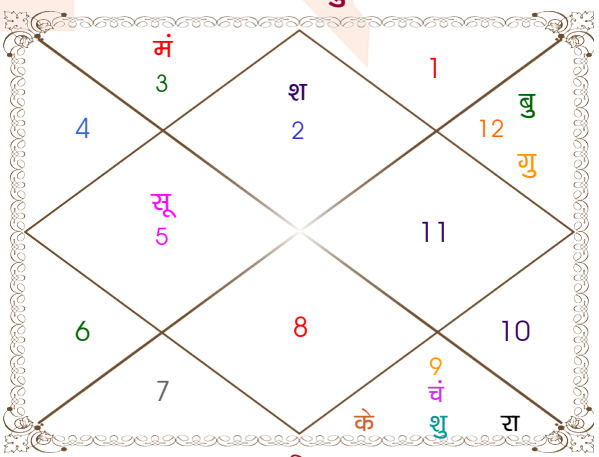

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

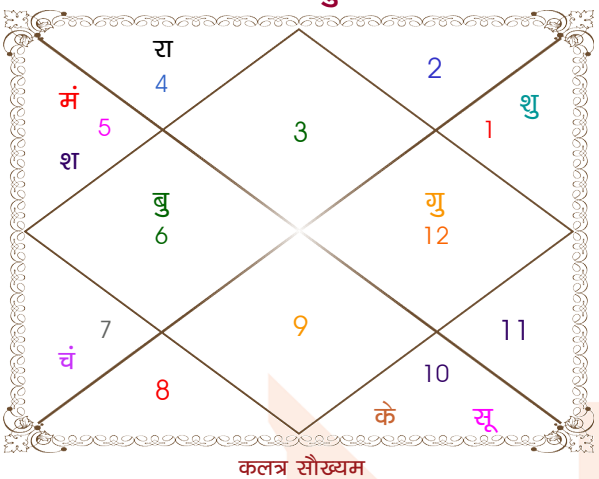

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

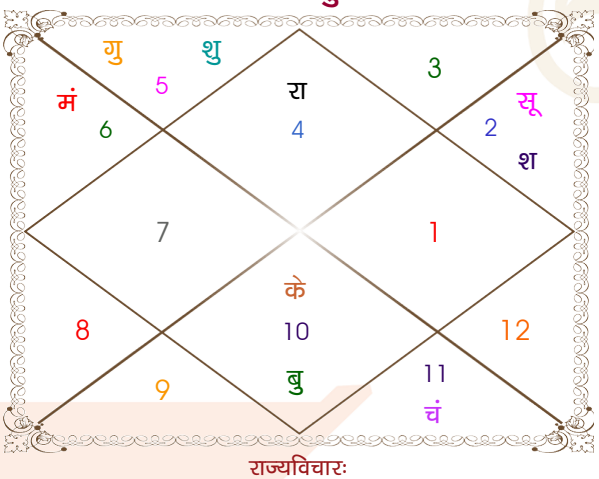

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

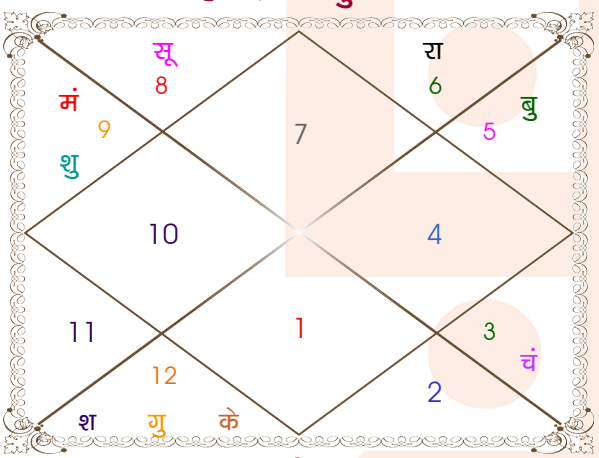

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

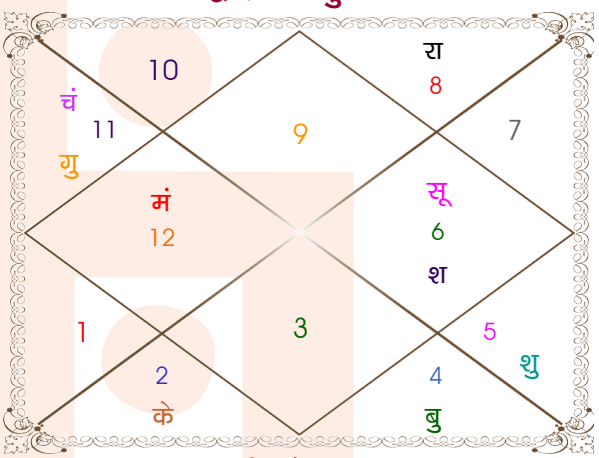

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

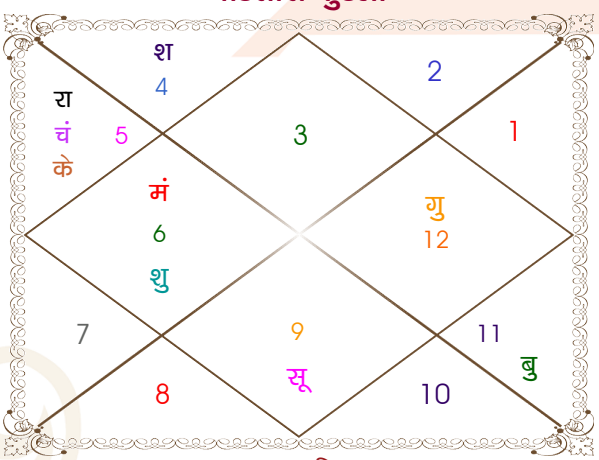

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

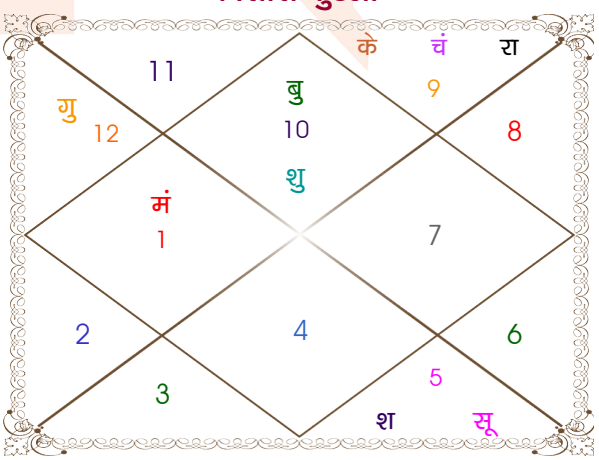

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

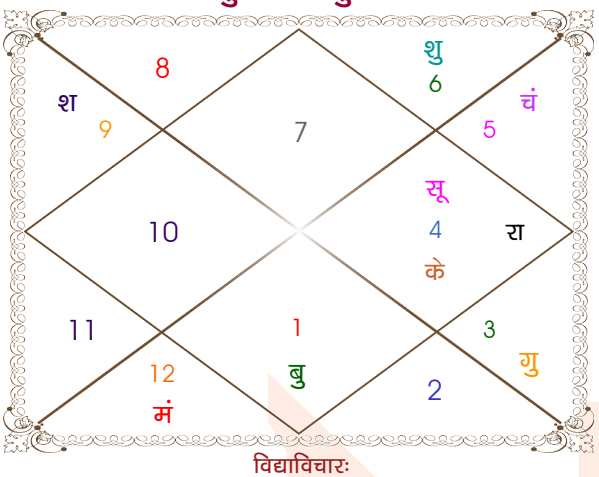

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

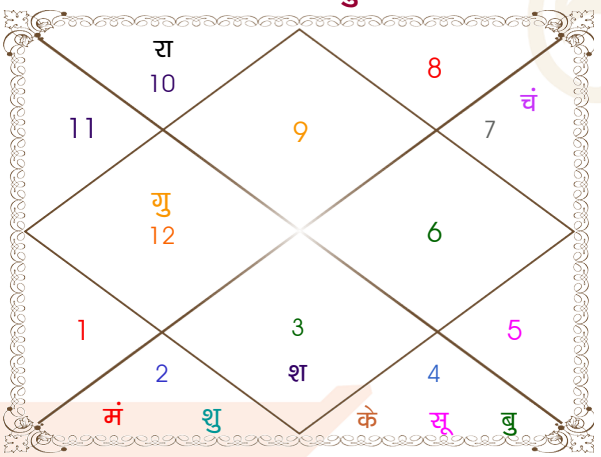

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

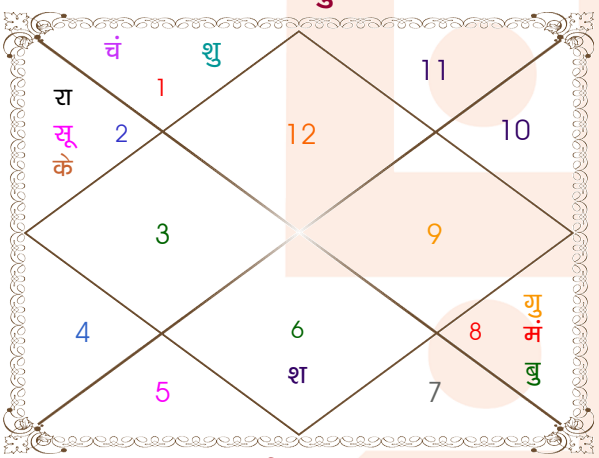

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

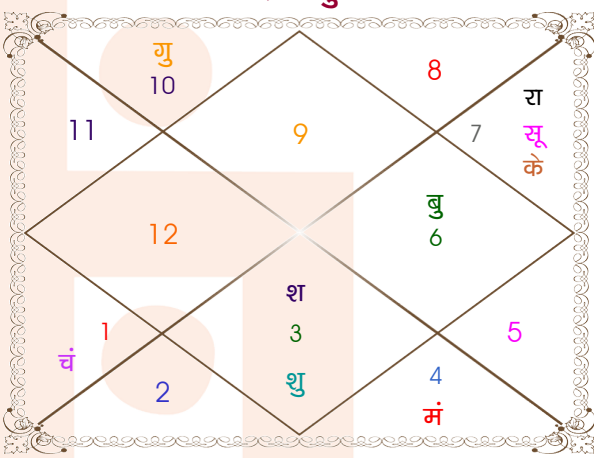

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

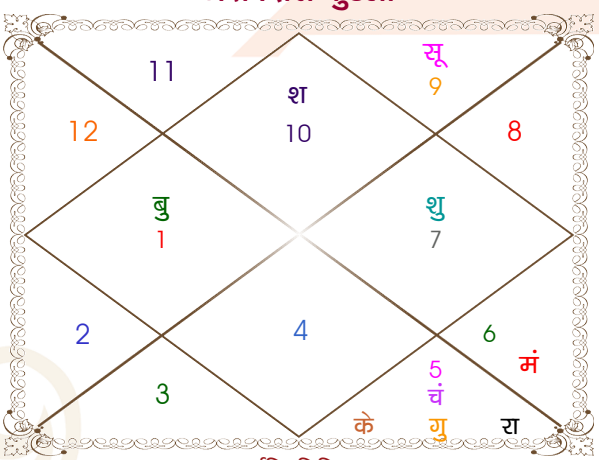

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

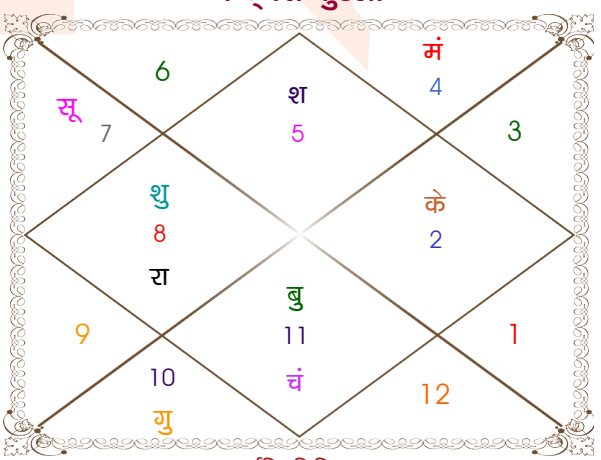

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृष	कन्या	कुंभ	वृष	कन्या	मीन	सिंह	कर्क	वृश्चि	वृष
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	कन्या	कन्या	कुंभ	मक	वृष	वृश्चि	सिंह	कर्क	वृश्चि	वृष
चतुर्थांश	वृश्चि	कन्या	कुंभ	कुंभ	मिथु	धनु	सिंह	कर्क	वृश्चि	वृष
सप्तमांश	मीन	मीन	कुंभ	मेष	कन्या	मीन	सिंह	कुंभ	वृष	वृश्चि
नवमांश	मिथु	मक	तुला	सिंह	कन्या	मीन	मेष	सिंह	कर्क	मक
दशमांश	कर्क	वृष	कुंभ	कन्या	मक	सिंह	सिंह	वृष	कर्क	मक
द्वादशांश	धनु	कन्या	कुंभ	मीन	कर्क	कुंभ	सिंह	कन्या	वृश्चि	वृष
षोडशांश	मिथु	धनु	सिंह	कन्या	कुंभ	मीन	कन्या	कर्क	सिंह	सिंह
विंशांश	मक	सिंह	धनु	मेष	मक	मीन	मक	सिंह	धनु	धनु
चतुर्विंशांश	तुला	कर्क	सिंह	मीन	मेष	मिथु	कन्या	धनु	कर्क	कर्क
सप्तविंशांश	धनु	कर्क	तुला	वृष	कर्क	मीन	वृष	मिथु	मक	कर्क
त्रिंशांश	मीन	वृष	मेष	वृश्चि	वृश्चि	वृश्चि	मेष	कन्या	वृष	वृष
खवेदांश	धनु	तुला	मेष	कर्क	कन्या	मक	मिथु	मिथु	तुला	तुला
अक्षवेदांश	मक	धनु	सिंह	कन्या	मेष	सिंह	तुला	मक	सिंह	सिंह
षष्ट्यंश	सिंह	तुला	कुंभ	कर्क	कुंभ	मक	वृश्चि	सिंह	वृश्चि	वृष

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---
चन्द्र	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
मंगल	2 किंसुक	3 व्यंजन	3 उत्तम	4 नागपुष्प
बुध	2 किंसुक	3 व्यंजन	3 उत्तम	5 कन्दुक
गुरु	2 किंसुक	3 व्यंजन	4 गोपुर	7 कल्पवृक्ष
शुक्र	0 ---	0 ---	0 ---	2 भेदक
शनि	0 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
राहु	0 ---	0 ---	0 ---	0 ---
केतु	0 ---	0 ---	0 ---	1 ---

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	8.20	7.70	13.80	16.45	17.20	11.50	8.20	7.40	15.20
सप्तवर्ग	8.50	7.70	14.55	16.55	17.30	11.38	9.95	8.90	14.40
दशवर्ग	9.10	8.05	14.48	15.00	13.98	12.60	10.68	8.45	14.63
षोडशवर्ग	9.43	8.40	13.83	15.60	15.18	13.90	9.63	8.35	13.90

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र
मंगल	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	सम	शत्रु	सम	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम
मंगल	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
बुध	सम	अधिशत्रु	शत्रु	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	---	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र
शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	13	29	21	56	28	18	26
सप्तवर्गज बल	41	41	128	141	146	68	88
ओजयुग्मक बल	0	0	15	0	0	0	15
केन्द्र बल	30	60	60	30	30	60	15
द्रेष्काण बल	15	0	0	0	0	0	0
कुल स्थान बल	99	130	223	227	204	146	144
कुल दिग्बल	9	2	23	18	43	59	16
नतोन्नत बल	8	52	52	60	8	8	52
पक्ष बल	10	100	10	10	50	50	10
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	60	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	15	0
मास बल	0	0	0	30	0	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	66	48	59	40	42	47	4
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	84	199	122	186	160	180	126
कुल चेष्टाबल	0	0	42	44	52	50	20
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-6	-12	0	-2	-19	24	10
कुल षट्बल	247	371	427	497	474	501	324
रूप षट्बल	4.1	6.2	7.1	8.3	7.9	8.4	5.4
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	0.8	1.0	1.4	1.2	1.2	1.5	1.1
संबंधित पद	7	6	2	4	3	1	5

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	20.47	38.05	29.48	49.60	38.21	30.34	22.80
कष्ट फल	36.27	17.74	26.84	8.00	16.04	20.28	36.96

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	501	497	371	247	497	501	427	474	324	324	474	427
भावदिग्बल	30	50	50	0	20	10	60	10	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	49	53	51	63	3	50	32	63	19	17	15	41
कुल भाव बल	580	601	472	309	520	562	519	547	393	371	499	508
रूप भाव बल	9.7	10.0	7.9	5.2	8.7	9.4	8.6	9.1	6.6	6.2	8.3	8.5
संबंधित पद	2	1	9	12	5	3	6	4	10	11	8	7

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

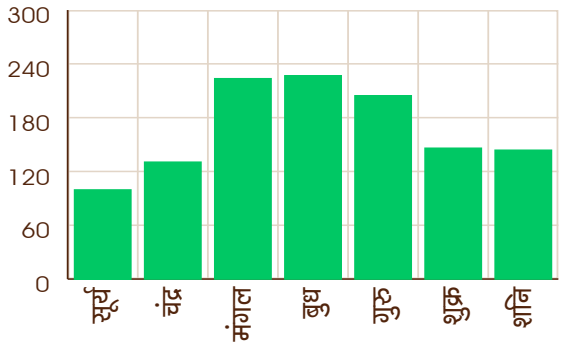

दिग्बल

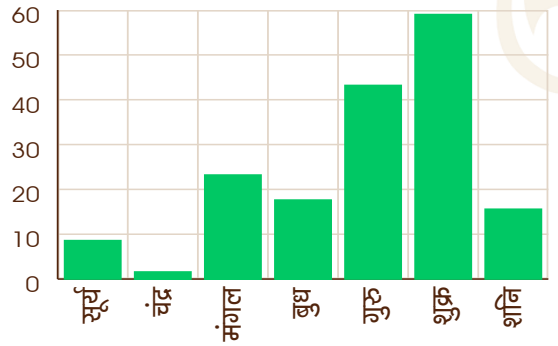

कालबल

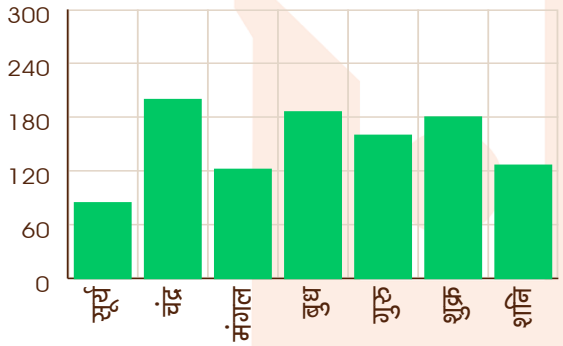

चेष्टाबल

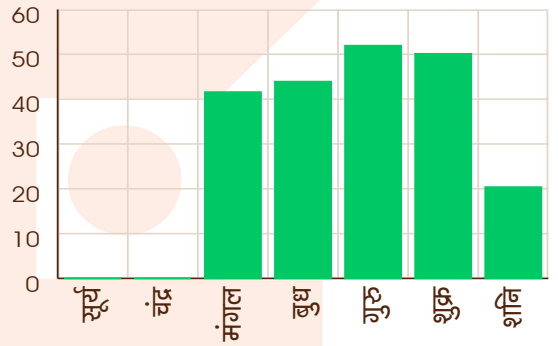

नैसर्गिक बल

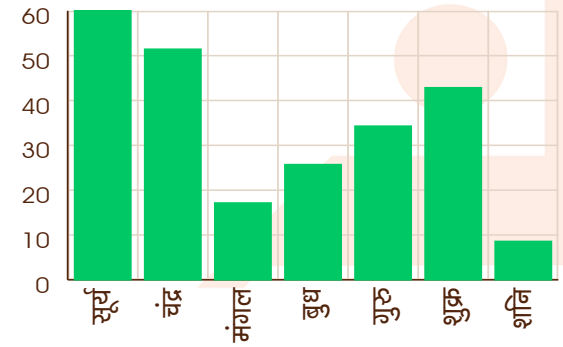

दृग्बल

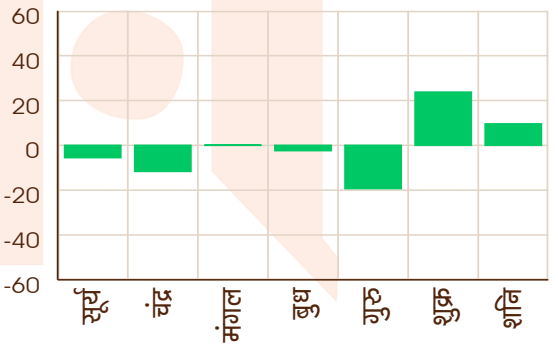

रूप षट्बल

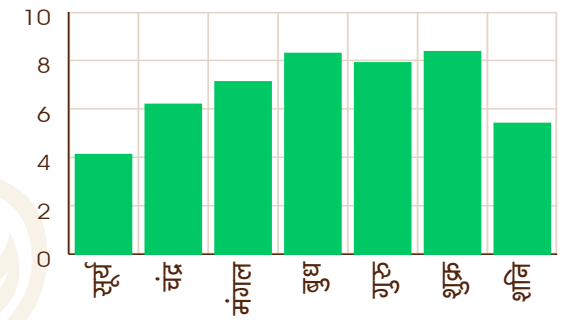

न्यूनतम षट्बल

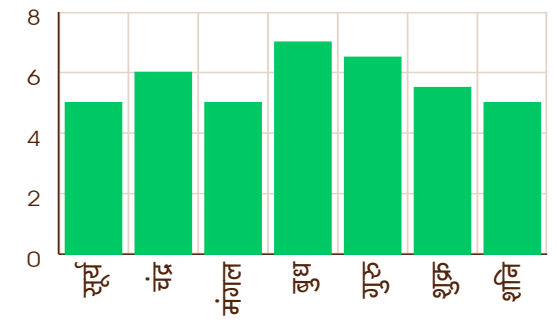

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

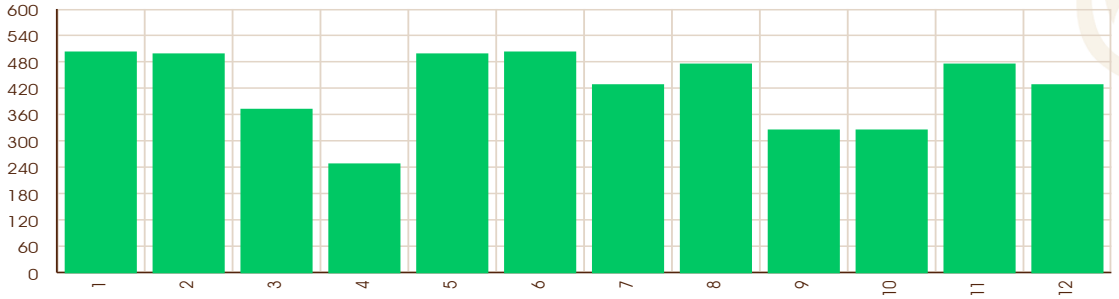

भावदिग्बल

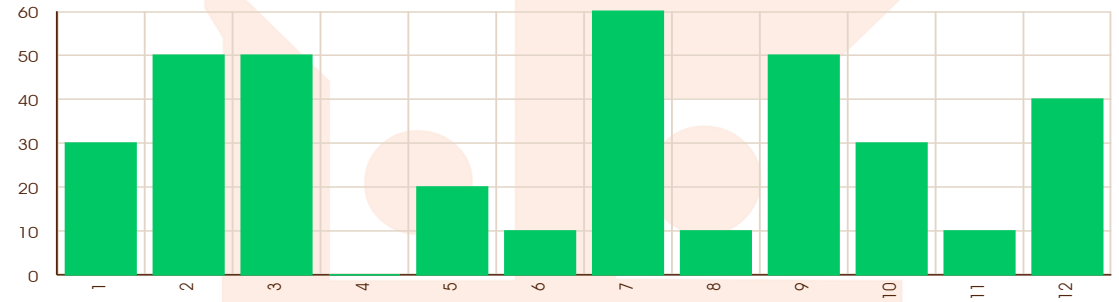

भावदृष्टि बल

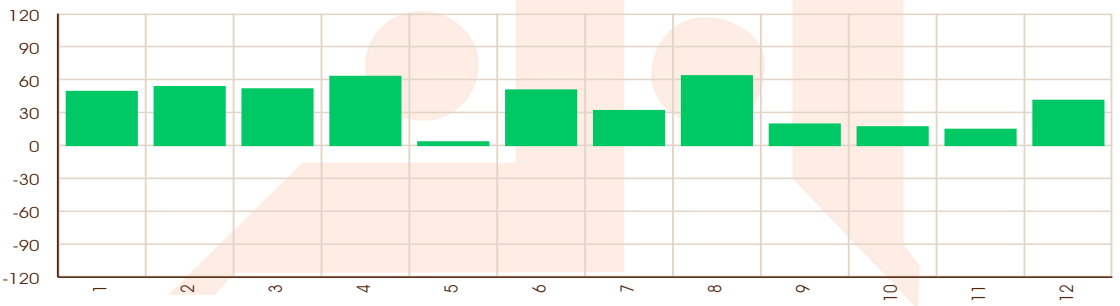

भाव बल

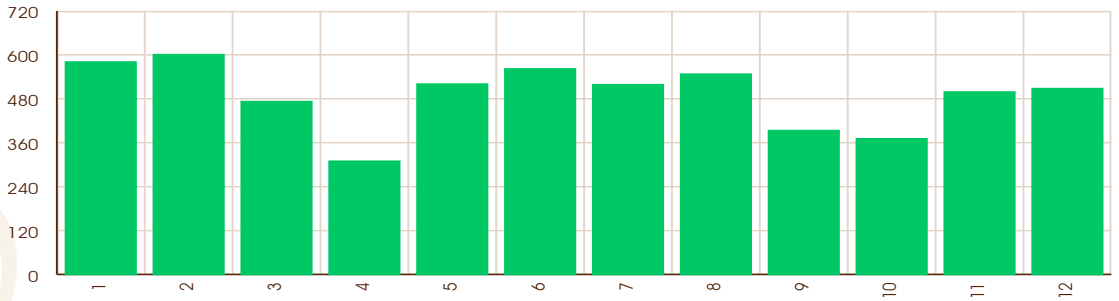

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

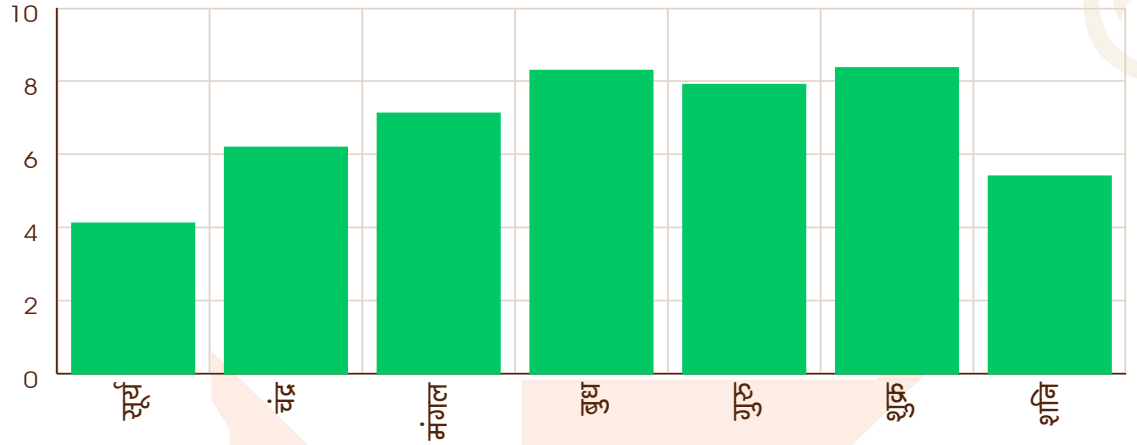

इष्ट - कष्ट फल

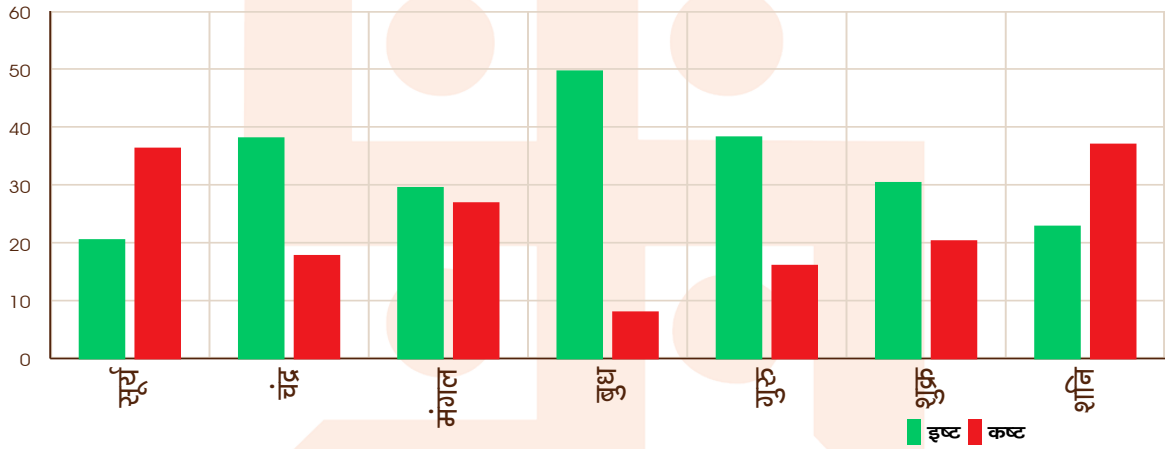

रूप भाव बल

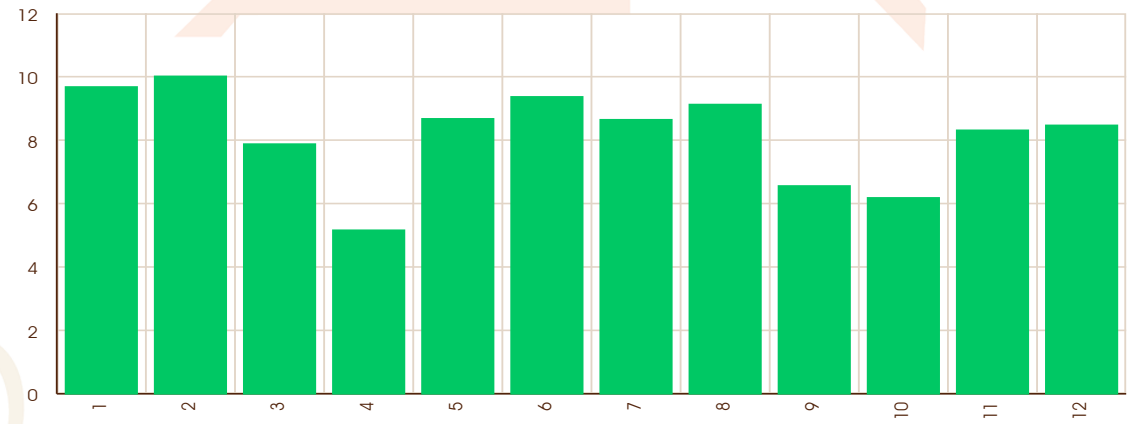

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृष	19:47:08	--	--	रोहिणी	3	4
गुलिक	गु	सिंह	10:17:43	--	--	मघा	4	10
काल	का	मेष	01:32:01	--	--	अश्विनी	1	1
मृत्यु	मृ	वृष	21:49:22	--	--	रोहिणी	4	4
यमघंटक	यम	कर्क	01:49:49	--	--	पुनर्वसु	4	7
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मिथु	12:28:11	--	मूल	आर्द्रा	2	6
धूम	धू	मक	13:59:17	--	मूल	श्रवण	2	22
व्यतिपात	व्य	मिथु	16:00:43	--	मूल	आर्द्रा	3	6
परिवेश	परि	धनु	16:00:43	नीच	मूल	पूर्वाषाढ़ा	1	20
इन्द्रचाप	इ	कर्क	13:59:17	--	मूल	पुष्य	4	8
उपकेतु	उप	सिंह	00:39:17	नीच	--	मघा	1	10

प्राणपद	:	तुला	10:36:15	कारकाँश लग्न	:	मीन	24:08:27
भाव लग्न	:	मक	27:46:59	होरा लग्न	:	तुला	05:46:49
घटी लग्न	:	कुंभ	10:38:31	वर्णद लग्न	:	सिंह	04:26:03

उपग्रह कुंडली

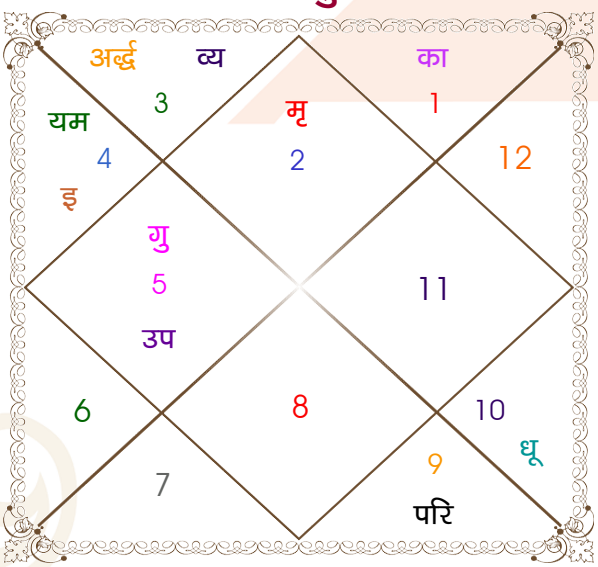

आरूढ़ कुंडली

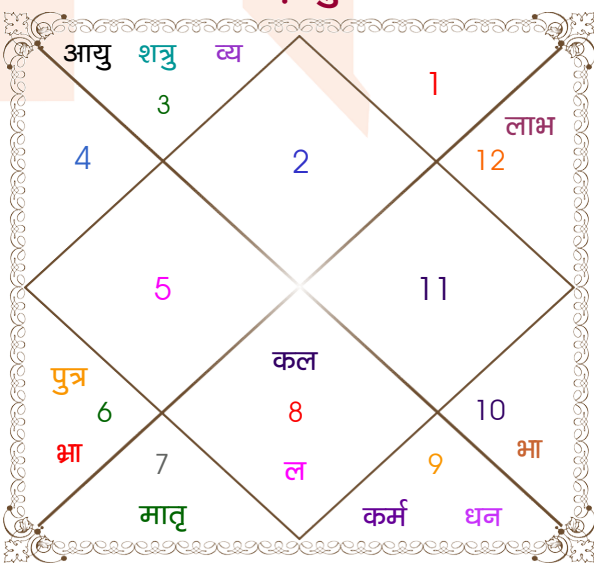

षन्नाडी चक्र

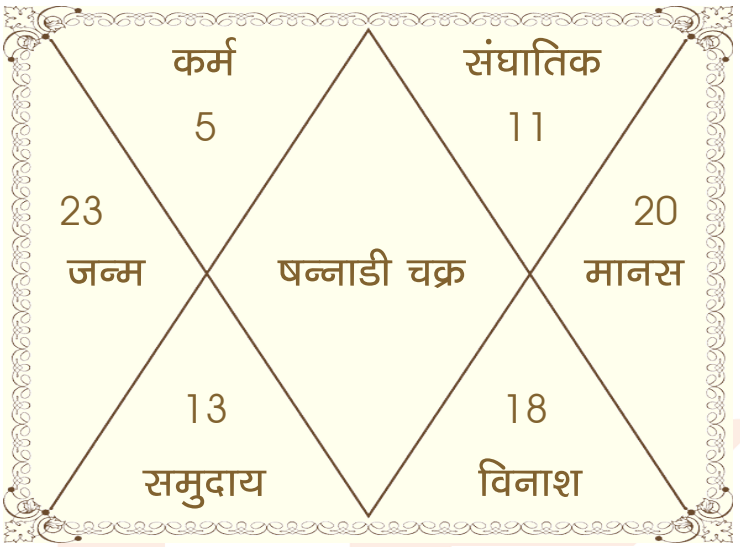

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
कुल	1	3	4	3	5	5	4	4	4	3	7	5	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
मंगल	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	0	6
सूर्य	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	6
शुक्र	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	4
कुल	5	5	5	2	5	5	1	4	5	5	5	2	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	5
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	4
बुध	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	3
लग्न	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
कुल	3	3	6	2	0	2	3	3	5	6	4	2	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कुल
शनि	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	8
गुरु	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
कुल	3	4	4	4	5	6	5	2	6	4	4	7	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	9
शुक्र	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	6
बुध	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	5
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
कुल	5	3	6	8	2	3	6	5	4	7	4	3	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	कुल
शनि	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
गुरु	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	5
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	9
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
कुल	4	4	5	4	4	5	3	5	5	5	3	5	52

शनि का अष्टकवर्ग

	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
चंद्र	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	3
लग्न	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
कुल	7	3	3	3	1	3	2	4	3	4	3	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
गुरु	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	9
मंगल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
सूर्य	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	2	3	7	3	4	5	4	6	2	4	4	5	49

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	3	3	7	3	3	3	1	3	2	4	3	39
गुरु	3	6	8	2	3	6	5	4	7	4	3	5	56
मंगल	2	3	3	6	2	0	2	3	3	5	6	4	39
सूर्य	4	4	3	7	5	1	3	4	3	5	5	4	48
शुक्र	5	5	3	5	4	4	5	4	4	5	3	5	52
बुध	2	6	4	4	7	3	4	4	4	5	6	5	54
चंद्र	5	2	5	5	1	4	5	5	5	2	5	5	49
बिन्दु	25	29	29	36	25	21	27	25	29	28	32	31	337
रेखा	31	27	27	20	31	35	29	31	27	28	24	25	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	0	6	0	1	0	0	0	0	1	2	12
गुरु	0	2	5	0	0	2	2	2	4	0	0	3	20
मंगल	0	3	1	3	0	0	0	0	1	5	4	1	18
सूर्य	1	3	0	3	2	0	0	0	0	4	2	0	15
शुक्र	1	1	0	1	0	0	2	0	0	1	0	1	7
बुध	0	3	0	0	5	0	0	0	2	2	2	1	15
चंद्र	4	0	0	0	0	2	0	0	4	0	0	0	10
रेखा	7	13	6	13	7	5	4	2	11	12	9	8	97

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	0	6	0	1	0	0	0	0	1	2	12
गुरु	0	2	3	0	0	2	0	2	1	0	0	3	13
मंगल	0	3	1	3	0	0	0	0	0	1	4	1	13
सूर्य	1	3	0	3	2	0	0	0	0	2	2	0	13
शुक्र	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	6
बुध	0	3	0	0	5	0	0	0	1	0	2	1	12
चंद्र	4	0	0	0	0	2	0	0	4	0	0	0	10
रेखा	7	13	4	13	7	5	1	2	6	4	9	8	79

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	101	74	111	123	115	45	81
ग्रह पिंड	63	20	69	79	66	23	73
शोध्य पिंड	164	94	180	202	181	68	154

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

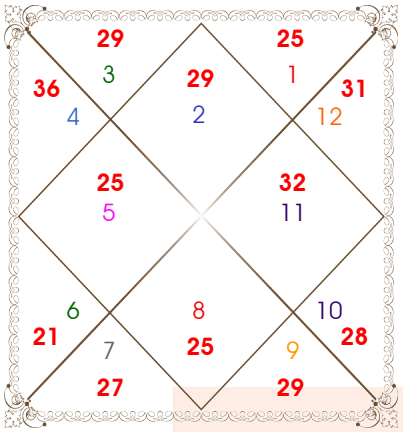

सूर्य का अष्टकवर्ग

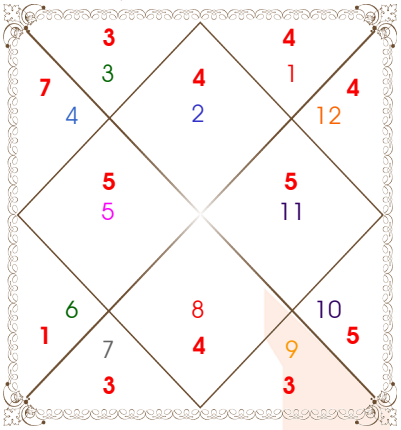

चंद्र का अष्टकवर्ग

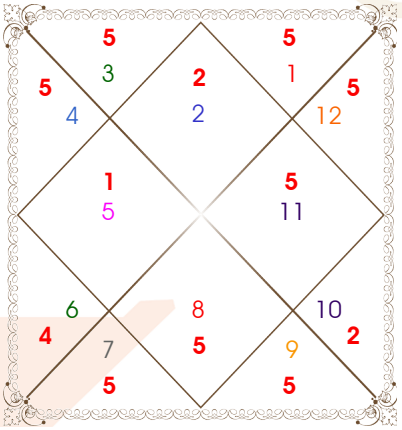

मंगल का अष्टकवर्ग

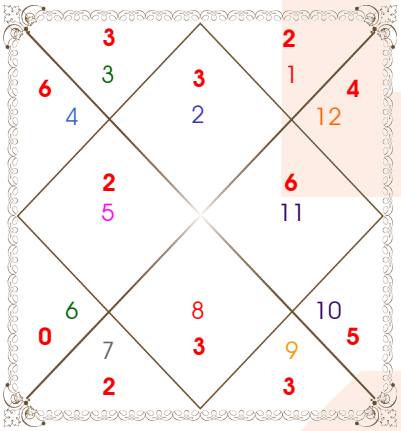

बुध का अष्टकवर्ग

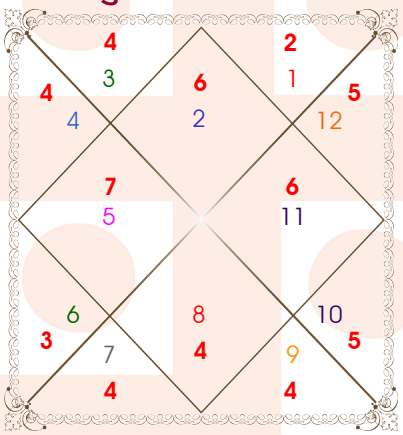

गुरू का अष्टकवर्ग

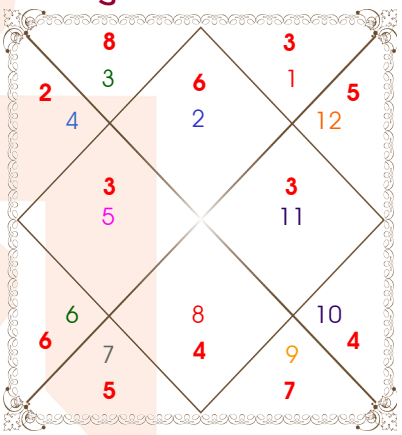

शुक्र का अष्टकवर्ग

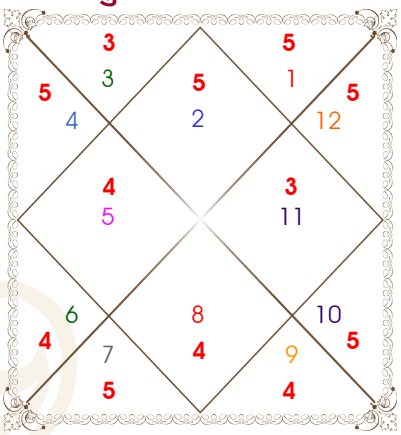

शनि का अष्टकवर्ग

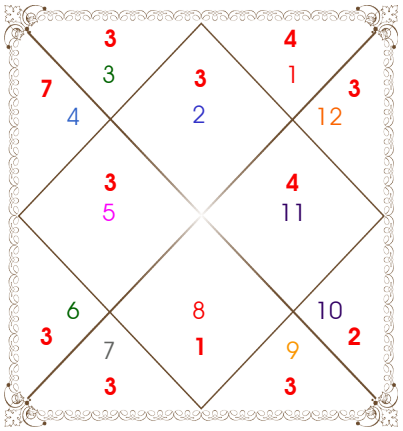

लग्न का अष्टकवर्ग

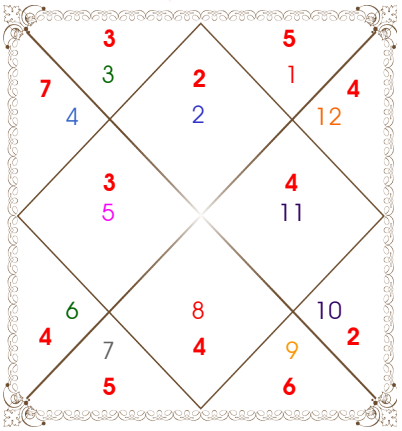

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

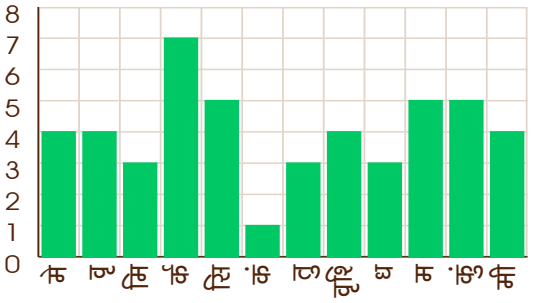

चन्द्र

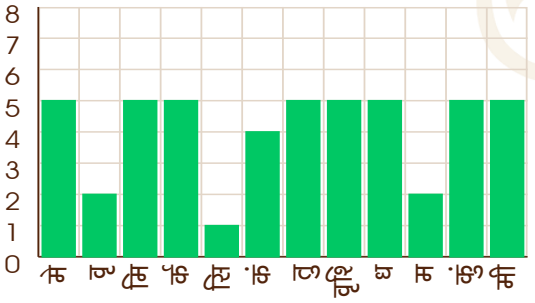

मंगल

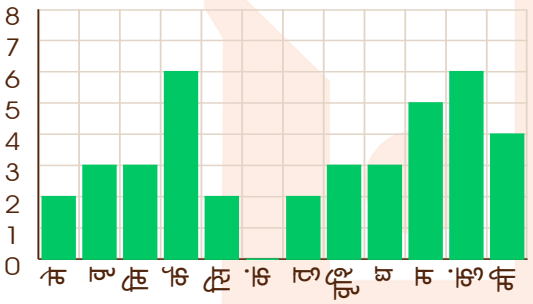

बुध

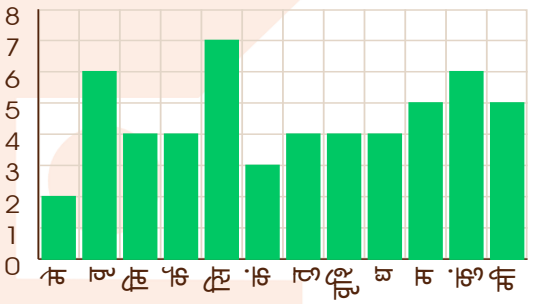

गुरु

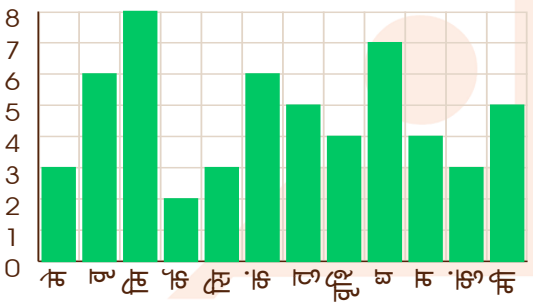

शुक्र

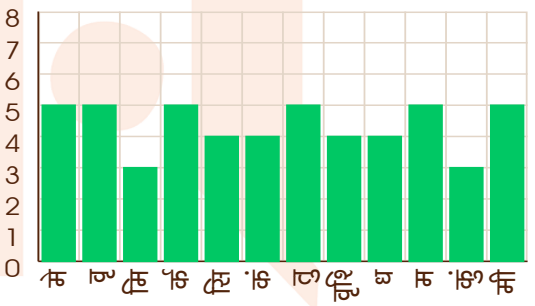

शनि

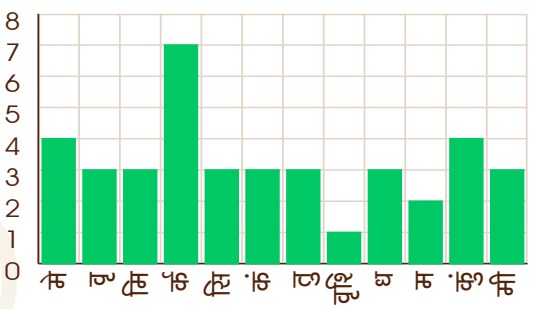

लग्न

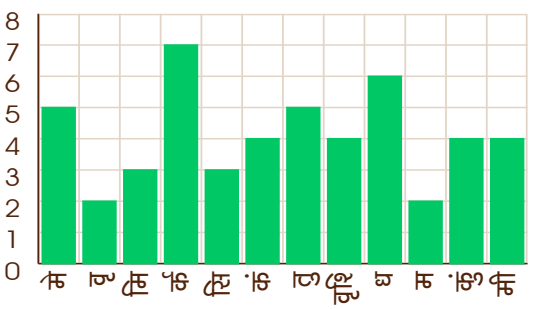

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

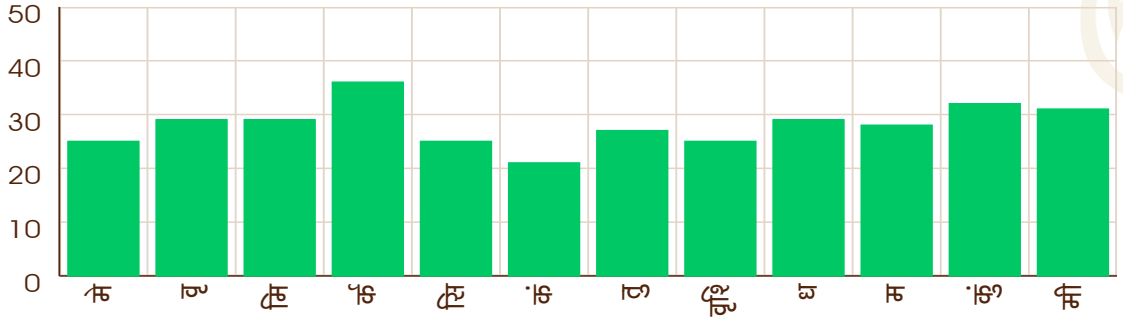

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

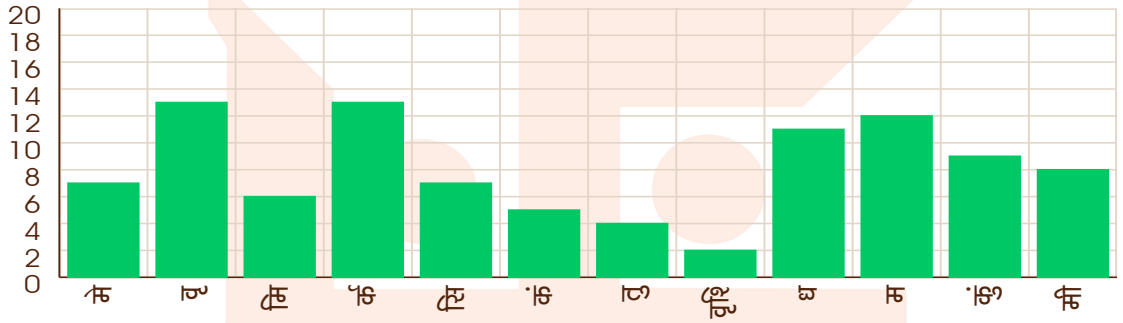

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

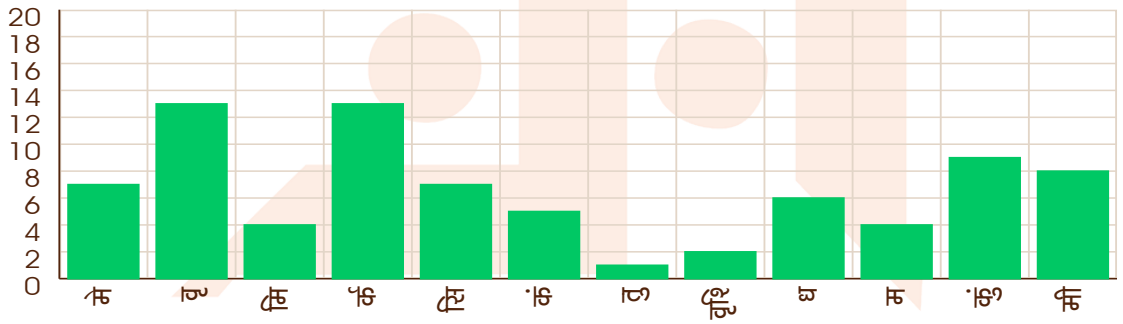

शोध्य पिंड

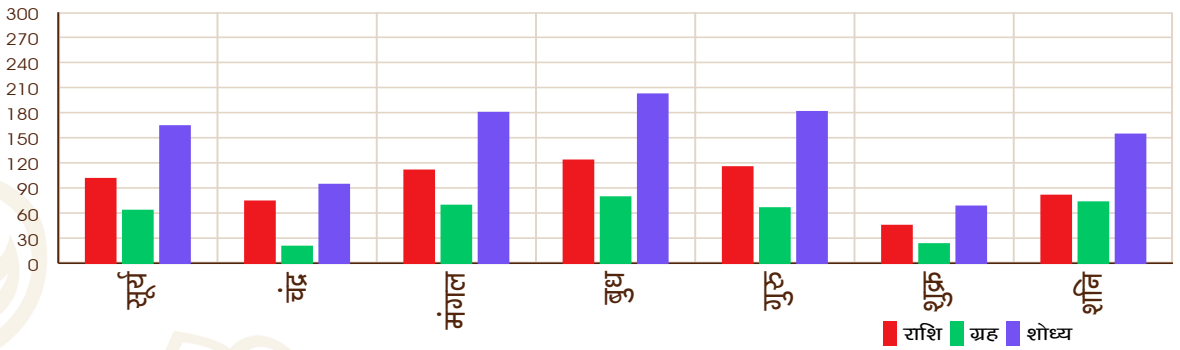

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 3 वर्ष 4 मास 30 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
17/09/1975		16/02/1979		16/02/1997		16/02/2013		17/02/2032	
16/02/1979		16/02/1997		16/02/2013		17/02/2032		16/02/2049	
	00/00/0000	राहु	30/10/1981	गुरु	06/04/1999	शनि	20/02/2016	बुध	15/07/2034
	00/00/0000	गुरु	24/03/1984	शनि	17/10/2001	बुध	30/10/2018	केतु	12/07/2035
	00/00/0000	शनि	29/01/1987	बुध	23/01/2004	केतु	09/12/2019	शुक्र	12/05/2038
	17/09/1975	बुध	17/08/1989	केतु	29/12/2004	शुक्र	07/02/2023	सूर्य	19/03/2039
बुध	14/08/1976	केतु	05/09/1990	शुक्र	30/08/2007	सूर्य	20/01/2024	चंद्र	17/08/2040
केतु	10/01/1977	शुक्र	05/09/1993	सूर्य	17/06/2008	चंद्र	21/08/2025	मंगल	14/08/2041
शुक्र	12/03/1978	सूर्य	30/07/1994	चंद्र	17/10/2009	मंगल	29/09/2026	राहु	03/03/2044
सूर्य	18/07/1978	चंद्र	29/01/1996	मंगल	23/09/2010	राहु	05/08/2029	गुरु	09/06/2046
चंद्र	16/02/1979	मंगल	16/02/1997	राहु	16/02/2013	गुरु	17/02/2032	शनि	16/02/2049

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
16/02/2049		17/02/2056		17/02/2076		16/02/2082		17/02/2092	
17/02/2056		17/02/2076		16/02/2082		17/02/2092		00/00/0000	
केतु	15/07/2049	शुक्र	18/06/2059	सूर्य	05/06/2076	चंद्र	17/12/2082	मंगल	15/07/2092
शुक्र	14/09/2050	सूर्य	17/06/2060	चंद्र	05/12/2076	मंगल	19/07/2083	राहु	02/08/2093
सूर्य	20/01/2051	चंद्र	16/02/2062	मंगल	12/04/2077	राहु	16/01/2085	गुरु	09/07/2094
चंद्र	21/08/2051	मंगल	18/04/2063	राहु	06/03/2078	गुरु	18/05/2086	शनि	18/08/2095
मंगल	17/01/2052	राहु	18/04/2066	गुरु	24/12/2078	शनि	18/12/2087	बुध	17/09/2095
राहु	04/02/2053	गुरु	17/12/2068	शनि	06/12/2079	बुध	18/05/2089		00/00/0000
गुरु	11/01/2054	शनि	17/02/2072	बुध	11/10/2080	केतु	17/12/2089		00/00/0000
शनि	19/02/2055	बुध	17/12/2074	केतु	16/02/2081	शुक्र	18/08/2091		00/00/0000
बुध	17/02/2056	केतु	17/02/2076	शुक्र	16/02/2082	सूर्य	17/02/2092		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 3 वर्ष 5 मा 3 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
17/09/1975		14/08/1976		10/01/1977		12/03/1978		18/07/1978	
14/08/1976		10/01/1977		12/03/1978		18/07/1978		16/02/1979	
बुध	08/10/1975	केतु	23/08/1976	शुक्र	22/03/1977	सूर्य	19/03/1978	चंद्र	05/08/1978
केतु	29/10/1975	शुक्र	17/09/1976	सूर्य	13/04/1977	चंद्र	30/03/1978	मंगल	17/08/1978
शुक्र	29/12/1975	सूर्य	24/09/1976	चंद्र	18/05/1977	मंगल	06/04/1978	राहु	18/09/1978
सूर्य	16/01/1976	चंद्र	07/10/1976	मंगल	12/06/1977	राहु	25/04/1978	गुरु	17/10/1978
चंद्र	15/02/1976	मंगल	15/10/1976	राहु	15/08/1977	गुरु	12/05/1978	शनि	20/11/1978
मंगल	07/03/1976	राहु	07/11/1976	गुरु	11/10/1977	शनि	01/06/1978	बुध	20/12/1978
राहु	01/05/1976	गुरु	27/11/1976	शनि	17/12/1977	बुध	20/06/1978	केतु	01/01/1979
गुरु	18/06/1976	शनि	20/12/1976	बुध	16/02/1978	केतु	27/06/1978	शुक्र	06/02/1979
शनि	14/08/1976	बुध	10/01/1977	केतु	12/03/1978	शुक्र	18/07/1978	सूर्य	16/02/1979

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
16/02/1979		30/10/1981		24/03/1984		29/01/1987		17/08/1989	
30/10/1981		24/03/1984		29/01/1987		17/08/1989		05/09/1990	
राहु	14/07/1979	गुरु	23/02/1982	शनि	05/09/1984	बुध	10/06/1987	केतु	09/09/1989
गुरु	23/11/1979	शनि	12/07/1982	बुध	30/01/1985	केतु	03/08/1987	शुक्र	12/11/1989
शनि	27/04/1980	बुध	13/11/1982	केतु	01/04/1985	शुक्र	06/01/1988	सूर्य	01/12/1989
बुध	14/09/1980	केतु	04/01/1983	शुक्र	22/09/1985	सूर्य	21/02/1988	चंद्र	02/01/1990
केतु	10/11/1980	शुक्र	30/05/1983	सूर्य	13/11/1985	चंद्र	09/05/1988	मंगल	24/01/1990
शुक्र	24/04/1981	सूर्य	12/07/1983	चंद्र	07/02/1986	मंगल	02/07/1988	राहु	23/03/1990
सूर्य	12/06/1981	चंद्र	24/09/1983	मंगल	09/04/1986	राहु	19/11/1988	गुरु	13/05/1990
चंद्र	02/09/1981	मंगल	14/11/1983	राहु	12/09/1986	गुरु	23/03/1989	शनि	13/07/1990
मंगल	30/10/1981	राहु	24/03/1984	गुरु	29/01/1987	शनि	17/08/1989	बुध	05/09/1990

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
05/09/1990		05/09/1993		30/07/1994		29/01/1996		16/02/1997	
05/09/1993		30/07/1994		29/01/1996		16/02/1997		06/04/1999	
शुक्र	07/03/1991	सूर्य	21/09/1993	चंद्र	14/09/1994	मंगल	21/02/1996	गुरु	31/05/1997
सूर्य	30/04/1991	चंद्र	19/10/1993	मंगल	16/10/1994	राहु	18/04/1996	शनि	01/10/1997
चंद्र	31/07/1991	मंगल	07/11/1993	राहु	06/01/1995	गुरु	08/06/1996	बुध	20/01/1998
मंगल	03/10/1991	राहु	26/12/1993	गुरु	20/03/1995	शनि	08/08/1996	केतु	06/03/1998
राहु	15/03/1992	गुरु	08/02/1994	शनि	15/06/1995	बुध	01/10/1996	शुक्र	14/07/1998
गुरु	08/08/1992	शनि	01/04/1994	बुध	01/09/1995	केतु	24/10/1996	सूर्य	22/08/1998
शनि	29/01/1993	बुध	18/05/1994	केतु	03/10/1995	शुक्र	27/12/1996	चंद्र	26/10/1998
बुध	03/07/1993	केतु	06/06/1994	शुक्र	02/01/1996	सूर्य	15/01/1997	मंगल	10/12/1998
केतु	05/09/1993	शुक्र	30/07/1994	सूर्य	29/01/1996	चंद्र	16/02/1997	राहु	06/04/1999

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
06/04/1999		17/10/2001		23/01/2004		29/12/2004		30/08/2007	
17/10/2001		23/01/2004		29/12/2004		30/08/2007		17/06/2008	
शनि	31/08/1999	बुध	12/02/2002	केतु	12/02/2004	शुक्र	09/06/2005	सूर्य	14/09/2007
बुध	09/01/2000	केतु	01/04/2002	शुक्र	09/04/2004	सूर्य	28/07/2005	चंद्र	08/10/2007
केतु	03/03/2000	शुक्र	17/08/2002	सूर्य	26/04/2004	चंद्र	17/10/2005	मंगल	25/10/2007
शुक्र	04/08/2000	सूर्य	27/09/2002	चंद्र	24/05/2004	मंगल	13/12/2005	राहु	08/12/2007
सूर्य	19/09/2000	चंद्र	05/12/2002	मंगल	13/06/2004	राहु	08/05/2006	गुरु	16/01/2008
चंद्र	05/12/2000	मंगल	23/01/2003	राहु	03/08/2004	गुरु	15/09/2006	शनि	02/03/2008
मंगल	28/01/2001	राहु	27/05/2003	गुरु	18/09/2004	शनि	16/02/2007	बुध	13/04/2008
राहु	16/06/2001	गुरु	14/09/2003	शनि	11/11/2004	बुध	04/07/2007	केतु	30/04/2008
गुरु	17/10/2001	शनि	23/01/2004	बुध	29/12/2004	केतु	30/08/2007	शुक्र	17/06/2008

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
17/06/2008		17/10/2009		23/09/2010		16/02/2013		20/02/2016	
17/10/2009		23/09/2010		16/02/2013		20/02/2016		30/10/2018	
चंद्र	28/07/2008	मंगल	06/11/2009	राहु	02/02/2011	शनि	09/08/2013	बुध	08/07/2016
मंगल	25/08/2008	राहु	27/12/2009	गुरु	30/05/2011	बुध	11/01/2014	केतु	03/09/2016
राहु	06/11/2008	गुरु	11/02/2010	शनि	15/10/2011	केतु	17/03/2014	शुक्र	14/02/2017
गुरु	10/01/2009	शनि	06/04/2010	बुध	17/02/2012	शुक्र	16/09/2014	सूर्य	04/04/2017
शनि	28/03/2009	बुध	24/05/2010	केतु	08/04/2012	सूर्य	10/11/2014	चंद्र	25/06/2017
बुध	05/06/2009	केतु	13/06/2010	शुक्र	01/09/2012	चंद्र	09/02/2015	मंगल	22/08/2017
केतु	04/07/2009	शुक्र	09/08/2010	सूर्य	15/10/2012	मंगल	14/04/2015	राहु	16/01/2018
शुक्र	23/09/2009	सूर्य	26/08/2010	चंद्र	27/12/2012	राहु	26/09/2015	गुरु	27/05/2018
सूर्य	17/10/2009	चंद्र	23/09/2010	मंगल	16/02/2013	गुरु	20/02/2016	शनि	30/10/2018

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
30/10/2018		09/12/2019		07/02/2023		20/01/2024		21/08/2025	
09/12/2019		07/02/2023		20/01/2024		21/08/2025		29/09/2026	
केतु	22/11/2018	शुक्र	18/06/2020	सूर्य	25/02/2023	चंद्र	08/03/2024	मंगल	13/09/2025
शुक्र	29/01/2019	सूर्य	15/08/2020	चंद्र	25/03/2023	मंगल	11/04/2024	राहु	13/11/2025
सूर्य	18/02/2019	चंद्र	20/11/2020	मंगल	15/04/2023	राहु	07/07/2024	गुरु	06/01/2026
चंद्र	24/03/2019	मंगल	26/01/2021	राहु	06/06/2023	गुरु	22/09/2024	शनि	11/03/2026
मंगल	16/04/2019	राहु	19/07/2021	गुरु	22/07/2023	शनि	23/12/2024	बुध	07/05/2026
राहु	16/06/2019	गुरु	20/12/2021	शनि	15/09/2023	बुध	14/03/2025	केतु	31/05/2026
गुरु	09/08/2019	शनि	21/06/2022	बुध	03/11/2023	केतु	17/04/2025	शुक्र	06/08/2026
शनि	12/10/2019	बुध	02/12/2022	केतु	23/11/2023	शुक्र	23/07/2025	सूर्य	27/08/2026
बुध	09/12/2019	केतु	07/02/2023	शुक्र	20/01/2024	सूर्य	21/08/2025	चंद्र	29/09/2026

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
29/09/2026		05/08/2029		17/02/2032		15/07/2034		12/07/2035	
05/08/2029		17/02/2032		15/07/2034		12/07/2035		12/05/2038	
राहु	04/03/2027	गुरु	07/12/2029	बुध	20/06/2032	केतु	05/08/2034	शुक्र	01/01/2036
गुरु	21/07/2027	शनि	02/05/2030	केतु	11/08/2032	शुक्र	05/10/2034	सूर्य	22/02/2036
शनि	02/01/2028	बुध	10/09/2030	शुक्र	04/01/2033	सूर्य	23/10/2034	चंद्र	18/05/2036
बुध	29/05/2028	केतु	03/11/2030	सूर्य	17/02/2033	चंद्र	22/11/2034	मंगल	17/07/2036
केतु	28/07/2028	शुक्र	06/04/2031	चंद्र	01/05/2033	मंगल	13/12/2034	राहु	20/12/2036
शुक्र	18/01/2029	सूर्य	23/05/2031	मंगल	22/06/2033	राहु	06/02/2035	गुरु	07/05/2037
सूर्य	11/03/2029	चंद्र	08/08/2031	राहु	01/11/2033	गुरु	26/03/2035	शनि	17/10/2037
चंद्र	06/06/2029	मंगल	01/10/2031	गुरु	26/02/2034	शनि	22/05/2035	बुध	13/03/2038
मंगल	05/08/2029	राहु	17/02/2032	शनि	15/07/2034	बुध	12/07/2035	केतु	12/05/2038

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
12/05/2038		19/03/2039		17/08/2040		14/08/2041		03/03/2044	
19/03/2039		17/08/2040		14/08/2041		03/03/2044		09/06/2046	
सूर्य	28/05/2038	चंद्र	01/05/2039	मंगल	07/09/2040	राहु	01/01/2042	गुरु	21/06/2044
चंद्र	23/06/2038	मंगल	31/05/2039	राहु	01/11/2040	गुरु	05/05/2042	शनि	30/10/2044
मंगल	11/07/2038	राहु	17/08/2039	गुरु	19/12/2040	शनि	30/09/2042	बुध	25/02/2045
राहु	26/08/2038	गुरु	25/10/2039	शनि	14/02/2041	बुध	09/02/2043	केतु	14/04/2045
गुरु	07/10/2038	शनि	15/01/2040	बुध	07/04/2041	केतु	04/04/2043	शुक्र	30/08/2045
शनि	25/11/2038	बुध	28/03/2040	केतु	28/04/2041	शुक्र	06/09/2043	सूर्य	10/10/2045
बुध	08/01/2039	केतु	27/04/2040	शुक्र	27/06/2041	सूर्य	23/10/2043	चंद्र	18/12/2045
केतु	26/01/2039	शुक्र	22/07/2040	सूर्य	15/07/2041	चंद्र	08/01/2044	मंगल	05/02/2046
शुक्र	19/03/2039	सूर्य	17/08/2040	चंद्र	14/08/2041	मंगल	03/03/2044	राहु	09/06/2046

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
09/06/2046		16/02/2049		15/07/2049		14/09/2050		20/01/2051	
16/02/2049		15/07/2049		14/09/2050		20/01/2051		21/08/2051	
शनि	11/11/2046	केतु	25/02/2049	शुक्र	24/09/2049	सूर्य	21/09/2050	चंद्र	07/02/2051
बुध	31/03/2047	शुक्र	21/03/2049	सूर्य	15/10/2049	चंद्र	01/10/2050	मंगल	19/02/2051
केतु	27/05/2047	सूर्य	29/03/2049	चंद्र	20/11/2049	मंगल	09/10/2050	राहु	23/03/2051
शुक्र	07/11/2047	चंद्र	10/04/2049	मंगल	15/12/2049	राहु	28/10/2050	गुरु	21/04/2051
सूर्य	26/12/2047	मंगल	19/04/2049	राहु	17/02/2050	गुरु	14/11/2050	शनि	24/05/2051
चंद्र	17/03/2048	राहु	11/05/2049	गुरु	14/04/2050	शनि	04/12/2050	बुध	23/06/2051
मंगल	13/05/2048	गुरु	31/05/2049	शनि	21/06/2050	बुध	22/12/2050	केतु	06/07/2051
राहु	08/10/2048	शनि	24/06/2049	बुध	20/08/2050	केतु	30/12/2050	शुक्र	10/08/2051
गुरु	16/02/2049	बुध	15/07/2049	केतु	14/09/2050	शुक्र	20/01/2051	सूर्य	21/08/2051

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
21/08/2051		17/01/2052		04/02/2053		11/01/2054		19/02/2055	
17/01/2052		04/02/2053		11/01/2054		19/02/2055		17/02/2056	
मंगल	30/08/2051	राहु	15/03/2052	गुरु	21/03/2053	शनि	16/03/2054	बुध	12/04/2055
राहु	21/09/2051	गुरु	05/05/2052	शनि	14/05/2053	बुध	12/05/2054	केतु	03/05/2055
गुरु	11/10/2051	शनि	05/07/2052	बुध	01/07/2053	केतु	05/06/2054	शुक्र	02/07/2055
शनि	04/11/2051	बुध	28/08/2052	केतु	21/07/2053	शुक्र	11/08/2054	सूर्य	20/07/2055
बुध	25/11/2051	केतु	19/09/2052	शुक्र	16/09/2053	सूर्य	31/08/2054	चंद्र	20/08/2055
केतु	03/12/2051	शुक्र	22/11/2052	सूर्य	03/10/2053	चंद्र	04/10/2054	मंगल	10/09/2055
शुक्र	28/12/2051	सूर्य	11/12/2052	चंद्र	01/11/2053	मंगल	28/10/2054	राहु	03/11/2055
सूर्य	05/01/2052	चंद्र	12/01/2053	मंगल	20/11/2053	राहु	27/12/2054	गुरु	21/12/2055
चंद्र	17/01/2052	मंगल	04/02/2053	राहु	11/01/2054	गुरु	19/02/2055	शनि	17/02/2056

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
17/02/2056		18/06/2059		17/06/2060		16/02/2062		18/04/2063	
18/06/2059		17/06/2060		16/02/2062		18/04/2063		18/04/2066	
शुक्र	07/09/2056	सूर्य	06/07/2059	चंद्र	07/08/2060	मंगल	13/03/2062	राहु	30/09/2063
सूर्य	06/11/2056	चंद्र	06/08/2059	मंगल	12/09/2060	राहु	16/05/2062	गुरु	23/02/2064
चंद्र	16/02/2057	मंगल	27/08/2059	राहु	12/12/2060	गुरु	12/07/2062	शनि	14/08/2064
मंगल	28/04/2057	राहु	21/10/2059	गुरु	03/03/2061	शनि	17/09/2062	बुध	16/01/2065
राहु	28/10/2057	गुरु	09/12/2059	शनि	07/06/2061	बुध	17/11/2062	केतु	21/03/2065
गुरु	08/04/2058	शनि	04/02/2060	बुध	02/09/2061	केतु	11/12/2062	शुक्र	20/09/2065
शनि	18/10/2058	बुध	27/03/2060	केतु	07/10/2061	शुक्र	20/02/2063	सूर्य	14/11/2065
बुध	08/04/2059	केतु	17/04/2060	शुक्र	17/01/2062	सूर्य	14/03/2063	चंद्र	13/02/2066
केतु	18/06/2059	शुक्र	17/06/2060	सूर्य	16/02/2062	चंद्र	18/04/2063	मंगल	18/04/2066

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
18/04/2066		17/12/2068		17/02/2072		17/12/2074		17/02/2076	
17/12/2068		17/02/2072		17/12/2074		17/02/2076		05/06/2076	
गुरु	26/08/2066	शनि	18/06/2069	बुध	12/07/2072	केतु	11/01/2075	सूर्य	22/02/2076
शनि	27/01/2067	बुध	29/11/2069	केतु	11/09/2072	शुक्र	23/03/2075	चंद्र	02/03/2076
बुध	14/06/2067	केतु	04/02/2070	शुक्र	02/03/2073	सूर्य	14/04/2075	मंगल	09/03/2076
केतु	10/08/2067	शुक्र	16/08/2070	सूर्य	23/04/2073	चंद्र	19/05/2075	राहु	25/03/2076
शुक्र	19/01/2068	सूर्य	13/10/2070	चंद्र	18/07/2073	मंगल	13/06/2075	गुरु	09/04/2076
सूर्य	08/03/2068	चंद्र	17/01/2071	मंगल	16/09/2073	राहु	16/08/2075	शनि	26/04/2076
चंद्र	28/05/2068	मंगल	26/03/2071	राहु	19/02/2074	गुरु	12/10/2075	बुध	12/05/2076
मंगल	24/07/2068	राहु	15/09/2071	गुरु	07/07/2074	शनि	18/12/2075	केतु	18/05/2076
राहु	17/12/2068	गुरु	17/02/2072	शनि	17/12/2074	बुध	17/02/2076	शुक्र	05/06/2076

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
05/06/2076		05/12/2076		12/04/2077		06/03/2078		24/12/2078	
05/12/2076		12/04/2077		06/03/2078		24/12/2078		06/12/2079	
चंद्र	20/06/2076	मंगल	12/12/2076	राहु	31/05/2077	गुरु	14/04/2078	शनि	17/02/2079
मंगल	01/07/2076	राहु	31/12/2076	गुरु	14/07/2077	शनि	31/05/2078	बुध	07/04/2079
राहु	28/07/2076	गुरु	17/01/2077	शनि	04/09/2077	बुध	11/07/2078	केतु	27/04/2079
गुरु	22/08/2076	शनि	07/02/2077	बुध	20/10/2077	केतु	28/07/2078	शुक्र	24/06/2079
शनि	20/09/2076	बुध	25/02/2077	केतु	09/11/2077	शुक्र	15/09/2078	सूर्य	11/07/2079
बुध	16/10/2076	केतु	04/03/2077	शुक्र	02/01/2078	सूर्य	29/09/2078	चंद्र	09/08/2079
केतु	26/10/2076	शुक्र	26/03/2077	सूर्य	19/01/2078	चंद्र	24/10/2078	मंगल	29/08/2079
शुक्र	26/11/2076	सूर्य	01/04/2077	चंद्र	15/02/2078	मंगल	10/11/2078	राहु	20/10/2079
सूर्य	05/12/2076	चंद्र	12/04/2077	मंगल	06/03/2078	राहु	24/12/2078	गुरु	06/12/2079

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
06/12/2079		11/10/2080		16/02/2081		16/02/2082		17/12/2082	
11/10/2080		16/02/2081		16/02/2082		17/12/2082		19/07/2083	
बुध	19/01/2080	केतु	18/10/2080	शुक्र	18/04/2081	चंद्र	13/03/2082	मंगल	30/12/2082
केतु	06/02/2080	शुक्र	09/11/2080	सूर्य	06/05/2081	मंगल	31/03/2082	राहु	31/01/2083
शुक्र	28/03/2080	सूर्य	15/11/2080	चंद्र	05/06/2081	राहु	16/05/2082	गुरु	28/02/2083
सूर्य	13/04/2080	चंद्र	26/11/2080	मंगल	27/06/2081	गुरु	25/06/2082	शनि	03/04/2083
चंद्र	09/05/2080	मंगल	03/12/2080	राहु	21/08/2081	शनि	13/08/2082	बुध	03/05/2083
मंगल	27/05/2080	राहु	22/12/2080	गुरु	08/10/2081	बुध	25/09/2082	केतु	16/05/2083
राहु	12/07/2080	गुरु	09/01/2081	शनि	05/12/2081	केतु	13/10/2082	शुक्र	20/06/2083
गुरु	23/08/2080	शनि	29/01/2081	बुध	26/01/2082	शुक्र	02/12/2082	सूर्य	01/07/2083
शनि	11/10/2080	बुध	16/02/2081	केतु	16/02/2082	सूर्य	17/12/2082	चंद्र	19/07/2083

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
19/07/2083		16/01/2085		18/05/2086		18/12/2087		18/05/2089	
16/01/2085		18/05/2086		18/12/2087		18/05/2089		17/12/2089	
राहु	09/10/2083	गुरु	22/03/2085	शनि	18/08/2086	बुध	29/02/2088	केतु	31/05/2089
गुरु	21/12/2083	शनि	07/06/2085	बुध	08/11/2086	केतु	30/03/2088	शुक्र	05/07/2089
शनि	17/03/2084	बुध	15/08/2085	केतु	12/12/2086	शुक्र	24/06/2088	सूर्य	16/07/2089
बुध	02/06/2084	केतु	13/09/2085	शुक्र	18/03/2087	सूर्य	20/07/2088	चंद्र	03/08/2089
केतु	04/07/2084	शुक्र	03/12/2085	सूर्य	16/04/2087	चंद्र	01/09/2088	मंगल	15/08/2089
शुक्र	03/10/2084	सूर्य	27/12/2085	चंद्र	03/06/2087	मंगल	02/10/2088	राहु	16/09/2089
सूर्य	31/10/2084	चंद्र	06/02/2086	मंगल	07/07/2087	राहु	18/12/2088	गुरु	14/10/2089
चंद्र	15/12/2084	मंगल	06/03/2086	राहु	02/10/2087	गुरु	25/02/2089	शनि	17/11/2089
मंगल	16/01/2085	राहु	18/05/2086	गुरु	18/12/2087	शनि	18/05/2089	बुध	17/12/2089

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - मंगल - शनि		शनि - मंगल - बुध		शनि - मंगल - केतु		शनि - मंगल - शुक्र	
06/01/2026 08:09		11/03/2026 10:28		07/05/2026 18:51		31/05/2026 09:36	
11/03/2026 10:28		07/05/2026 18:51		31/05/2026 09:36		06/08/2026 20:52	
शनि	16/01/2026 11:43	बुध	19/03/2026 13:27	केतु	09/05/2026 03:54	शुक्र	11/06/2026 15:28
बुध	25/01/2026 13:39	केतु	22/03/2026 21:44	शुक्र	13/05/2026 02:22	सूर्य	15/06/2026 00:26
केतु	29/01/2026 07:23	शुक्र	01/04/2026 11:08	सूर्य	14/05/2026 06:42	चंद्र	20/06/2026 15:22
शुक्र	08/02/2026 23:46	सूर्य	04/04/2026 07:57	चंद्र	16/05/2026 05:56	मंगल	24/06/2026 13:50
सूर्य	12/02/2026 04:41	चंद्र	09/04/2026 02:39	मंगल	17/05/2026 14:59	राहु	04/07/2026 16:43
चंद्र	17/02/2026 12:52	मंगल	12/04/2026 10:57	राहु	21/05/2026 04:00	गुरु	13/07/2026 16:38
मंगल	21/02/2026 06:36	राहु	21/04/2026 01:24	गुरु	24/05/2026 07:34	शनि	24/07/2026 09:01
राहु	02/03/2026 21:21	गुरु	28/04/2026 16:55	शनि	28/05/2026 01:18	बुध	02/08/2026 22:25
गुरु	11/03/2026 10:28	शनि	07/05/2026 18:51	बुध	31/05/2026 09:36	केतु	06/08/2026 20:52

शनि - मंगल - सूर्य		शनि - मंगल - चंद्र		शनि - राहु - राहु		शनि - राहु - गुरु	
06/08/2026 20:52		27/08/2026 02:39		29/09/2026 20:17		04/03/2027 23:45	
27/08/2026 02:39		29/09/2026 20:17		04/03/2027 23:45		21/07/2027 18:50	
सूर्य	07/08/2026 21:09	चंद्र	29/08/2026 22:07	राहु	23/10/2026 06:24	गुरु	23/03/2027 11:54
चंद्र	09/08/2026 13:38	मंगल	31/08/2026 21:21	गुरु	13/11/2026 02:04	शनि	14/04/2027 11:19
मंगल	10/08/2026 17:59	राहु	05/09/2026 22:48	शनि	07/12/2026 19:25	बुध	04/05/2027 03:13
राहु	13/08/2026 18:51	गुरु	10/09/2026 10:45	बुध	29/12/2026 22:18	केतु	12/05/2027 05:32
गुरु	16/08/2026 11:37	शनि	15/09/2026 18:56	केतु	08/01/2027 00:55	शुक्र	04/06/2027 08:43
शनि	19/08/2026 16:32	बुध	20/09/2026 13:38	शुक्र	03/02/2027 01:29	सूर्य	11/06/2027 07:16
बुध	22/08/2026 13:21	केतु	22/09/2026 12:52	सूर्य	10/02/2027 20:52	चंद्र	22/06/2027 20:51
केतु	23/08/2026 17:41	शुक्र	28/09/2026 03:48	चंद्र	23/02/2027 21:09	मंगल	30/06/2027 23:10
शुक्र	27/08/2026 02:39	सूर्य	29/09/2026 20:17	मंगल	04/03/2027 23:45	राहु	21/07/2027 18:50

शनि - राहु - शनि		शनि - राहु - बुध		शनि - राहु - केतु		शनि - राहु - शुक्र	
21/07/2027 18:50		02/01/2028 14:29		29/05/2028 01:46		28/07/2028 19:07	
02/01/2028 14:29		29/05/2028 01:46		28/07/2028 19:07		18/01/2029 06:58	
शनि	16/08/2027 21:09	बुध	23/01/2028 11:53	केतु	01/06/2028 14:46	शुक्र	26/08/2028 17:05
बुध	09/09/2027 05:32	केतु	01/02/2028 02:21	शुक्र	11/06/2028 17:40	सूर्य	04/09/2028 09:17
केतु	18/09/2027 20:17	शुक्र	25/02/2028 16:13	सूर्य	14/06/2028 18:32	चंद्र	18/09/2028 20:16
शुक्र	16/10/2027 07:33	सूर्य	04/03/2028 01:11	चंद्र	19/06/2028 19:59	मंगल	28/09/2028 23:09
सूर्य	24/10/2027 13:20	चंद्र	16/03/2028 08:08	मंगल	23/06/2028 08:59	राहु	24/10/2028 23:44
चंद्र	07/11/2027 06:58	मंगल	24/03/2028 22:35	राहु	02/07/2028 11:36	गुरु	17/11/2028 02:55
मंगल	16/11/2027 21:43	राहु	16/04/2028 01:28	गुरु	10/07/2028 13:54	शनि	14/12/2028 14:11
राहु	11/12/2027 15:04	गुरु	05/05/2028 17:23	शनि	20/07/2028 04:39	बुध	08/01/2029 04:04
गुरु	02/01/2028 14:29	शनि	29/05/2028 01:46	बुध	28/07/2028 19:07	केतु	18/01/2029 06:58

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - राहु - सूर्य	
18/01/2029 06:58	
11/03/2029 08:07	
सूर्य	20/01/2029 21:25
चंद्र	25/01/2029 05:31
मंगल	28/01/2029 06:23
राहु	05/02/2029 01:45
गुरु	12/02/2029 00:18
शनि	20/02/2029 06:05
बुध	27/02/2029 15:03
केतु	02/03/2029 15:55
शुक्र	11/03/2029 08:07

शनि - राहु - चंद्र	
11/03/2029 08:07	
06/06/2029 02:02	
चंद्र	18/03/2029 13:36
मंगल	23/03/2029 15:03
राहु	05/04/2029 15:21
गुरु	17/04/2029 04:56
शनि	30/04/2029 22:34
बुध	13/05/2029 05:31
केतु	18/05/2029 06:57
शुक्र	01/06/2029 17:57
सूर्य	06/06/2029 02:02

शनि - राहु - मंगल	
06/06/2029 02:02	
05/08/2029 19:23	
मंगल	09/06/2029 15:03
राहु	18/06/2029 17:39
गुरु	26/06/2029 19:58
शनि	06/07/2029 10:43
बुध	15/07/2029 01:10
केतु	18/07/2029 14:11
शुक्र	28/07/2029 17:04
सूर्य	31/07/2029 17:56
चंद्र	05/08/2029 19:23

शनि - गुरु - गुरु	
05/08/2029 19:23	
07/12/2029 04:21	
गुरु	22/08/2029 06:11
शनि	10/09/2029 19:00
बुध	28/09/2029 06:28
केतु	05/10/2029 11:12
शुक्र	26/10/2029 00:41
सूर्य	01/11/2029 04:44
चंद्र	11/11/2029 11:29
मंगल	18/11/2029 16:12
राहु	07/12/2029 04:21

शनि - गुरु - शनि	
07/12/2029 04:21	
02/05/2030 16:29	
शनि	30/12/2029 09:04
बुध	20/01/2030 03:11
केतु	28/01/2030 16:18
शुक्र	22/02/2030 02:19
सूर्य	01/03/2030 10:08
चंद्र	13/03/2030 15:08
मंगल	22/03/2030 04:15
राहु	13/04/2030 03:40
गुरु	02/05/2030 16:29

शनि - गुरु - बुध	
02/05/2030 16:29	
10/09/2030 18:30	
बुध	21/05/2030 06:10
केतु	28/05/2030 21:41
शुक्र	19/06/2030 18:02
सूर्य	26/06/2030 07:20
चंद्र	07/07/2030 05:30
मंगल	14/07/2030 21:01
राहु	03/08/2030 12:55
गुरु	21/08/2030 00:23
शनि	10/09/2030 18:30

शनि - गुरु - केतु	
10/09/2030 18:30	
03/11/2030 17:56	
केतु	13/09/2030 22:04
शुक्र	22/09/2030 21:59
सूर्य	25/09/2030 14:45
चंद्र	30/09/2030 02:42
मंगल	03/10/2030 06:16
राहु	11/10/2030 08:35
गुरु	18/10/2030 13:18
शनि	27/10/2030 02:25
बुध	03/11/2030 17:56

शनि - गुरु - शुक्र	
03/11/2030 17:56	
06/04/2031 23:08	
शुक्र	29/11/2030 10:48
सूर्य	07/12/2030 03:51
चंद्र	20/12/2030 00:17
मंगल	29/12/2030 00:11
राहु	21/01/2031 03:22
गुरु	10/02/2031 16:52
शनि	07/03/2031 02:53
बुध	28/03/2031 23:13
केतु	06/04/2031 23:08

शनि - गुरु - सूर्य	
06/04/2031 23:08	
23/05/2031 05:29	
सूर्य	09/04/2031 06:39
चंद्र	13/04/2031 03:10
मंगल	15/04/2031 19:57
राहु	22/04/2031 18:30
गुरु	28/04/2031 22:33
शनि	06/05/2031 06:21
बुध	12/05/2031 19:39
केतु	15/05/2031 12:26
शुक्र	23/05/2031 05:29

शनि - गुरु - चंद्र	
23/05/2031 05:29	
08/08/2031 08:05	
चंद्र	29/05/2031 15:42
मंगल	03/06/2031 03:39
राहु	14/06/2031 17:15
गुरु	24/06/2031 24:00
शनि	07/07/2031 05:00
बुध	18/07/2031 03:10
केतु	22/07/2031 15:07
शुक्र	04/08/2031 11:33
सूर्य	08/08/2031 08:05

शनि - गुरु - मंगल	
08/08/2031 08:05	
01/10/2031 07:30	
मंगल	11/08/2031 11:39
राहु	19/08/2031 13:58
गुरु	26/08/2031 18:41
शनि	04/09/2031 07:48
बुध	11/09/2031 23:19
केतु	15/09/2031 02:53
शुक्र	24/09/2031 02:47
सूर्य	26/09/2031 19:33
चंद्र	01/10/2031 07:30

शनि - गुरु - राहु	
01/10/2031 07:30	
17/02/2032 02:35	
राहु	22/10/2031 03:10
गुरु	09/11/2031 15:19
शनि	01/12/2031 14:44
बुध	21/12/2031 06:38
केतु	29/12/2031 08:57
शुक्र	21/01/2032 12:08
सूर्य	28/01/2032 10:41
चंद्र	09/02/2032 00:16
मंगल	17/02/2032 02:35

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - बुध - बुध	
17/02/2032 02:35	
20/06/2032 17:23	
बुध	05/03/2032 18:17
केतु	13/03/2032 00:45
शुक्र	02/04/2032 19:13
सूर्य	09/04/2032 00:45
चंद्र	19/04/2032 09:59
मंगल	26/04/2032 16:27
राहु	15/05/2032 09:04
गुरु	31/05/2032 23:50
शनि	20/06/2032 17:23

बुध - बुध - केतु	
20/06/2032 17:23	
11/08/2032 00:53	
केतु	23/06/2032 17:13
शुक्र	02/07/2032 06:28
सूर्य	04/07/2032 20:02
चंद्र	09/07/2032 02:40
मंगल	12/07/2032 02:30
राहु	19/07/2032 19:14
गुरु	26/07/2032 15:26
शनि	03/08/2032 18:25
बुध	11/08/2032 00:53

बुध - बुध - शुक्र	
11/08/2032 00:53	
04/01/2033 15:27	
शुक्र	04/09/2032 11:18
सूर्य	11/09/2032 19:14
चंद्र	24/09/2032 00:27
मंगल	02/10/2032 13:42
राहु	24/10/2032 13:29
गुरु	13/11/2032 02:38
शनि	06/12/2032 07:44
बुध	27/12/2032 02:12
केतु	04/01/2033 15:27

बुध - बुध - सूर्य	
04/01/2033 15:27	
17/02/2033 15:01	
सूर्य	06/01/2033 20:14
चंद्र	10/01/2033 12:12
मंगल	13/01/2033 01:46
राहु	19/01/2033 16:06
गुरु	25/01/2033 12:51
शनि	01/02/2033 11:59
बुध	07/02/2033 17:31
केतु	10/02/2033 07:06
शुक्र	17/02/2033 15:01

बुध - बुध - चंद्र	
17/02/2033 15:01	
01/05/2033 22:19	
चंद्र	23/02/2033 17:38
मंगल	28/02/2033 00:15
राहु	11/03/2033 00:09
गुरु	20/03/2033 18:43
शनि	01/04/2033 09:17
बुध	11/04/2033 18:30
केतु	16/04/2033 01:08
शुक्र	28/04/2033 06:21
सूर्य	01/05/2033 22:19

बुध - बुध - मंगल	
01/05/2033 22:19	
22/06/2033 05:49	
मंगल	04/05/2033 22:09
राहु	12/05/2033 14:52
गुरु	19/05/2033 11:04
शनि	27/05/2033 14:04
बुध	03/06/2033 20:32
केतु	06/06/2033 20:22
शुक्र	15/06/2033 09:37
सूर्य	17/06/2033 23:11
चंद्र	22/06/2033 05:49

बुध - बुध - राहु	
22/06/2033 05:49	
01/11/2033 04:32	
राहु	12/07/2033 00:49
गुरु	29/07/2033 15:03
शनि	19/08/2033 12:27
बुध	07/09/2033 05:04
केतु	14/09/2033 21:47
शुक्र	06/10/2033 21:35
सूर्य	13/10/2033 11:55
चंद्र	24/10/2033 11:48
मंगल	01/11/2033 04:32

बुध - बुध - गुरु	
01/11/2033 04:32	
26/02/2034 11:23	
गुरु	16/11/2033 19:51
शनि	05/12/2033 09:32
बुध	22/12/2033 00:18
केतु	28/12/2033 20:30
शुक्र	17/01/2034 09:39
सूर्य	23/01/2034 06:23
चंद्र	02/02/2034 00:58
मंगल	08/02/2034 21:10
राहु	26/02/2034 11:23

बुध - बुध - शनि	
26/02/2034 11:23	
15/07/2034 18:02	
शनि	20/03/2034 12:39
बुध	09/04/2034 06:11
केतु	17/04/2034 09:10
शुक्र	10/05/2034 14:17
सूर्य	17/05/2034 13:25
चंद्र	29/05/2034 03:58
मंगल	06/06/2034 06:57
राहु	27/06/2034 04:21
गुरु	15/07/2034 18:02

बुध - केतु - केतु	
15/07/2034 18:02	
05/08/2034 21:08	
केतु	16/07/2034 23:37
शुक्र	20/07/2034 12:08
सूर्य	21/07/2034 13:29
चंद्र	23/07/2034 07:45
मंगल	24/07/2034 13:19
राहु	27/07/2034 17:23
गुरु	30/07/2034 13:00
शनि	02/08/2034 21:17
बुध	05/08/2034 21:08

बुध - केतु - शुक्र	
05/08/2034 21:08	
05/10/2034 05:57	
शुक्र	15/08/2034 22:36
सूर्य	18/08/2034 23:02
चंद्र	23/08/2034 23:46
मंगल	27/08/2034 12:17
राहु	05/09/2034 13:37
गुरु	13/09/2034 14:47
शनि	23/09/2034 04:11
बुध	01/10/2034 17:26
केतु	05/10/2034 05:57

बुध - केतु - सूर्य	
05/10/2034 05:57	
23/10/2034 08:36	
सूर्य	06/10/2034 03:41
चंद्र	07/10/2034 15:54
मंगल	08/10/2034 17:15
राहु	11/10/2034 10:27
गुरु	13/10/2034 20:24
शनि	16/10/2034 17:14
बुध	19/10/2034 06:48
केतु	20/10/2034 08:09
शुक्र	23/10/2034 08:36

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - केतु - चंद्र	
23/10/2034 08:36	
22/11/2034 13:01	
चंद्र	25/10/2034 20:58
मंगल	27/10/2034 15:13
राहु	01/11/2034 03:53
गुरु	05/11/2034 04:28
शनि	09/11/2034 23:10
बुध	14/11/2034 05:48
केतु	16/11/2034 00:03
शुक्र	21/11/2034 00:47
सूर्य	22/11/2034 13:01

बुध - केतु - मंगल	
22/11/2034 13:01	
13/12/2034 16:06	
मंगल	23/11/2034 18:35
राहु	26/11/2034 22:39
गुरु	29/11/2034 18:16
शनि	03/12/2034 02:33
बुध	06/12/2034 02:24
केतु	07/12/2034 07:58
शुक्र	10/12/2034 20:29
सूर्य	11/12/2034 21:51
चंद्र	13/12/2034 16:06

बुध - केतु - राहु	
13/12/2034 16:06	
06/02/2035 00:03	
राहु	21/12/2034 19:41
गुरु	29/12/2034 01:33
शनि	06/01/2035 16:00
बुध	14/01/2035 08:44
केतु	17/01/2035 12:48
शुक्र	26/01/2035 14:07
सूर्य	29/01/2035 07:19
चंद्र	02/02/2035 19:59
मंगल	06/02/2035 00:03

बुध - केतु - गुरु	
06/02/2035 00:03	
26/03/2035 07:06	
गुरु	12/02/2035 10:35
शनि	20/02/2035 02:06
बुध	26/02/2035 22:18
केतु	01/03/2035 17:55
शुक्र	09/03/2035 19:05
सूर्य	12/03/2035 05:03
चंद्र	16/03/2035 05:38
मंगल	19/03/2035 01:15
राहु	26/03/2035 07:06

बुध - केतु - शनि	
26/03/2035 07:06	
22/05/2035 15:29	
शनि	04/04/2035 09:02
बुध	12/04/2035 12:01
केतु	15/04/2035 20:18
शुक्र	25/04/2035 09:42
सूर्य	28/04/2035 06:31
चंद्र	03/05/2035 01:13
मंगल	06/05/2035 09:31
राहु	14/05/2035 23:58
गुरु	22/05/2035 15:29

बुध - केतु - बुध	
22/05/2035 15:29	
12/07/2035 22:59	
बुध	29/05/2035 21:57
केतु	01/06/2035 21:47
शुक्र	10/06/2035 11:02
सूर्य	13/06/2035 00:37
चंद्र	17/06/2035 07:14
मंगल	20/06/2035 07:04
राहु	27/06/2035 23:48
गुरु	04/07/2035 20:00
शनि	12/07/2035 22:59

बुध - शुक्र - शुक्र	
12/07/2035 22:59	
01/01/2036 10:29	
शुक्र	10/08/2035 16:54
सूर्य	19/08/2035 07:53
चंद्र	02/09/2035 16:50
मंगल	12/09/2035 18:18
राहु	08/10/2035 15:14
गुरु	31/10/2035 15:10
शनि	27/11/2035 22:35
बुध	22/12/2035 09:01
केतु	01/01/2036 10:29

बुध - शुक्र - सूर्य	
01/01/2036 10:29	
22/02/2036 04:20	
सूर्य	04/01/2036 00:35
चंद्र	08/01/2036 08:04
मंगल	11/01/2036 08:30
राहु	19/01/2036 02:47
गुरु	26/01/2036 00:22
शनि	03/02/2036 05:00
बुध	10/02/2036 12:55
केतु	13/02/2036 13:22
शुक्र	22/02/2036 04:20

बुध - शुक्र - चंद्र	
22/02/2036 04:20	
18/05/2036 10:05	
चंद्र	29/02/2036 08:49
मंगल	05/03/2036 09:33
राहु	18/03/2036 08:01
गुरु	29/03/2036 19:59
शनि	12/04/2036 11:41
बुध	24/04/2036 16:54
केतु	29/04/2036 17:38
शुक्र	14/05/2036 02:36
सूर्य	18/05/2036 10:05

बुध - शुक्र - मंगल	
18/05/2036 10:05	
17/07/2036 18:55	
मंगल	21/05/2036 22:36
राहु	30/05/2036 23:56
गुरु	08/06/2036 01:06
शनि	17/06/2036 14:30
बुध	26/06/2036 03:45
केतु	29/06/2036 16:16
शुक्र	09/07/2036 17:44
सूर्य	12/07/2036 18:11
चंद्र	17/07/2036 18:55

बुध - शुक्र - राहु	
17/07/2036 18:55	
20/12/2036 00:28	
राहु	10/08/2036 01:45
गुरु	30/08/2036 18:29
शनि	24/09/2036 08:22
बुध	16/10/2036 08:09
केतु	25/10/2036 09:28
शुक्र	20/11/2036 06:24
सूर्य	28/11/2036 00:41
चंद्र	10/12/2036 23:08
मंगल	20/12/2036 00:28

बुध - शुक्र - गुरु	
20/12/2036 00:28	
07/05/2037 00:04	
गुरु	07/01/2037 10:01
शनि	29/01/2037 06:21
बुध	17/02/2037 19:29
केतु	25/02/2037 20:40
शुक्र	20/03/2037 20:36
सूर्य	27/03/2037 18:11
चंद्र	08/04/2037 06:09
मंगल	16/04/2037 07:19
राहु	07/05/2037 00:04

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - मंगल - शनि - शुक्र		शनि - मंगल - शनि - सूर्य		शनि - मंगल - शनि - चंद्र		शनि - मंगल - शनि - मंगल	
29/01/2026 07:23		08/02/2026 23:46		12/02/2026 04:41		17/02/2026 12:52	
08/02/2026 23:46		12/02/2026 04:41		17/02/2026 12:52		21/02/2026 06:36	
शुक्र	31/01/2026 02:07	सूर्य	09/02/2026 03:37	चंद्र	12/02/2026 15:22	मंगल	17/02/2026 18:06
सूर्य	31/01/2026 14:56	चंद्र	09/02/2026 10:01	मंगल	12/02/2026 22:50	राहु	18/02/2026 07:34
चंद्र	01/02/2026 12:18	मंगल	09/02/2026 14:30	राहु	13/02/2026 18:04	गुरु	18/02/2026 19:32
मंगल	02/02/2026 03:15	राहु	10/02/2026 02:03	गुरु	14/02/2026 11:10	शनि	19/02/2026 09:44
राहु	03/02/2026 17:42	गुरु	10/02/2026 12:18	शनि	15/02/2026 07:28	बुध	19/02/2026 22:27
गुरु	05/02/2026 03:54	शनि	11/02/2026 00:29	बुध	16/02/2026 01:37	केतु	20/02/2026 03:41
शनि	06/02/2026 20:29	बुध	11/02/2026 11:22	केतु	16/02/2026 09:06	शुक्र	20/02/2026 18:39
बुध	08/02/2026 08:48	केतु	11/02/2026 15:52	शुक्र	17/02/2026 06:28	सूर्य	20/02/2026 23:08
केतु	08/02/2026 23:46	शुक्र	12/02/2026 04:41	सूर्य	17/02/2026 12:52	चंद्र	21/02/2026 06:36

शनि - मंगल - शनि - राहु		शनि - मंगल - शनि - गुरु		शनि - मंगल - बुध - बुध		शनि - मंगल - बुध - केतु	
21/02/2026 06:36		02/03/2026 21:21		11/03/2026 10:28		19/03/2026 13:27	
02/03/2026 21:21		11/03/2026 10:28		19/03/2026 13:27		22/03/2026 21:44	
राहु	22/02/2026 17:13	गुरु	04/03/2026 00:42	बुध	12/03/2026 14:05	केतु	19/03/2026 18:08
गुरु	23/02/2026 23:59	शनि	05/03/2026 09:11	केतु	13/03/2026 01:28	शुक्र	20/03/2026 07:31
शनि	25/02/2026 12:31	बुध	06/03/2026 14:14	शुक्र	14/03/2026 09:57	सूर्य	20/03/2026 11:32
बुध	26/02/2026 21:13	केतु	07/03/2026 02:12	सूर्य	14/03/2026 19:42	चंद्र	20/03/2026 18:13
केतु	27/02/2026 10:40	शुक्र	08/03/2026 12:23	चंद्र	15/03/2026 11:57	मंगल	20/03/2026 22:54
शुक्र	01/03/2026 01:08	सूर्य	08/03/2026 22:38	मंगल	15/03/2026 23:20	राहु	21/03/2026 10:57
सूर्य	01/03/2026 12:40	चंद्र	09/03/2026 15:44	राहु	17/03/2026 04:35	गुरु	21/03/2026 21:39
चंद्र	02/03/2026 07:54	मंगल	10/03/2026 03:42	गुरु	18/03/2026 06:35	शनि	22/03/2026 10:22
मंगल	02/03/2026 21:21	राहु	11/03/2026 10:28	शनि	19/03/2026 13:27	बुध	22/03/2026 21:44

शनि - मंगल - बुध - शुक्र		शनि - मंगल - बुध - सूर्य		शनि - मंगल - बुध - चंद्र		शनि - मंगल - बुध - मंगल	
22/03/2026 21:44		01/04/2026 11:08		04/04/2026 07:57		09/04/2026 02:39	
01/04/2026 11:08		04/04/2026 07:57		09/04/2026 02:39		12/04/2026 10:57	
शुक्र	24/03/2026 11:58	सूर्य	01/04/2026 14:35	चंद्र	04/04/2026 17:31	मंगल	09/04/2026 07:20
सूर्य	24/03/2026 23:26	चंद्र	01/04/2026 20:19	मंगल	05/04/2026 00:12	राहु	09/04/2026 19:23
चंद्र	25/03/2026 18:33	मंगल	02/04/2026 00:20	राहु	05/04/2026 17:25	गुरु	10/04/2026 06:05
मंगल	26/03/2026 07:56	राहु	02/04/2026 10:39	गुरु	06/04/2026 08:42	शनि	10/04/2026 18:48
राहु	27/03/2026 18:21	गुरु	02/04/2026 19:50	शनि	07/04/2026 02:52	बुध	11/04/2026 06:10
गुरु	29/03/2026 00:56	शनि	03/04/2026 06:43	बुध	07/04/2026 19:07	केतु	11/04/2026 10:51
शनि	30/03/2026 13:15	बुध	03/04/2026 16:28	केतु	08/04/2026 01:48	शुक्र	12/04/2026 00:14
बुध	31/03/2026 21:45	केतु	03/04/2026 20:29	शुक्र	08/04/2026 20:55	सूर्य	12/04/2026 04:15
केतु	01/04/2026 11:08	शुक्र	04/04/2026 07:57	सूर्य	09/04/2026 02:39	चंद्र	12/04/2026 10:57

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - मंगल - बुध - राहु	
12/04/2026 10:57	
21/04/2026 01:24	
राहु	13/04/2026 17:55
गुरु	14/04/2026 21:26
शनि	16/04/2026 06:08
बुध	17/04/2026 11:23
केतु	17/04/2026 23:25
शुक्र	19/04/2026 09:50
सूर्य	19/04/2026 20:09
चंद्र	20/04/2026 13:21
मंगल	21/04/2026 01:24

शनि - मंगल - बुध - गुरु	
21/04/2026 01:24	
28/04/2026 16:55	
गुरु	22/04/2026 01:52
शनि	23/04/2026 06:56
बुध	24/04/2026 08:55
केतु	24/04/2026 19:38
शुक्र	26/04/2026 02:13
सूर्य	26/04/2026 11:24
चंद्र	27/04/2026 02:41
मंगल	27/04/2026 13:23
राहु	28/04/2026 16:55

शनि - मंगल - बुध - शनि	
28/04/2026 16:55	
07/05/2026 18:51	
शनि	30/04/2026 03:25
बुध	01/05/2026 10:18
केतु	01/05/2026 23:01
शुक्र	03/05/2026 11:20
सूर्य	03/05/2026 22:14
चंद्र	04/05/2026 16:23
मंगल	05/05/2026 05:06
राहु	06/05/2026 13:47
गुरु	07/05/2026 18:51

शनि - मंगल - केतु - केतु	
07/05/2026 18:51	
09/05/2026 03:54	
केतु	07/05/2026 20:46
शुक्र	08/05/2026 02:17
सूर्य	08/05/2026 03:56
चंद्र	08/05/2026 06:42
मंगल	08/05/2026 08:37
राहु	08/05/2026 13:35
गुरु	08/05/2026 17:59
शनि	08/05/2026 23:13
बुध	09/05/2026 03:54

शनि - मंगल - केतु - शुक्र	
09/05/2026 03:54	
13/05/2026 02:22	
शुक्र	09/05/2026 19:39
सूर्य	10/05/2026 00:22
चंद्र	10/05/2026 08:15
मंगल	10/05/2026 13:45
राहु	11/05/2026 03:55
गुरु	11/05/2026 16:31
शनि	12/05/2026 07:28
बुध	12/05/2026 20:51
केतु	13/05/2026 02:22

शनि - मंगल - केतु - सूर्य	
13/05/2026 02:22	
14/05/2026 06:42	
सूर्य	13/05/2026 03:47
चंद्र	13/05/2026 06:09
मंगल	13/05/2026 07:48
राहु	13/05/2026 12:03
गुरु	13/05/2026 15:49
शनि	13/05/2026 20:19
बुध	14/05/2026 00:20
केतु	14/05/2026 01:59
शुक्र	14/05/2026 06:42

शनि - मंगल - केतु - चंद्र	
14/05/2026 06:42	
16/05/2026 05:56	
चंद्र	14/05/2026 10:38
मंगल	14/05/2026 13:24
राहु	14/05/2026 20:29
गुरु	15/05/2026 02:46
शनि	15/05/2026 10:15
बुध	15/05/2026 16:57
केतु	15/05/2026 19:42
शुक्र	16/05/2026 03:34
सूर्य	16/05/2026 05:56

शनि - मंगल - केतु - मंगल	
16/05/2026 05:56	
17/05/2026 14:59	
मंगल	16/05/2026 07:51
राहु	16/05/2026 12:49
गुरु	16/05/2026 17:14
शनि	16/05/2026 22:28
बुध	17/05/2026 03:09
केतु	17/05/2026 05:04
शुक्र	17/05/2026 10:35
सूर्य	17/05/2026 12:14
चंद्र	17/05/2026 14:59

शनि - मंगल - केतु - राहु	
17/05/2026 14:59	
21/05/2026 04:00	
राहु	18/05/2026 03:45
गुरु	18/05/2026 15:05
शनि	19/05/2026 04:32
बुध	19/05/2026 16:35
केतु	19/05/2026 21:32
शुक्र	20/05/2026 11:42
सूर्य	20/05/2026 15:58
चंद्र	20/05/2026 23:03
मंगल	21/05/2026 04:00

शनि - मंगल - केतु - गुरु	
21/05/2026 04:00	
24/05/2026 07:34	
गुरु	21/05/2026 14:05
शनि	22/05/2026 02:03
बुध	22/05/2026 12:45
केतु	22/05/2026 17:09
शुक्र	23/05/2026 05:45
सूर्य	23/05/2026 09:32
चंद्र	23/05/2026 15:50
मंगल	23/05/2026 20:14
राहु	24/05/2026 07:34

शनि - मंगल - केतु - शनि	
24/05/2026 07:34	
28/05/2026 01:18	
शनि	24/05/2026 21:47
बुध	25/05/2026 10:29
केतु	25/05/2026 15:43
शुक्र	26/05/2026 06:41
सूर्य	26/05/2026 11:10
चंद्र	26/05/2026 18:39
मंगल	26/05/2026 23:53
राहु	27/05/2026 13:20
गुरु	28/05/2026 01:18

शनि - मंगल - केतु - बुध	
28/05/2026 01:18	
31/05/2026 09:36	
बुध	28/05/2026 12:41
केतु	28/05/2026 17:22
शुक्र	29/05/2026 06:45
सूर्य	29/05/2026 10:45
चंद्र	29/05/2026 17:27
मंगल	29/05/2026 22:08
राहु	30/05/2026 10:10
गुरु	30/05/2026 20:53
शनि	31/05/2026 09:36

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 8 वर्ष 9 मास 13 दिन

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष	
17/09/1975		30/06/1984		01/07/1995		01/07/2007		30/06/2020	
30/06/1984		01/07/1995		01/07/2007		30/06/2020		01/07/2034	
	00/00/0000	सूर्य	16/07/1985	मंगल	27/09/1996	गुरु	14/12/2008	शनि	10/03/2022
	00/00/0000	मंगल	05/09/1986	गुरु	31/01/1998	शनि	10/07/2010	केतु	31/12/2023
	00/00/0000	गुरु	29/11/1987	शनि	14/07/1999	केतु	15/03/2012	चंद्र	05/12/2025
	17/09/1975	शनि	28/03/1989	केतु	30/01/2001	चंद्र	30/12/2013	बुध	24/12/2027
शनि	18/01/1977	केतु	30/08/1990	चंद्र	27/09/2002	बुध	26/11/2015	शुक्र	25/02/2030
केतु	18/05/1979	चंद्र	06/03/1992	बुध	30/06/2004	शुक्र	02/12/2017	सूर्य	25/06/2031
चंद्र	10/11/1981	बुध	16/10/1993	शुक्र	12/05/2006	सूर्य	25/02/2019	मंगल	05/12/2032
बुध	30/06/1984	शुक्र	01/07/1995	सूर्य	01/07/2007	मंगल	30/06/2020	गुरु	01/07/2034

केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष	
01/07/2034		01/07/2049		01/07/2065		01/07/2082	
01/07/2049		01/07/2065		01/07/2082		00/00/0000	
केतु	08/06/2036	चंद्र	15/09/2051	बुध	28/12/2067	शुक्र	16/04/2085
चंद्र	04/07/2038	बुध	18/01/2054	शुक्र	17/08/2070	सूर्य	31/12/2086
बुध	14/09/2040	शुक्र	13/07/2056	सूर्य	28/03/2072	मंगल	10/11/2088
शुक्र	12/01/2043	सूर्य	18/01/2058	मंगल	30/12/2073	गुरु	16/11/2090
सूर्य	15/06/2044	मंगल	15/09/2059	गुरु	26/11/2075	शनि	17/09/2091
मंगल	02/01/2046	गुरु	01/07/2061	शनि	15/12/2077		00/00/0000
गुरु	08/09/2047	शनि	06/06/2063	केतु	25/02/2080		00/00/0000
शनि	01/07/2049	केतु	01/07/2065	चंद्र	01/07/2082		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि		शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य	
17/09/1975		18/01/1977		18/05/1979		10/11/1981		30/06/1984	
18/01/1977		18/05/1979		10/11/1981		30/06/1984		16/07/1985	
	00/00/0000	केतु	08/05/1977	चंद्र	20/09/1979	बुध	31/03/1982	सूर्य	06/08/1984
	17/09/1975	चंद्र	02/09/1977	बुध	31/01/1980	शुक्र	28/08/1982	मंगल	14/09/1984
चंद्र	20/09/1975	बुध	05/01/1978	शुक्र	20/06/1980	सूर्य	27/11/1982	गुरु	27/10/1984
बुध	15/01/1976	शुक्र	17/05/1978	सूर्य	14/09/1980	मंगल	07/03/1983	शनि	12/12/1984
शुक्र	17/05/1976	सूर्य	05/08/1978	मंगल	17/12/1980	गुरु	23/06/1983	केतु	30/01/1985
सूर्य	31/07/1976	मंगल	01/11/1978	गुरु	28/03/1981	शनि	17/10/1983	चंद्र	23/03/1985
मंगल	21/10/1976	गुरु	04/02/1979	शनि	16/07/1981	केतु	18/02/1984	बुध	18/05/1985
गुरु	18/01/1977	शनि	18/05/1979	केतु	10/11/1981	चंद्र	30/06/1984	शुक्र	16/07/1985

सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र	
16/07/1985		05/09/1986		29/11/1987		28/03/1989		30/08/1990	
05/09/1986		29/11/1987		28/03/1989		30/08/1990		06/03/1992	
मंगल	28/08/1985	गुरु	25/10/1986	शनि	27/01/1988	केतु	03/06/1989	चंद्र	14/11/1990
गुरु	14/10/1985	शनि	19/12/1986	केतु	29/03/1988	चंद्र	14/08/1989	बुध	03/02/1991
शनि	03/12/1985	केतु	15/02/1987	चंद्र	04/06/1988	बुध	29/10/1989	शुक्र	30/04/1991
केतु	26/01/1986	चंद्र	18/04/1987	बुध	14/08/1988	शुक्र	18/01/1990	सूर्य	22/06/1991
चंद्र	24/03/1986	बुध	23/06/1987	शुक्र	29/10/1988	सूर्य	08/03/1990	मंगल	18/08/1991
बुध	24/05/1986	शुक्र	01/09/1987	सूर्य	14/12/1988	मंगल	01/05/1990	गुरु	19/10/1991
शुक्र	28/07/1986	सूर्य	14/10/1987	मंगल	02/02/1989	गुरु	28/06/1990	शनि	25/12/1991
सूर्य	05/09/1986	मंगल	29/11/1987	गुरु	28/03/1989	शनि	30/08/1990	केतु	06/03/1992

सूर्य - बुध		सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
06/03/1992		16/10/1993		01/07/1995		27/09/1996		31/01/1998	
16/10/1993		01/07/1995		27/09/1996		31/01/1998		14/07/1999	
बुध	31/05/1992	शुक्र	20/01/1994	मंगल	17/08/1995	गुरु	21/11/1996	शनि	05/04/1998
शुक्र	31/08/1992	सूर्य	21/03/1994	गुरु	07/10/1995	शनि	19/01/1997	केतु	12/06/1998
सूर्य	25/10/1992	मंगल	24/05/1994	शनि	01/12/1995	केतु	23/03/1997	चंद्र	24/08/1998
मंगल	25/12/1992	गुरु	02/08/1994	केतु	28/01/1996	चंद्र	30/05/1997	बुध	09/11/1998
गुरु	01/03/1993	शनि	16/10/1994	चंद्र	31/03/1996	बुध	10/08/1997	शुक्र	31/01/1999
शनि	11/05/1993	केतु	05/01/1995	बुध	05/06/1996	शुक्र	25/10/1997	सूर्य	22/03/1999
केतु	26/07/1993	चंद्र	01/04/1995	शुक्र	15/08/1996	सूर्य	11/12/1997	मंगल	15/05/1999
चंद्र	16/10/1993	बुध	01/07/1995	सूर्य	27/09/1996	मंगल	31/01/1998	गुरु	14/07/1999

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - केतु		मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
14/07/1999		30/01/2001		27/09/2002		30/06/2004		12/05/2006	
30/01/2001		27/09/2002		30/06/2004		12/05/2006		01/07/2007	
केतु	25/09/1999	चंद्र	24/04/2001	बुध	30/12/2002	शुक्र	14/10/2004	सूर्य	20/06/2006
चंद्र	12/12/1999	बुध	21/07/2001	शुक्र	09/04/2003	सूर्य	17/12/2004	मंगल	02/08/2006
बुध	04/03/2000	शुक्र	23/10/2001	सूर्य	09/06/2003	मंगल	26/02/2005	गुरु	17/09/2006
शुक्र	31/05/2000	सूर्य	20/12/2001	मंगल	14/08/2003	गुरु	13/05/2005	शनि	07/11/2006
सूर्य	24/07/2000	मंगल	20/02/2002	गुरु	25/10/2003	शनि	03/08/2005	केतु	30/12/2006
मंगल	21/09/2000	गुरु	29/04/2002	शनि	11/01/2004	केतु	30/10/2005	चंद्र	26/02/2007
गुरु	23/11/2000	शनि	11/07/2002	केतु	03/04/2004	चंद्र	01/02/2006	बुध	28/04/2007
शनि	30/01/2001	केतु	27/09/2002	चंद्र	30/06/2004	बुध	12/05/2006	शुक्र	01/07/2007

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध	
01/07/2007		14/12/2008		10/07/2010		15/03/2012		30/12/2013	
14/12/2008		10/07/2010		15/03/2012		30/12/2013		26/11/2015	
गुरु	30/08/2007	शनि	21/02/2009	केतु	28/09/2010	चंद्र	14/06/2012	बुध	11/04/2014
शनि	02/11/2007	केतु	07/05/2009	चंद्र	21/12/2010	बुध	18/09/2012	शुक्र	28/07/2014
केतु	10/01/2008	चंद्र	25/07/2009	बुध	21/03/2011	शुक्र	28/12/2012	सूर्य	02/10/2014
चंद्र	23/03/2008	बुध	17/10/2009	शुक्र	25/06/2011	सूर्य	28/02/2013	मंगल	13/12/2014
बुध	09/06/2008	शुक्र	13/01/2010	सूर्य	22/08/2011	मंगल	07/05/2013	गुरु	01/03/2015
शुक्र	31/08/2008	सूर्य	09/03/2010	मंगल	24/10/2011	गुरु	20/07/2013	शनि	24/05/2015
सूर्य	20/10/2008	मंगल	07/05/2010	गुरु	01/01/2012	शनि	07/10/2013	केतु	22/08/2015
मंगल	14/12/2008	गुरु	10/07/2010	शनि	15/03/2012	केतु	30/12/2013	चंद्र	26/11/2015

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु	
26/11/2015		02/12/2017		25/02/2019		30/06/2020		10/03/2022	
02/12/2017		25/02/2019		30/06/2020		10/03/2022		31/12/2023	
शुक्र	19/03/2016	सूर्य	14/01/2018	मंगल	17/04/2019	शनि	13/09/2020	केतु	03/06/2022
सूर्य	28/05/2016	मंगल	01/03/2018	गुरु	11/06/2019	केतु	02/12/2020	चंद्र	02/09/2022
मंगल	13/08/2016	गुरु	21/04/2018	शनि	09/08/2019	चंद्र	25/02/2021	बुध	08/12/2022
गुरु	03/11/2016	शनि	14/06/2018	केतु	12/10/2019	बुध	26/05/2021	शुक्र	21/03/2023
शनि	31/01/2017	केतु	11/08/2018	चंद्र	19/12/2019	शुक्र	30/08/2021	सूर्य	22/05/2023
केतु	06/05/2017	चंद्र	12/10/2018	बुध	29/02/2020	सूर्य	28/10/2021	मंगल	30/07/2023
चंद्र	16/08/2017	बुध	17/12/2018	शुक्र	15/05/2020	मंगल	30/12/2021	गुरु	12/10/2023
बुध	02/12/2017	शुक्र	25/02/2019	सूर्य	30/06/2020	गुरु	10/03/2022	शनि	31/12/2023

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
31/12/2023		05/12/2025		24/12/2027		25/02/2030		25/06/2031	
05/12/2025		24/12/2027		25/02/2030		25/06/2031		05/12/2032	
चंद्र	06/04/2024	बुध	25/03/2026	शुक्र	26/04/2028	सूर्य	12/04/2030	मंगल	19/08/2031
बुध	18/07/2024	शुक्र	19/07/2026	सूर्य	10/07/2028	मंगल	01/06/2030	गुरु	17/10/2031
शुक्र	05/11/2024	सूर्य	28/09/2026	मंगल	30/09/2028	गुरु	25/07/2030	शनि	20/12/2031
सूर्य	11/01/2025	मंगल	15/12/2026	गुरु	28/12/2028	शनि	22/09/2030	केतु	26/02/2032
मंगल	25/03/2025	गुरु	09/03/2027	शनि	03/04/2029	केतु	24/11/2030	चंद्र	09/05/2032
गुरु	12/06/2025	शनि	07/06/2027	केतु	14/07/2029	चंद्र	30/01/2031	बुध	26/07/2032
शनि	05/09/2025	केतु	12/09/2027	चंद्र	01/11/2029	बुध	11/04/2031	शुक्र	16/10/2032
केतु	05/12/2025	चंद्र	24/12/2027	बुध	25/02/2030	शुक्र	25/06/2031	सूर्य	05/12/2032

शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र	
05/12/2032		01/07/2034		08/06/2036		04/07/2038		14/09/2040	
01/07/2034		08/06/2036		04/07/2038		14/09/2040		12/01/2043	
गुरु	07/02/2033	केतु	30/09/2034	चंद्र	21/09/2036	बुध	30/10/2038	शुक्र	24/01/2041
शनि	17/04/2033	चंद्र	06/01/2035	बुध	09/01/2037	शुक्र	03/03/2039	सूर्य	14/04/2041
केतु	30/06/2033	बुध	20/04/2035	शुक्र	07/05/2037	सूर्य	18/05/2039	मंगल	11/07/2041
चंद्र	17/09/2033	शुक्र	08/08/2035	सूर्य	17/07/2037	मंगल	09/08/2039	गुरु	15/10/2041
बुध	10/12/2033	सूर्य	14/10/2035	मंगल	03/10/2037	गुरु	07/11/2039	शनि	25/01/2042
शुक्र	09/03/2034	मंगल	26/12/2035	गुरु	27/12/2037	शनि	12/02/2040	केतु	15/05/2042
सूर्य	03/05/2034	गुरु	15/03/2036	शनि	28/03/2038	केतु	26/05/2040	चंद्र	10/09/2042
मंगल	01/07/2034	शनि	08/06/2036	केतु	04/07/2038	चंद्र	14/09/2040	बुध	12/01/2043

केतु - सूर्य		केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र	
12/01/2043		15/06/2044		02/01/2046		08/09/2047		01/07/2049	
15/06/2044		02/01/2046		08/09/2047		01/07/2049		15/09/2051	
सूर्य	02/03/2043	मंगल	12/08/2044	गुरु	12/03/2046	शनि	27/11/2047	चंद्र	20/10/2049
मंगल	25/04/2043	गुरु	15/10/2044	शनि	25/05/2046	केतु	21/02/2048	बुध	15/02/2050
गुरु	22/06/2043	शनि	22/12/2044	केतु	13/08/2046	चंद्र	22/05/2048	शुक्र	20/06/2050
शनि	24/08/2043	केतु	05/03/2045	चंद्र	05/11/2046	बुध	27/08/2048	सूर्य	04/09/2050
केतु	30/10/2043	चंद्र	23/05/2045	बुध	03/02/2047	शुक्र	07/12/2048	मंगल	27/11/2050
चंद्र	10/01/2044	बुध	14/08/2045	शुक्र	10/05/2047	सूर्य	08/02/2049	गुरु	25/02/2051
बुध	26/03/2044	शुक्र	10/11/2045	सूर्य	07/07/2047	मंगल	18/04/2049	शनि	02/06/2051
शुक्र	15/06/2044	सूर्य	02/01/2046	मंगल	08/09/2047	गुरु	01/07/2049	केतु	15/09/2051

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु	
15/09/2051		18/01/2054		13/07/2056		18/01/2058		15/09/2059	
18/01/2054		13/07/2056		18/01/2058		15/09/2059		01/07/2061	
बुध	18/01/2052	शुक्र	08/06/2054	सूर्य	04/09/2056	मंगल	22/03/2058	गुरु	27/11/2059
शुक्र	30/05/2052	सूर्य	02/09/2054	मंगल	31/10/2056	गुरु	28/05/2058	शनि	14/02/2060
सूर्य	19/08/2052	मंगल	05/12/2054	गुरु	01/01/2057	शनि	09/08/2058	केतु	09/05/2060
मंगल	16/11/2052	गुरु	16/03/2055	शनि	09/03/2057	केतु	27/10/2058	चंद्र	07/08/2060
गुरु	20/02/2053	शनि	04/07/2055	केतु	20/05/2057	चंद्र	18/01/2059	बुध	11/11/2060
शनि	03/06/2053	केतु	29/10/2055	चंद्र	04/08/2057	बुध	17/04/2059	शुक्र	21/02/2061
केतु	22/09/2053	चंद्र	02/03/2056	बुध	24/10/2057	शुक्र	19/07/2059	सूर्य	24/04/2061
चंद्र	18/01/2054	बुध	13/07/2056	शुक्र	18/01/2058	सूर्य	15/09/2059	मंगल	01/07/2061

चंद्र - शनि		चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
01/07/2061		06/06/2063		01/07/2065		28/12/2067		17/08/2070	
06/06/2063		01/07/2065		28/12/2067		17/08/2070		28/03/2072	
शनि	24/09/2061	केतु	12/09/2063	बुध	11/11/2065	शुक्र	25/05/2068	सूर्य	12/10/2070
केतु	24/12/2061	चंद्र	25/12/2063	शुक्र	01/04/2066	सूर्य	24/08/2068	मंगल	12/12/2070
चंद्र	31/03/2062	बुध	14/04/2064	सूर्य	26/06/2066	मंगल	02/12/2068	गुरु	16/02/2071
बुध	13/07/2062	शुक्र	09/08/2064	मंगल	29/09/2066	गुरु	20/03/2069	शनि	28/04/2071
शुक्र	30/10/2062	सूर्य	20/10/2064	गुरु	09/01/2067	शनि	14/07/2069	केतु	13/07/2071
सूर्य	05/01/2063	मंगल	06/01/2065	शनि	28/04/2067	केतु	16/11/2069	चंद्र	02/10/2071
मंगल	19/03/2063	गुरु	31/03/2065	केतु	24/08/2067	चंद्र	29/03/2070	बुध	28/12/2071
गुरु	06/06/2063	शनि	01/07/2065	चंद्र	28/12/2067	बुध	17/08/2070	शुक्र	28/03/2072

बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र	
28/03/2072		30/12/2073		26/11/2075		15/12/2077		25/02/2080	
30/12/2073		26/11/2075		15/12/2077		25/02/2080		01/07/2082	
मंगल	02/06/2072	गुरु	18/03/2074	शनि	25/02/2076	केतु	28/03/2078	चंद्र	23/06/2080
गुरु	13/08/2072	शनि	10/06/2074	केतु	31/05/2076	चंद्र	17/07/2078	बुध	26/10/2080
शनि	30/10/2072	केतु	08/09/2074	चंद्र	12/09/2076	बुध	12/11/2078	शुक्र	08/03/2081
केतु	21/01/2073	चंद्र	13/12/2074	बुध	31/12/2076	शुक्र	16/03/2079	सूर्य	28/05/2081
चंद्र	20/04/2073	बुध	25/03/2075	शुक्र	26/04/2077	सूर्य	31/05/2079	मंगल	25/08/2081
बुध	23/07/2073	शुक्र	11/07/2075	सूर्य	06/07/2077	मंगल	23/08/2079	गुरु	29/11/2081
शुक्र	30/10/2073	सूर्य	15/09/2075	मंगल	22/09/2077	गुरु	21/11/2079	शनि	12/03/2082
सूर्य	30/12/2073	मंगल	26/11/2075	गुरु	15/12/2077	शनि	25/02/2080	केतु	01/07/2082

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 2 वर्ष 3 मास 10 दिन

मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष	
17/09/1975		27/12/1977		27/12/1989		27/08/2000		28/04/2013	
27/12/1977		27/12/1989		27/08/2000		28/04/2013		27/08/2024	
	00/00/0000	राहु	16/10/1979	गुरु	31/05/1991	शनि	30/08/2002	बुध	05/12/2014
	00/00/0000	गुरु	22/05/1981	शनि	06/02/1993	बुध	15/06/2004	केतु	04/08/2015
	00/00/0000	शनि	16/04/1983	बुध	12/08/1994	केतु	12/03/2005	शुक्र	24/06/2017
	17/09/1975	बुध	27/12/1984	केतु	27/03/1995	शुक्र	22/04/2007	सूर्य	17/01/2018
बुध	26/04/1976	केतु	09/09/1985	शुक्र	04/01/1997	सूर्य	10/12/2007	चंद्र	28/12/2018
केतु	03/08/1976	शुक्र	09/09/1987	सूर्य	18/07/1997	चंद्र	29/12/2008	मंगल	26/08/2019
शुक्र	14/05/1977	सूर्य	15/04/1988	चंद्र	08/06/1998	मंगल	25/09/2009	राहु	08/05/2021
सूर्य	07/08/1977	चंद्र	16/04/1989	मंगल	21/01/1999	राहु	20/08/2011	गुरु	11/11/2022
चंद्र	27/12/1977	मंगल	27/12/1989	राहु	27/08/2000	गुरु	28/04/2013	शनि	27/08/2024

केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष	
27/08/2024		28/04/2029		28/08/2042		28/08/2046		28/04/2053	
28/04/2029		28/08/2042		28/08/2046		28/04/2053		00/00/0000	
केतु	05/12/2024	शुक्र	19/07/2031	सूर्य	09/11/2042	चंद्र	19/03/2047	मंगल	05/08/2053
शुक्र	15/09/2025	सूर्य	18/03/2032	चंद्र	11/03/2043	मंगल	08/08/2047	राहु	18/04/2054
सूर्य	09/12/2025	चंद्र	28/04/2033	मंगल	04/06/2043	राहु	07/08/2048	गुरु	01/12/2054
चंद्र	30/04/2026	मंगल	06/02/2034	राहु	09/01/2044	गुरु	28/06/2049	शनि	28/08/2055
मंगल	08/08/2026	राहु	06/02/2036	गुरु	22/07/2044	शनि	18/07/2050	बुध	17/09/2055
राहु	20/04/2027	गुरु	17/11/2037	शनि	10/03/2045	बुध	28/06/2051		00/00/0000
गुरु	04/12/2027	शनि	28/12/2039	बुध	03/10/2045	केतु	17/11/2051		00/00/0000
शनि	29/08/2028	बुध	17/11/2041	केतु	27/12/2045	शुक्र	27/12/2052		00/00/0000
बुध	28/04/2029	केतु	28/08/2042	शुक्र	28/08/2046	सूर्य	28/04/2053		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
17/09/1975		26/04/1976		03/08/1976		14/05/1977		07/08/1977	
26/04/1976		03/08/1976		14/05/1977		07/08/1977		27/12/1977	
बुध	01/10/1975	केतु	01/05/1976	शुक्र	19/09/1976	सूर्य	18/05/1977	चंद्र	19/08/1977
केतु	15/10/1975	शुक्र	18/05/1976	सूर्य	04/10/1976	चंद्र	25/05/1977	मंगल	27/08/1977
शुक्र	25/11/1975	सूर्य	23/05/1976	चंद्र	27/10/1976	मंगल	30/05/1977	राहु	18/09/1977
सूर्य	07/12/1975	चंद्र	31/05/1976	मंगल	13/11/1976	राहु	12/06/1977	गुरु	07/10/1977
चंद्र	27/12/1975	मंगल	06/06/1976	राहु	25/12/1976	गुरु	24/06/1977	शनि	29/10/1977
मंगल	10/01/1976	राहु	21/06/1976	गुरु	01/02/1977	शनि	07/07/1977	बुध	18/11/1977
राहु	15/02/1976	गुरु	04/07/1976	शनि	18/03/1977	बुध	19/07/1977	केतु	27/11/1977
गुरु	18/03/1976	शनि	20/07/1976	बुध	28/04/1977	केतु	24/07/1977	शुक्र	20/12/1977
शनि	26/04/1976	बुध	03/08/1976	केतु	14/05/1977	शुक्र	07/08/1977	सूर्य	27/12/1977

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
27/12/1977		16/10/1979		22/05/1981		16/04/1983		27/12/1984	
16/10/1979		22/05/1981		16/04/1983		27/12/1984		09/09/1985	
राहु	05/04/1978	गुरु	02/01/1980	शनि	09/09/1981	बुध	13/07/1983	केतु	11/01/1985
गुरु	02/07/1978	शनि	03/04/1980	बुध	16/12/1981	केतु	18/08/1983	शुक्र	23/02/1985
शनि	14/10/1978	बुध	25/06/1980	केतु	26/01/1982	शुक्र	30/11/1983	सूर्य	07/03/1985
बुध	15/01/1979	केतु	29/07/1980	शुक्र	22/05/1982	सूर्य	31/12/1983	चंद्र	29/03/1985
केतु	22/02/1979	शुक्र	04/11/1980	सूर्य	25/06/1982	चंद्र	21/02/1984	मंगल	13/04/1985
शुक्र	12/06/1979	सूर्य	03/12/1980	चंद्र	22/08/1982	मंगल	28/03/1984	राहु	21/05/1985
सूर्य	15/07/1979	चंद्र	20/01/1981	मंगल	02/10/1982	राहु	29/06/1984	गुरु	24/06/1985
चंद्र	07/09/1979	मंगल	24/02/1981	राहु	14/01/1983	गुरु	20/09/1984	शनि	04/08/1985
मंगल	16/10/1979	राहु	22/05/1981	गुरु	16/04/1983	शनि	27/12/1984	बुध	09/09/1985

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
09/09/1985		09/09/1987		15/04/1988		16/04/1989		27/12/1989	
09/09/1987		15/04/1988		16/04/1989		27/12/1989		31/05/1991	
शुक्र	09/01/1986	सूर्य	20/09/1987	चंद्र	16/05/1988	मंगल	01/05/1989	गुरु	07/03/1990
सूर्य	14/02/1986	चंद्र	09/10/1987	मंगल	06/06/1988	राहु	08/06/1989	शनि	28/05/1990
चंद्र	16/04/1986	मंगल	21/10/1987	राहु	31/07/1988	गुरु	12/07/1989	बुध	09/08/1990
मंगल	29/05/1986	राहु	23/11/1987	गुरु	18/09/1988	शनि	22/08/1989	केतु	09/09/1990
राहु	15/09/1986	गुरु	22/12/1987	शनि	15/11/1988	बुध	27/09/1989	शुक्र	04/12/1990
गुरु	22/12/1986	शनि	26/01/1988	बुध	05/01/1989	केतु	12/10/1989	सूर्य	30/12/1990
शनि	16/04/1987	बुध	26/02/1988	केतु	27/01/1989	शुक्र	23/11/1989	चंद्र	12/02/1991
बुध	29/07/1987	केतु	10/03/1988	शुक्र	28/03/1989	सूर्य	06/12/1989	मंगल	14/03/1991
केतु	09/09/1987	शुक्र	15/04/1988	सूर्य	16/04/1989	चंद्र	27/12/1989	राहु	31/05/1991

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
31/05/1991		06/02/1993		12/08/1994		27/03/1995		04/01/1997	
06/02/1993		12/08/1994		27/03/1995		04/01/1997		18/07/1997	
शनि	06/09/1991	बुध	25/04/1993	केतु	25/08/1994	शुक्र	13/07/1995	सूर्य	14/01/1997
बुध	02/12/1991	केतु	27/05/1993	शुक्र	02/10/1994	सूर्य	15/08/1995	चंद्र	30/01/1997
केतु	07/01/1992	शुक्र	27/08/1993	सूर्य	13/10/1994	चंद्र	08/10/1995	मंगल	11/02/1997
शुक्र	19/04/1992	सूर्य	24/09/1993	चंद्र	01/11/1994	मंगल	15/11/1995	राहु	12/03/1997
सूर्य	20/05/1992	चंद्र	09/11/1993	मंगल	14/11/1994	राहु	20/02/1996	गुरु	07/04/1997
चंद्र	10/07/1992	मंगल	11/12/1993	राहु	18/12/1994	गुरु	17/05/1996	शनि	08/05/1997
मंगल	15/08/1992	राहु	04/03/1994	गुरु	18/01/1995	शनि	27/08/1996	बुध	04/06/1997
राहु	15/11/1992	गुरु	16/05/1994	शनि	23/02/1995	बुध	27/11/1996	केतु	16/06/1997
गुरु	06/02/1993	शनि	12/08/1994	बुध	27/03/1995	केतु	04/01/1997	शुक्र	18/07/1997

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
18/07/1997		08/06/1998		21/01/1999		27/08/2000		30/08/2002	
08/06/1998		21/01/1999		27/08/2000		30/08/2002		15/06/2004	
चंद्र	14/08/1997	मंगल	21/06/1998	राहु	19/04/1999	शनि	21/12/2000	बुध	01/12/2002
मंगल	02/09/1997	राहु	25/07/1998	गुरु	06/07/1999	बुध	04/04/2001	केतु	08/01/2003
राहु	21/10/1997	गुरु	24/08/1998	शनि	06/10/1999	केतु	17/05/2001	शुक्र	27/04/2003
गुरु	03/12/1997	शनि	29/09/1998	बुध	28/12/1999	शुक्र	16/09/2001	सूर्य	30/05/2003
शनि	23/01/1998	बुध	01/11/1998	केतु	31/01/2000	सूर्य	23/10/2001	चंद्र	24/07/2003
बुध	10/03/1998	केतु	14/11/1998	शुक्र	07/05/2000	चंद्र	23/12/2001	मंगल	31/08/2003
केतु	29/03/1998	शुक्र	22/12/1998	सूर्य	06/06/2000	मंगल	03/02/2002	राहु	07/12/2003
शुक्र	22/05/1998	सूर्य	02/01/1999	चंद्र	24/07/2000	राहु	24/05/2002	गुरु	04/03/2004
सूर्य	08/06/1998	चंद्र	21/01/1999	मंगल	27/08/2000	गुरु	30/08/2002	शनि	15/06/2004

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
15/06/2004		12/03/2005		22/04/2007		10/12/2007		29/12/2008	
12/03/2005		22/04/2007		10/12/2007		29/12/2008		25/09/2009	
केतु	01/07/2004	शुक्र	19/07/2005	सूर्य	04/05/2007	चंद्र	11/01/2008	मंगल	14/01/2009
शुक्र	15/08/2004	सूर्य	26/08/2005	चंद्र	23/05/2007	मंगल	02/02/2008	राहु	23/02/2009
सूर्य	29/08/2004	चंद्र	30/10/2005	मंगल	06/06/2007	राहु	31/03/2008	गुरु	31/03/2009
चंद्र	20/09/2004	मंगल	14/12/2005	राहु	10/07/2007	गुरु	21/05/2008	शनि	13/05/2009
मंगल	06/10/2004	राहु	08/04/2006	गुरु	10/08/2007	शनि	22/07/2008	बुध	20/06/2009
राहु	15/11/2004	गुरु	20/07/2006	शनि	16/09/2007	बुध	14/09/2008	केतु	06/07/2009
गुरु	21/12/2004	शनि	19/11/2006	बुध	19/10/2007	केतु	07/10/2008	शुक्र	20/08/2009
शनि	02/02/2005	बुध	08/03/2007	केतु	01/11/2007	शुक्र	10/12/2008	सूर्य	03/09/2009
बुध	12/03/2005	केतु	22/04/2007	शुक्र	10/12/2007	सूर्य	29/12/2008	चंद्र	25/09/2009

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
25/09/2009		20/08/2011		28/04/2013		05/12/2014		04/08/2015	
20/08/2011		28/04/2013		05/12/2014		04/08/2015		24/06/2017	
राहु	07/01/2010	गुरु	10/11/2011	बुध	20/07/2013	केतु	19/12/2014	शुक्र	27/11/2015
गुरु	10/04/2010	शनि	16/02/2012	केतु	23/08/2013	शुक्र	29/01/2015	सूर्य	31/12/2015
शनि	29/07/2010	बुध	13/05/2012	शुक्र	29/11/2013	सूर्य	10/02/2015	चंद्र	27/02/2016
बुध	04/11/2010	केतु	18/06/2012	सूर्य	28/12/2013	चंद्र	02/03/2015	मंगल	07/04/2016
केतु	14/12/2010	शुक्र	29/09/2012	चंद्र	15/02/2014	मंगल	16/03/2015	राहु	19/07/2016
शुक्र	09/04/2011	सूर्य	30/10/2012	मंगल	21/03/2014	राहु	21/04/2015	गुरु	19/10/2016
सूर्य	14/05/2011	चंद्र	20/12/2012	राहु	17/06/2014	गुरु	23/05/2015	शनि	06/02/2017
चंद्र	11/07/2011	मंगल	25/01/2013	गुरु	03/09/2014	शनि	01/07/2015	बुध	14/05/2017
मंगल	20/08/2011	राहु	28/04/2013	शनि	05/12/2014	बुध	04/08/2015	केतु	24/06/2017

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
24/06/2017		17/01/2018		28/12/2018		26/08/2019		08/05/2021	
17/01/2018		28/12/2018		26/08/2019		08/05/2021		11/11/2022	
सूर्य	04/07/2017	चंद्र	14/02/2018	मंगल	11/01/2019	राहु	27/11/2019	गुरु	21/07/2021
चंद्र	21/07/2017	मंगल	07/03/2018	राहु	16/02/2019	गुरु	18/02/2020	शनि	16/10/2021
मंगल	02/08/2017	राहु	27/04/2018	गुरु	20/03/2019	शनि	26/05/2020	बुध	02/01/2022
राहु	02/09/2017	गुरु	12/06/2018	शनि	27/04/2019	बुध	22/08/2020	केतु	03/02/2022
गुरु	30/09/2017	शनि	06/08/2018	बुध	01/06/2019	केतु	28/09/2020	शुक्र	06/05/2022
शनि	02/11/2017	बुध	24/09/2018	केतु	15/06/2019	शुक्र	09/01/2021	सूर्य	03/06/2022
बुध	01/12/2017	केतु	14/10/2018	शुक्र	25/07/2019	सूर्य	09/02/2021	चंद्र	19/07/2022
केतु	13/12/2017	शुक्र	10/12/2018	सूर्य	06/08/2019	चंद्र	02/04/2021	मंगल	20/08/2022
शुक्र	17/01/2018	सूर्य	28/12/2018	चंद्र	26/08/2019	मंगल	08/05/2021	राहु	11/11/2022

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
11/11/2022		27/08/2024		05/12/2024		15/09/2025		09/12/2025	
27/08/2024		05/12/2024		15/09/2025		09/12/2025		30/04/2026	
शनि	23/02/2023	केतु	02/09/2024	शुक्र	21/01/2025	सूर्य	19/09/2025	चंद्र	21/12/2025
बुध	27/05/2023	शुक्र	19/09/2024	सूर्य	04/02/2025	चंद्र	26/09/2025	मंगल	29/12/2025
केतु	04/07/2023	सूर्य	24/09/2024	चंद्र	28/02/2025	मंगल	01/10/2025	राहु	20/01/2026
शुक्र	21/10/2023	चंद्र	02/10/2024	मंगल	17/03/2025	राहु	14/10/2025	गुरु	07/02/2026
सूर्य	23/11/2023	मंगल	08/10/2024	राहु	28/04/2025	गुरु	25/10/2025	शनि	02/03/2026
चंद्र	16/01/2024	राहु	23/10/2024	गुरु	05/06/2025	शनि	08/11/2025	बुध	22/03/2026
मंगल	24/02/2024	गुरु	05/11/2024	शनि	20/07/2025	बुध	20/11/2025	केतु	30/03/2026
राहु	01/06/2024	शनि	21/11/2024	बुध	29/08/2025	केतु	25/11/2025	शुक्र	23/04/2026
गुरु	27/08/2024	बुध	05/12/2024	केतु	15/09/2025	शुक्र	09/12/2025	सूर्य	30/04/2026

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
30/04/2026		08/08/2026		20/04/2027		04/12/2027		29/08/2028	
08/08/2026		20/04/2027		04/12/2027		29/08/2028		28/04/2029	
मंगल	06/05/2026	राहु	15/09/2026	गुरु	21/05/2027	शनि	15/01/2028	बुध	03/10/2028
राहु	21/05/2026	गुरु	19/10/2026	शनि	26/06/2027	बुध	22/02/2028	केतु	17/10/2028
गुरु	03/06/2026	शनि	29/11/2026	बुध	28/07/2027	केतु	09/03/2028	शुक्र	26/11/2028
शनि	19/06/2026	बुध	04/01/2027	केतु	10/08/2027	शुक्र	23/04/2028	सूर्य	08/12/2028
बुध	03/07/2026	केतु	19/01/2027	शुक्र	17/09/2027	सूर्य	07/05/2028	चंद्र	28/12/2028
केतु	09/07/2026	शुक्र	02/03/2027	सूर्य	28/09/2027	चंद्र	29/05/2028	मंगल	11/01/2029
शुक्र	25/07/2026	सूर्य	15/03/2027	चंद्र	17/10/2027	मंगल	14/06/2028	राहु	16/02/2029
सूर्य	30/07/2026	चंद्र	05/04/2027	मंगल	30/10/2027	राहु	24/07/2028	गुरु	21/03/2029
चंद्र	08/08/2026	मंगल	20/04/2027	राहु	04/12/2027	गुरु	29/08/2028	शनि	28/04/2029

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
28/04/2029		19/07/2031		18/03/2032		28/04/2033		06/02/2034	
19/07/2031		18/03/2032		28/04/2033		06/02/2034		06/02/2036	
शुक्र	10/09/2029	सूर्य	31/07/2031	चंद्र	21/04/2032	मंगल	14/05/2033	राहु	27/05/2034
सूर्य	21/10/2029	चंद्र	20/08/2031	मंगल	15/05/2032	राहु	26/06/2033	गुरु	01/09/2034
चंद्र	27/12/2029	मंगल	03/09/2031	राहु	14/07/2032	गुरु	03/08/2033	शनि	26/12/2034
मंगल	13/02/2030	राहु	10/10/2031	गुरु	07/09/2032	शनि	17/09/2033	बुध	08/04/2035
राहु	14/06/2030	गुरु	11/11/2031	शनि	10/11/2032	बुध	27/10/2033	केतु	21/05/2035
गुरु	01/10/2030	शनि	20/12/2031	बुध	06/01/2033	केतु	13/11/2033	शुक्र	19/09/2035
शनि	06/02/2031	बुध	23/01/2032	केतु	30/01/2033	शुक्र	30/12/2033	सूर्य	26/10/2035
बुध	01/06/2031	केतु	06/02/2032	शुक्र	08/04/2033	सूर्य	13/01/2034	चंद्र	26/12/2035
केतु	19/07/2031	शुक्र	18/03/2032	सूर्य	28/04/2033	चंद्र	06/02/2034	मंगल	06/02/2036

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
06/02/2036		17/11/2037		28/12/2039		17/11/2041		28/08/2042	
17/11/2037		28/12/2039		17/11/2041		28/08/2042		09/11/2042	
गुरु	03/05/2036	शनि	19/03/2038	बुध	04/04/2040	केतु	03/12/2041	सूर्य	01/09/2042
शनि	14/08/2036	बुध	06/07/2038	केतु	14/05/2040	शुक्र	20/01/2042	चंद्र	07/09/2042
बुध	14/11/2036	केतु	20/08/2038	शुक्र	06/09/2040	सूर्य	03/02/2042	मंगल	11/09/2042
केतु	22/12/2036	शुक्र	27/12/2038	सूर्य	10/10/2040	चंद्र	27/02/2042	राहु	22/09/2042
शुक्र	09/04/2037	सूर्य	03/02/2039	चंद्र	07/12/2040	मंगल	15/03/2042	गुरु	02/10/2042
सूर्य	11/05/2037	चंद्र	08/04/2039	मंगल	16/01/2041	राहु	27/04/2042	शनि	13/10/2042
चंद्र	05/07/2037	मंगल	23/05/2039	राहु	30/04/2041	गुरु	04/06/2042	बुध	23/10/2042
मंगल	11/08/2037	राहु	16/09/2039	गुरु	31/07/2041	शनि	19/07/2042	केतु	28/10/2042
राहु	17/11/2037	गुरु	28/12/2039	शनि	17/11/2041	बुध	28/08/2042	शुक्र	09/11/2042

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
09/11/2042		11/03/2043		04/06/2043		09/01/2044		22/07/2044	
11/03/2043		04/06/2043		09/01/2044		22/07/2044		10/03/2045	
चंद्र	19/11/2042	मंगल	16/03/2043	राहु	07/07/2043	गुरु	04/02/2044	शनि	27/08/2044
मंगल	26/11/2042	राहु	28/03/2043	गुरु	05/08/2043	शनि	06/03/2044	बुध	29/09/2044
राहु	14/12/2042	गुरु	09/04/2043	शनि	09/09/2043	बुध	02/04/2044	केतु	13/10/2044
गुरु	31/12/2042	शनि	22/04/2043	बुध	10/10/2043	केतु	14/04/2044	शुक्र	20/11/2044
शनि	19/01/2043	बुध	04/05/2043	केतु	23/10/2043	शुक्र	16/05/2044	सूर्य	02/12/2044
बुध	05/02/2043	केतु	09/05/2043	शुक्र	28/11/2043	सूर्य	26/05/2044	चंद्र	21/12/2044
केतु	12/02/2043	शुक्र	24/05/2043	सूर्य	09/12/2043	चंद्र	11/06/2044	मंगल	04/01/2045
शुक्र	05/03/2043	सूर्य	28/05/2043	चंद्र	27/12/2043	मंगल	23/06/2044	राहु	07/02/2045
सूर्य	11/03/2043	चंद्र	04/06/2043	मंगल	09/01/2044	राहु	22/07/2044	गुरु	10/03/2045

सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
10/03/2045		03/10/2045		27/12/2045		28/08/2046		19/03/2047	
03/10/2045		27/12/2045		28/08/2046		19/03/2047		08/08/2047	
बुध	09/04/2045	केतु	08/10/2045	शुक्र	06/02/2046	चंद्र	14/09/2046	मंगल	27/03/2047
केतु	21/04/2045	शुक्र	22/10/2045	सूर्य	18/02/2046	मंगल	26/09/2046	राहु	17/04/2047
शुक्र	25/05/2045	सूर्य	27/10/2045	चंद्र	10/03/2046	राहु	26/10/2046	गुरु	06/05/2047
सूर्य	04/06/2045	चंद्र	03/11/2045	मंगल	25/03/2046	गुरु	22/11/2046	शनि	29/05/2047
चंद्र	22/06/2045	मंगल	08/11/2045	राहु	30/04/2046	शनि	24/12/2046	बुध	18/06/2047
मंगल	04/07/2045	राहु	20/11/2045	गुरु	02/06/2046	बुध	22/01/2047	केतु	26/06/2047
राहु	04/08/2045	गुरु	02/12/2045	शनि	10/07/2046	केतु	03/02/2047	शुक्र	20/07/2047
गुरु	31/08/2045	शनि	15/12/2045	बुध	14/08/2046	शुक्र	09/03/2047	सूर्य	27/07/2047
शनि	03/10/2045	बुध	27/12/2045	केतु	28/08/2046	सूर्य	19/03/2047	चंद्र	08/08/2047

चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
08/08/2047		07/08/2048		28/06/2049		18/07/2050		28/06/2051	
07/08/2048		28/06/2049		18/07/2050		28/06/2051		17/11/2051	
राहु	02/10/2047	गुरु	19/09/2048	शनि	28/08/2049	बुध	05/09/2050	केतु	07/07/2051
गुरु	19/11/2047	शनि	10/11/2048	बुध	21/10/2049	केतु	25/09/2050	शुक्र	30/07/2051
शनि	16/01/2048	बुध	26/12/2048	केतु	13/11/2049	शुक्र	22/11/2050	सूर्य	06/08/2051
बुध	08/03/2048	केतु	14/01/2049	शुक्र	16/01/2050	सूर्य	09/12/2050	चंद्र	18/08/2051
केतु	29/03/2048	शुक्र	09/03/2049	सूर्य	04/02/2050	चंद्र	07/01/2051	मंगल	26/08/2051
शुक्र	29/05/2048	सूर्य	25/03/2049	चंद्र	09/03/2050	मंगल	27/01/2051	राहु	17/09/2051
सूर्य	16/06/2048	चंद्र	21/04/2049	मंगल	31/03/2050	राहु	20/03/2051	गुरु	06/10/2051
चंद्र	17/07/2048	मंगल	10/05/2049	राहु	28/05/2050	गुरु	05/05/2051	शनि	28/10/2051
मंगल	07/08/2048	राहु	28/06/2049	गुरु	18/07/2050	शनि	28/06/2051	बुध	17/11/2051

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 15 वर्ष 9 मास 2 दिन

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
17/09/1975		21/06/1991		21/06/2003		20/06/2024		21/06/2030	
21/06/1991		21/06/2003		20/06/2024		21/06/2030		21/06/2045	
गुरु	24/10/1975	राहु	20/10/1992	शुक्र	21/07/2007	सूर्य	20/10/2024	चंद्र	21/07/2032
राहु	03/12/1977	शुक्र	19/02/1995	सूर्य	20/09/2008	चंद्र	20/08/2025	मंगल	31/08/2033
शुक्र	14/08/1981	सूर्य	21/10/1995	चंद्र	21/08/2011	मंगल	30/01/2026	बुध	10/01/2036
सूर्य	03/09/1982	चंद्र	21/06/1997	मंगल	11/03/2013	बुध	10/01/2027	शनि	31/05/2037
चंद्र	24/04/1985	मंगल	11/05/1998	बुध	30/06/2016	शनि	01/08/2027	गुरु	20/01/2040
मंगल	20/09/1986	बुध	31/03/2000	शनि	11/06/2018	गुरु	20/08/2028	राहु	20/09/2041
बुध	16/09/1989	शनि	11/05/2001	गुरु	19/02/2022	राहु	21/04/2029	शुक्र	20/08/2044
शनि	21/06/1991	गुरु	21/06/2003	राहु	20/06/2024	शुक्र	21/06/2030	सूर्य	21/06/2045

मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
21/06/2045		21/06/2053		21/06/2070		20/06/2080	
21/06/2053		21/06/2070		20/06/2080		00/00/0000	
मंगल	23/01/2046	बुध	23/02/2056	शनि	25/05/2071	गुरु	17/09/2083
बुध	28/04/2047	शनि	20/09/2057	गुरु	26/02/2073		00/00/0000
शनि	23/01/2048	गुरु	16/09/2060	राहु	07/04/2074		00/00/0000
गुरु	21/06/2049	राहु	07/08/2062	शुक्र	18/03/2076		00/00/0000
राहु	11/05/2050	शुक्र	26/11/2065	सूर्य	06/10/2076		00/00/0000
शुक्र	30/11/2051	सूर्य	06/11/2066	चंद्र	26/02/2078		00/00/0000
सूर्य	11/05/2052	चंद्र	18/03/2069	मंगल	23/11/2078		00/00/0000
चंद्र	21/06/2053	मंगल	21/06/2070	बुध	20/06/2080		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - राहु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
17/09/1975		24/10/1975		03/12/1977		14/08/1981		03/09/1982	
24/10/1975		03/12/1977		14/08/1981		03/09/1982		24/04/1985	
	00/00/0000	राहु	18/01/1976	शुक्र	23/08/1978	सूर्य	04/09/1981	चंद्र	15/01/1983
	00/00/0000	शुक्र	16/06/1976	सूर्य	06/11/1978	चंद्र	28/10/1981	मंगल	27/03/1983
	00/00/0000	सूर्य	29/07/1976	चंद्र	12/05/1979	मंगल	25/11/1981	बुध	26/08/1983
	00/00/0000	चंद्र	13/11/1976	मंगल	20/08/1979	बुध	25/01/1982	शनि	23/11/1983
	00/00/0000	मंगल	09/01/1977	बुध	19/03/1980	शनि	02/03/1982	गुरु	11/05/1984
	00/00/0000	बुध	10/05/1977	शनि	22/07/1980	गुरु	08/05/1982	राहु	26/08/1984
	17/09/1975	शनि	21/07/1977	गुरु	17/03/1981	राहु	20/06/1982	शुक्र	01/03/1985
शनि	24/10/1975	गुरु	03/12/1977	राहु	14/08/1981	शुक्र	03/09/1982	सूर्य	24/04/1985

गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु		राहु - शुक्र	
24/04/1985		20/09/1986		16/09/1989		21/06/1991		20/10/1992	
20/09/1986		16/09/1989		21/06/1991		20/10/1992		19/02/1995	
मंगल	01/06/1985	बुध	11/03/1987	शनि	15/11/1989	राहु	14/08/1991	शुक्र	04/04/1993
बुध	21/08/1985	शनि	20/06/1987	गुरु	08/03/1990	शुक्र	17/11/1991	सूर्य	21/05/1993
शनि	08/10/1985	गुरु	29/12/1987	राहु	18/05/1990	सूर्य	14/12/1991	चंद्र	16/09/1993
गुरु	06/01/1986	राहु	29/04/1988	शुक्र	20/09/1990	चंद्र	20/02/1992	मंगल	19/11/1993
राहु	04/03/1986	शुक्र	27/11/1988	सूर्य	26/10/1990	मंगल	27/03/1992	बुध	02/04/1994
शुक्र	12/06/1986	सूर्य	27/01/1989	चंद्र	23/01/1991	बुध	11/06/1992	शनि	20/06/1994
सूर्य	11/07/1986	चंद्र	28/06/1989	मंगल	12/03/1991	शनि	26/07/1992	गुरु	17/11/1994
चंद्र	20/09/1986	मंगल	16/09/1989	बुध	21/06/1991	गुरु	20/10/1992	राहु	19/02/1995

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध		राहु - शनि	
19/02/1995		21/10/1995		21/06/1997		11/05/1998		31/03/2000	
21/10/1995		21/06/1997		11/05/1998		31/03/2000		11/05/2001	
सूर्य	05/03/1995	चंद्र	13/01/1996	मंगल	15/07/1997	बुध	28/08/1998	शनि	08/05/2000
चंद्र	08/04/1995	मंगल	27/02/1996	बुध	04/09/1997	शनि	31/10/1998	गुरु	18/07/2000
मंगल	26/04/1995	बुध	02/06/1996	शनि	04/10/1997	गुरु	01/03/1999	राहु	01/09/2000
बुध	03/06/1995	शनि	29/07/1996	गुरु	30/11/1997	राहु	17/05/1999	शुक्र	19/11/2000
शनि	26/06/1995	गुरु	13/11/1996	राहु	05/01/1998	शुक्र	28/09/1999	सूर्य	12/12/2000
गुरु	07/08/1995	राहु	19/01/1997	शुक्र	09/03/1998	सूर्य	05/11/1999	चंद्र	06/02/2001
राहु	03/09/1995	शुक्र	18/05/1997	सूर्य	27/03/1998	चंद्र	09/02/2000	मंगल	08/03/2001
शुक्र	21/10/1995	सूर्य	21/06/1997	चंद्र	11/05/1998	मंगल	31/03/2000	बुध	11/05/2001

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल	
11/05/2001		21/06/2003		21/07/2007		20/09/2008		21/08/2011	
21/06/2003		21/07/2007		20/09/2008		21/08/2011		11/03/2013	
गुरु	24/09/2001	शुक्र	06/04/2004	सूर्य	14/08/2007	चंद्र	15/02/2009	मंगल	02/10/2011
राहु	18/12/2001	सूर्य	28/06/2004	चंद्र	12/10/2007	मंगल	04/05/2009	बुध	30/12/2011
शुक्र	17/05/2002	चंद्र	21/01/2005	मंगल	13/11/2007	बुध	19/10/2009	शनि	21/02/2012
सूर्य	29/06/2002	मंगल	11/05/2005	बुध	19/01/2008	शनि	26/01/2010	गुरु	31/05/2012
चंद्र	14/10/2002	बुध	01/01/2006	शनि	27/02/2008	गुरु	01/08/2010	राहु	02/08/2012
मंगल	10/12/2002	शनि	19/05/2006	गुरु	12/05/2008	राहु	28/11/2010	शुक्र	21/11/2012
बुध	11/04/2003	गुरु	06/02/2007	राहु	29/06/2008	शुक्र	23/06/2011	सूर्य	22/12/2012
शनि	21/06/2003	राहु	21/07/2007	शुक्र	20/09/2008	सूर्य	21/08/2011	चंद्र	11/03/2013

शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य	
11/03/2013		30/06/2016		11/06/2018		19/02/2022		20/06/2024	
30/06/2016		11/06/2018		19/02/2022		20/06/2024		20/10/2024	
बुध	17/09/2013	शनि	04/09/2016	गुरु	03/02/2019	राहु	25/05/2022	सूर्य	27/06/2024
शनि	07/01/2014	गुरु	07/01/2017	राहु	03/07/2019	शुक्र	06/11/2022	चंद्र	14/07/2024
गुरु	07/08/2014	राहु	27/03/2017	शुक्र	21/03/2020	सूर्य	24/12/2022	मंगल	23/07/2024
राहु	19/12/2014	शुक्र	12/08/2017	सूर्य	04/06/2020	चंद्र	21/04/2023	बुध	11/08/2024
शुक्र	11/08/2015	सूर्य	21/09/2017	चंद्र	09/12/2020	मंगल	23/06/2023	शनि	22/08/2024
सूर्य	17/10/2015	चंद्र	28/12/2017	मंगल	19/03/2021	बुध	04/11/2023	गुरु	13/09/2024
चंद्र	02/04/2016	मंगल	19/02/2018	बुध	17/10/2021	शनि	22/01/2024	राहु	26/09/2024
मंगल	30/06/2016	बुध	11/06/2018	शनि	19/02/2022	गुरु	20/06/2024	शुक्र	20/10/2024

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु	
20/10/2024		20/08/2025		30/01/2026		10/01/2027		01/08/2027	
20/08/2025		30/01/2026		10/01/2027		01/08/2027		20/08/2028	
चंद्र	01/12/2024	मंगल	01/09/2025	बुध	25/03/2026	शनि	28/01/2027	गुरु	07/10/2027
मंगल	24/12/2024	बुध	27/09/2025	शनि	26/04/2026	गुरु	05/03/2027	राहु	19/11/2027
बुध	10/02/2025	शनि	12/10/2025	गुरु	26/06/2026	राहु	28/03/2027	शुक्र	02/02/2028
शनि	10/03/2025	गुरु	10/11/2025	राहु	03/08/2026	शुक्र	06/05/2027	सूर्य	24/02/2028
गुरु	02/05/2025	राहु	28/11/2025	शुक्र	09/10/2026	सूर्य	17/05/2027	चंद्र	17/04/2028
राहु	05/06/2025	शुक्र	29/12/2025	सूर्य	28/10/2026	चंद्र	15/06/2027	मंगल	16/05/2028
शुक्र	03/08/2025	सूर्य	07/01/2026	चंद्र	15/12/2026	मंगल	30/06/2027	बुध	15/07/2028
सूर्य	20/08/2025	चंद्र	30/01/2026	मंगल	10/01/2027	बुध	01/08/2027	शनि	20/08/2028

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - बुध	
20/08/2028		21/04/2029		21/06/2030		21/07/2032		31/08/2033	
21/04/2029		21/06/2030		21/07/2032		31/08/2033		10/01/2036	
राहु	16/09/2028	शुक्र	12/07/2029	चंद्र	04/10/2030	मंगल	20/08/2032	बुध	13/01/2034
शुक्र	03/11/2028	सूर्य	05/08/2029	मंगल	30/11/2030	बुध	23/10/2032	शनि	03/04/2034
सूर्य	16/11/2028	चंद्र	03/10/2029	बुध	30/03/2031	शनि	29/11/2032	गुरु	02/09/2034
चंद्र	20/12/2028	मंगल	04/11/2029	शनि	08/06/2031	गुरु	09/02/2033	राहु	07/12/2034
मंगल	07/01/2029	बुध	10/01/2030	गुरु	20/10/2031	राहु	26/03/2033	शुक्र	23/05/2035
बुध	14/02/2029	शनि	18/02/2030	राहु	12/01/2032	शुक्र	13/06/2033	सूर्य	10/07/2035
शनि	09/03/2029	गुरु	04/05/2030	शुक्र	08/06/2032	सूर्य	05/07/2033	चंद्र	07/11/2035
गुरु	21/04/2029	राहु	21/06/2030	सूर्य	21/07/2032	चंद्र	31/08/2033	मंगल	10/01/2036

चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
10/01/2036		31/05/2037		20/01/2040		20/09/2041		20/08/2044	
31/05/2037		20/01/2040		20/09/2041		20/08/2044		21/06/2045	
शनि	26/02/2036	गुरु	17/11/2037	राहु	28/03/2040	शुक्र	15/04/2042	सूर्य	06/09/2044
गुरु	25/05/2036	राहु	04/03/2038	शुक्र	24/07/2040	सूर्य	13/06/2042	चंद्र	18/10/2044
राहु	21/07/2036	शुक्र	07/09/2038	सूर्य	27/08/2040	चंद्र	08/11/2042	मंगल	10/11/2044
शुक्र	27/10/2036	सूर्य	31/10/2038	चंद्र	19/11/2040	मंगल	26/01/2043	बुध	28/12/2044
सूर्य	24/11/2036	चंद्र	14/03/2039	मंगल	04/01/2041	बुध	13/07/2043	शनि	25/01/2045
चंद्र	03/02/2037	मंगल	24/05/2039	बुध	09/04/2041	शनि	19/10/2043	गुरु	20/03/2045
मंगल	12/03/2037	बुध	23/10/2039	शनि	05/06/2041	गुरु	24/04/2044	राहु	22/04/2045
बुध	31/05/2037	शनि	20/01/2040	गुरु	20/09/2041	राहु	20/08/2044	शुक्र	21/06/2045

मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु		मंगल - राहु	
21/06/2045		23/01/2046		28/04/2047		23/01/2048		21/06/2049	
23/01/2046		28/04/2047		23/01/2048		21/06/2049		11/05/2050	
मंगल	07/07/2045	बुध	05/04/2046	शनि	23/05/2047	गुरु	23/04/2048	राहु	27/07/2049
बुध	10/08/2045	शनि	18/05/2046	गुरु	10/07/2047	राहु	19/06/2048	शुक्र	28/09/2049
शनि	30/08/2045	गुरु	07/08/2046	राहु	09/08/2047	शुक्र	27/09/2048	सूर्य	16/10/2049
गुरु	07/10/2045	राहु	27/09/2046	शुक्र	30/09/2047	सूर्य	26/10/2048	चंद्र	30/11/2049
राहु	31/10/2045	शुक्र	25/12/2046	सूर्य	15/10/2047	चंद्र	05/01/2049	मंगल	24/12/2049
शुक्र	12/12/2045	सूर्य	20/01/2047	चंद्र	22/11/2047	मंगल	12/02/2049	बुध	13/02/2050
सूर्य	24/12/2045	चंद्र	25/03/2047	मंगल	12/12/2047	बुध	04/05/2049	शनि	15/03/2050
चंद्र	23/01/2046	मंगल	28/04/2047	बुध	23/01/2048	शनि	21/06/2049	गुरु	11/05/2050

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध		बुध - शनि	
11/05/2050		30/11/2051		11/05/2052		21/06/2053		23/02/2056	
30/11/2051		11/05/2052		21/06/2053		23/02/2056		20/09/2057	
शुक्र	30/08/2050	सूर्य	09/12/2051	चंद्र	06/07/2052	बुध	21/11/2053	शनि	16/04/2056
सूर्य	30/09/2050	चंद्र	01/01/2052	मंगल	05/08/2052	शनि	20/02/2054	गुरु	26/07/2056
चंद्र	18/12/2050	मंगल	13/01/2052	बुध	08/10/2052	गुरु	11/08/2054	राहु	28/09/2056
मंगल	29/01/2051	बुध	07/02/2052	शनि	15/11/2052	राहु	27/11/2054	शुक्र	18/01/2057
बुध	29/04/2051	शनि	23/02/2052	गुरु	25/01/2053	शुक्र	05/06/2055	सूर्य	19/02/2057
शनि	20/06/2051	गुरु	22/03/2052	राहु	11/03/2053	सूर्य	30/07/2055	चंद्र	10/05/2057
गुरु	28/09/2051	राहु	09/04/2052	शुक्र	29/05/2053	चंद्र	12/12/2055	मंगल	21/06/2057
राहु	30/11/2051	शुक्र	11/05/2052	सूर्य	21/06/2053	मंगल	23/02/2056	बुध	20/09/2057

बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
20/09/2057		16/09/2060		07/08/2062		26/11/2065		06/11/2066	
16/09/2060		07/08/2062		26/11/2065		06/11/2066		18/03/2069	
गुरु	31/03/2058	राहु	02/12/2060	शुक्र	30/03/2063	सूर्य	16/12/2065	चंद्र	06/03/2067
राहु	30/07/2058	शुक्र	15/04/2061	सूर्य	05/06/2063	चंद्र	02/02/2066	मंगल	09/05/2067
शुक्र	28/02/2059	सूर्य	23/05/2061	चंद्र	20/11/2063	मंगल	27/02/2066	बुध	22/09/2067
सूर्य	29/04/2059	चंद्र	27/08/2061	मंगल	17/02/2064	बुध	22/04/2066	शनि	11/12/2067
चंद्र	28/09/2059	मंगल	17/10/2061	बुध	25/08/2064	शनि	24/05/2066	गुरु	10/05/2068
मंगल	18/12/2059	बुध	03/02/2062	शनि	15/12/2064	गुरु	24/07/2066	राहु	14/08/2068
बुध	07/06/2060	शनि	08/04/2062	गुरु	15/07/2065	राहु	31/08/2066	शुक्र	29/01/2069
शनि	16/09/2060	गुरु	07/08/2062	राहु	26/11/2065	शुक्र	06/11/2066	सूर्य	18/03/2069

बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु		शनि - शुक्र	
18/03/2069		21/06/2070		25/05/2071		26/02/2073		07/04/2074	
21/06/2070		25/05/2071		26/02/2073		07/04/2074		18/03/2076	
मंगल	21/04/2069	शनि	22/07/2070	गुरु	15/09/2071	राहु	12/04/2073	शुक्र	23/08/2074
बुध	02/07/2069	गुरु	20/09/2070	राहु	25/11/2071	शुक्र	30/06/2073	सूर्य	02/10/2074
शनि	14/08/2069	राहु	27/10/2070	शुक्र	29/03/2072	सूर्य	22/07/2073	चंद्र	09/01/2075
गुरु	03/11/2069	शुक्र	01/01/2071	सूर्य	04/05/2072	चंद्र	16/09/2073	मंगल	02/03/2075
राहु	24/12/2069	सूर्य	20/01/2071	चंद्र	01/08/2072	मंगल	16/10/2073	बुध	22/06/2075
शुक्र	23/03/2070	चंद्र	08/03/2071	मंगल	18/09/2072	बुध	19/12/2073	शनि	27/08/2075
सूर्य	18/04/2070	मंगल	02/04/2071	बुध	28/12/2072	शनि	26/01/2074	गुरु	30/12/2075
चंद्र	21/06/2070	बुध	25/05/2071	शनि	26/02/2073	गुरु	07/04/2074	राहु	18/03/2076

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : पिंगला 0 वर्ष 11 मास 21 दिन

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
17/09/1975		08/09/1976		09/09/1979		09/09/1983		08/09/1988	
08/09/1976		09/09/1979		09/09/1983		08/09/1988		08/09/1994	
00/00/0000	धांय	08/12/1976	भ्राम	18/02/1980	भद्रि	19/05/1984	उल्क	08/09/1989
00/00/0000	भ्राम	09/04/1977	भद्रि	08/09/1980	उल्क	20/03/1985	सिद्ध	08/11/1990
00/00/0000	भद्रि	08/09/1977	उल्क	09/05/1981	सिद्ध	10/03/1986	संक	09/03/1992
17/09/1975	उल्क	10/03/1978	सिद्ध	18/02/1982	संक	20/04/1987	मंग	09/05/1992
उल्क 19/10/1975	सिद्ध	09/10/1978	संक	08/01/1983	मंग	09/06/1987	पिंग	08/09/1992
सिद्ध 09/03/1976	संक	09/06/1979	मंग	18/02/1983	पिंग	19/09/1987	धांय	10/03/1993
संक 19/08/1976	मंग	10/07/1979	पिंग	10/05/1983	धांय	18/02/1988	भ्राम	08/11/1993
मंग 08/09/1976	पिंग	09/09/1979	धांय	09/09/1983	भ्राम	08/09/1988	भद्रि	08/09/1994

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
08/09/1994		08/09/2001		08/09/2009		08/09/2010		08/09/2012	
08/09/2001		08/09/2009		08/09/2010		08/09/2012		09/09/2015	
सिद्ध 19/01/1996	संक	20/06/2003	मंग	18/09/2009	पिंग	19/10/2010	धांय	08/12/2012
संक 09/08/1997	मंग	09/09/2003	पिंग	09/10/2009	धांय	19/12/2010	भ्राम	09/04/2013
मंग 19/10/1997	पिंग	18/02/2004	धांय	08/11/2009	भ्राम	10/03/2011	भद्रि	08/09/2013
पिंग 10/03/1998	धांय	19/10/2004	भ्राम	19/12/2009	भद्रि	20/06/2011	उल्क	10/03/2014
धांय 09/10/1998	भ्राम	08/09/2005	भद्रि	07/02/2010	उल्क	19/10/2011	सिद्ध	09/10/2014
भ्राम 20/07/1999	भद्रि	19/10/2006	उल्क	09/04/2010	सिद्ध	09/03/2012	संक	09/06/2015
भद्रि 09/07/2000	उल्क	18/02/2008	सिद्ध	19/06/2010	संक	19/08/2012	मंग	10/07/2015
उल्क 08/09/2001	सिद्ध	08/09/2009	संक	08/09/2010	मंग	08/09/2012	पिंग	09/09/2015

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
09/09/2015		09/09/2019		08/09/2024		08/09/2030		08/09/2037	
09/09/2019		08/09/2024		08/09/2030		08/09/2037		08/09/2045	
भ्राम	18/02/2016	भद्रि	19/05/2020	उल्क	08/09/2025	सिद्ध	19/01/2032	संक	20/06/2039
भद्रि	08/09/2016	उल्क	20/03/2021	सिद्ध	08/11/2026	संक	09/08/2033	मंग	09/09/2039
उल्क	09/05/2017	सिद्ध	10/03/2022	संक	09/03/2028	मंग	19/10/2033	पिंग	18/02/2040
सिद्ध	18/02/2018	संक	20/04/2023	मंग	09/05/2028	पिंग	10/03/2034	धांय	19/10/2040
संक	08/01/2019	मंग	09/06/2023	पिंग	08/09/2028	धांय	09/10/2034	भ्राम	08/09/2041
मंग	18/02/2019	पिंग	19/09/2023	धांय	10/03/2029	भ्राम	20/07/2035	भद्रि	19/10/2042
पिंग	10/05/2019	धांय	18/02/2024	भ्राम	08/11/2029	भद्रि	09/07/2036	उल्क	18/02/2044
धांय	09/09/2019	भ्राम	08/09/2024	भद्रि	08/09/2030	उल्क	08/09/2037	सिद्ध	08/09/2045

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
08/09/2045		08/09/2046		08/09/2048		09/09/2051		09/09/2055	
08/09/2046		08/09/2048		09/09/2051		09/09/2055		08/09/2060	
मंग	18/09/2045	पिंग	19/10/2046	धांय	08/12/2048	भ्राम	18/02/2052	भद्रि	19/05/2056
पिंग	09/10/2045	धांय	19/12/2046	भ्राम	09/04/2049	भद्रि	08/09/2052	उल्क	20/03/2057
धांय	08/11/2045	भ्राम	10/03/2047	भद्रि	08/09/2049	उल्क	09/05/2053	सिद्ध	10/03/2058
भ्राम	19/12/2045	भद्रि	20/06/2047	उल्क	10/03/2050	सिद्ध	18/02/2054	संक	20/04/2059
भद्रि	07/02/2046	उल्क	19/10/2047	सिद्ध	09/10/2050	संक	08/01/2055	मंग	09/06/2059
उल्क	09/04/2046	सिद्ध	09/03/2048	संक	09/06/2051	मंग	18/02/2055	पिंग	19/09/2059
सिद्ध	19/06/2046	संक	19/08/2048	मंग	10/07/2051	पिंग	10/05/2055	धांय	18/02/2060
संक	08/09/2046	मंग	08/09/2048	पिंग	09/09/2051	धांय	09/09/2055	भ्राम	08/09/2060

उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष	
08/09/2060		08/09/2066		08/09/2073		08/09/2081		08/09/2082	
08/09/2066		08/09/2073		08/09/2081		08/09/2082		00/00/0000	
उल्क	08/09/2061	सिद्ध	19/01/2068	संक	20/06/2075	मंग	18/09/2081	पिंग	19/10/2082
सिद्ध	08/11/2062	संक	09/08/2069	मंग	09/09/2075	पिंग	09/10/2081	धांय	19/12/2082
संक	09/03/2064	मंग	19/10/2069	पिंग	18/02/2076	धांय	08/11/2081	भ्राम	10/03/2083
मंग	09/05/2064	पिंग	10/03/2070	धांय	19/10/2076	भ्राम	19/12/2081	भद्रि	20/06/2083
पिंग	08/09/2064	धांय	09/10/2070	भ्राम	08/09/2077	भद्रि	07/02/2082	उल्क	17/09/2083
धांय	10/03/2065	भ्राम	20/07/2071	भद्रि	19/10/2078	उल्क	09/04/2082		00/00/0000
भ्राम	08/11/2065	भद्रि	09/07/2072	उल्क	18/02/2080	सिद्ध	19/06/2082		00/00/0000
भद्रि	08/09/2066	उल्क	08/09/2073	सिद्ध	08/09/2081	संक	08/09/2082		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - सिद्ध		उल्क - संक		उल्क - मंग		उल्क - पिंग		उल्क - धांय	
08/09/2025		08/11/2026		09/03/2028		09/05/2028		08/09/2028	
08/11/2026		09/03/2028		09/05/2028		08/09/2028		10/03/2029	
सिद्ध	30/11/2025	संक	25/02/2027	मंग	11/03/2028	पिंग	16/05/2028	धांय	23/09/2028
संक	05/03/2026	मंग	10/03/2027	पिंग	14/03/2028	धांय	26/05/2028	भ्राम	13/10/2028
मंग	17/03/2026	पिंग	06/04/2027	धांय	20/03/2028	भ्राम	09/06/2028	भद्रि	08/11/2028
पिंग	09/04/2026	धांय	17/05/2027	भ्राम	26/03/2028	भद्रि	26/06/2028	उल्क	08/12/2028
धांय	15/05/2026	भ्राम	10/07/2027	भद्रि	04/04/2028	उल्क	16/07/2028	सिद्ध	13/01/2029
भ्राम	01/07/2026	भद्रि	15/09/2027	उल्क	14/04/2028	सिद्ध	09/08/2028	संक	22/02/2029
भद्रि	29/08/2026	उल्क	06/12/2027	सिद्ध	26/04/2028	संक	05/09/2028	मंग	27/02/2029
उल्क	08/11/2026	सिद्ध	09/03/2028	संक	09/05/2028	मंग	08/09/2028	पिंग	10/03/2029

उल्क - भ्राम		उल्क - भद्रि		सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग	
10/03/2029		08/11/2029		08/09/2030		19/01/2032		09/08/2033	
08/11/2029		08/09/2030		19/01/2032		09/08/2033		19/10/2033	
भ्राम	06/04/2029	भद्रि	20/12/2029	सिद्ध	14/12/2030	संक	24/05/2032	मंग	11/08/2033
भद्रि	09/05/2029	उल्क	09/02/2030	संक	04/04/2031	मंग	09/06/2032	पिंग	15/08/2033
उल्क	19/06/2029	सिद्ध	09/04/2030	मंग	17/04/2031	पिंग	10/07/2032	धांय	21/08/2033
सिद्ध	05/08/2029	संक	16/06/2030	पिंग	15/05/2031	धांय	27/08/2032	भ्राम	29/08/2033
संक	29/09/2029	मंग	24/06/2030	धांय	25/06/2031	भ्राम	29/10/2032	भद्रि	07/09/2033
मंग	05/10/2029	पिंग	11/07/2030	भ्राम	20/08/2031	भद्रि	16/01/2033	उल्क	19/09/2033
पिंग	19/10/2029	धांय	06/08/2030	भद्रि	28/10/2031	उल्क	20/04/2033	सिद्ध	03/10/2033
धांय	08/11/2029	भ्राम	08/09/2030	उल्क	19/01/2032	सिद्ध	09/08/2033	संक	19/10/2033

सिद्ध - पिंग		सिद्ध - धांय		सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क	
19/10/2033		10/03/2034		09/10/2034		20/07/2035		09/07/2036	
10/03/2034		09/10/2034		20/07/2035		09/07/2036		08/09/2037	
पिंग	27/10/2033	धांय	28/03/2034	भ्राम	09/11/2034	भद्रि	07/09/2035	उल्क	18/09/2036
धांय	08/11/2033	भ्राम	20/04/2034	भद्रि	19/12/2034	उल्क	06/11/2035	सिद्ध	10/12/2036
भ्राम	23/11/2033	भद्रि	20/05/2034	उल्क	04/02/2035	सिद्ध	14/01/2036	संक	15/03/2037
भद्रि	13/12/2033	उल्क	24/06/2034	सिद्ध	01/04/2035	संक	01/04/2036	मंग	27/03/2037
उल्क	06/01/2034	सिद्ध	05/08/2034	संक	03/06/2035	मंग	11/04/2036	पिंग	19/04/2037
सिद्ध	02/02/2034	संक	21/09/2034	मंग	11/06/2035	पिंग	01/05/2036	धांय	25/05/2037
संक	06/03/2034	मंग	27/09/2034	पिंग	26/06/2035	धांय	31/05/2036	भ्राम	11/07/2037
मंग	10/03/2034	पिंग	09/10/2034	धांय	20/07/2035	भ्राम	09/07/2036	भद्रि	08/09/2037

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - संक		संक - मंग		संक - पिंग		संक - धांय		संक - भ्राम	
08/09/2037		20/06/2039		09/09/2039		18/02/2040		19/10/2040	
20/06/2039		09/09/2039		18/02/2040		19/10/2040		08/09/2041	
संक	31/01/2038	मंग	22/06/2039	पिंग	18/09/2039	धांय	09/03/2040	भ्राम	24/11/2040
मंग	18/02/2038	पिंग	26/06/2039	धांय	01/10/2039	भ्राम	05/04/2040	भद्रि	08/01/2041
पिंग	26/03/2038	धांय	03/07/2039	भ्राम	19/10/2039	भद्रि	09/05/2040	उल्क	03/03/2041
धांय	19/05/2038	भ्राम	12/07/2039	भद्रि	11/11/2039	उल्क	19/06/2040	सिद्ध	05/05/2041
भ्राम	30/07/2038	भद्रि	23/07/2039	उल्क	08/12/2039	सिद्ध	05/08/2040	संक	16/07/2041
भद्रि	28/10/2038	उल्क	06/08/2039	सिद्ध	08/01/2040	संक	28/09/2040	मंग	25/07/2041
उल्क	13/02/2039	सिद्ध	22/08/2039	संक	14/02/2040	मंग	05/10/2040	पिंग	12/08/2041
सिद्ध	20/06/2039	संक	09/09/2039	मंग	18/02/2040	पिंग	19/10/2040	धांय	08/09/2041

संक - भद्रि		संक - उल्क		संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग	
08/09/2041		19/10/2042		18/02/2044		08/09/2045		18/09/2045	
19/10/2042		18/02/2044		08/09/2045		18/09/2045		09/10/2045	
भद्रि	04/11/2041	उल्क	08/01/2043	सिद्ध	08/06/2044	मंग	09/09/2045	पिंग	20/09/2045
उल्क	10/01/2042	सिद्ध	13/04/2043	संक	12/10/2044	पिंग	09/09/2045	धांय	21/09/2045
सिद्ध	30/03/2042	संक	30/07/2043	मंग	28/10/2044	धांय	10/09/2045	भ्राम	23/09/2045
संक	28/06/2042	मंग	13/08/2043	पिंग	28/11/2044	भ्राम	11/09/2045	भद्रि	26/09/2045
मंग	10/07/2042	पिंग	09/09/2043	धांय	14/01/2045	भद्रि	12/09/2045	उल्क	30/09/2045
पिंग	01/08/2042	धांय	19/10/2043	भ्राम	19/03/2045	उल्क	14/09/2045	सिद्ध	04/10/2045
धांय	04/09/2042	भ्राम	12/12/2043	भद्रि	06/06/2045	सिद्ध	16/09/2045	संक	08/10/2045
भ्राम	19/10/2042	भद्रि	18/02/2044	उल्क	08/09/2045	संक	18/09/2045	मंग	09/10/2045

मंग - धांय		मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध	
09/10/2045		08/11/2045		19/12/2045		07/02/2046		09/04/2046	
08/11/2045		19/12/2045		07/02/2046		09/04/2046		19/06/2046	
धांय	11/10/2045	भ्राम	13/11/2045	भद्रि	26/12/2045	उल्क	18/02/2046	सिद्ध	23/04/2046
भ्राम	15/10/2045	भद्रि	18/11/2045	उल्क	03/01/2046	सिद्ध	01/03/2046	संक	09/05/2046
भद्रि	19/10/2045	उल्क	25/11/2045	सिद्ध	13/01/2046	संक	15/03/2046	मंग	11/05/2046
उल्क	24/10/2045	सिद्ध	03/12/2045	संक	24/01/2046	मंग	17/03/2046	पिंग	15/05/2046
सिद्ध	30/10/2045	संक	12/12/2045	मंग	26/01/2046	पिंग	20/03/2046	धांय	21/05/2046
संक	06/11/2045	मंग	13/12/2045	पिंग	29/01/2046	धांय	25/03/2046	भ्राम	29/05/2046
मंग	06/11/2045	पिंग	15/12/2045	धांय	02/02/2046	भ्राम	01/04/2046	भद्रि	07/06/2046
पिंग	08/11/2045	धांय	19/12/2045	भ्राम	07/02/2046	भद्रि	09/04/2046	उल्क	19/06/2046

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : मिथुन 4 वर्ष 11 मास 12 दिन
कुल दशाकाल : 85 वर्ष
तिथि : धनिष्ठा - 3 अपसव्य
देह : कुम्भ जीव : कन्या

मिथुन 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		तुला 16 वर्ष	
17/09/1975		30/08/1980		30/08/1985		30/08/2006		31/08/2015	
30/08/1980		30/08/1985		30/08/2006		31/08/2015		31/08/2031	
00/00/0000	सिंह	15/12/1980	कर्क	07/11/1990	कन्या	13/08/2007	तुला	04/09/2018	
00/00/0000	कर्क	11/03/1982	कन्या	27/01/1993	तुला	23/04/2009	वृश्चि	29/12/2019	
17/09/1975	कन्या	21/09/1982	तुला	10/01/1997	वृश्चि	19/01/2010	मीन	15/11/2021	
कन्या 27/04/1976	तुला	31/08/1983	वृश्चि	04/10/1998	मीन	10/02/2011	कुंभ	17/08/2022	
तुला 06/01/1978	वृश्चि	28/01/1984	मीन	24/03/2001	कुंभ	14/07/2011	मक	19/05/2023	
वृश्चि 04/10/1978	मीन	30/08/1984	कुंभ	20/03/2002	मक	16/12/2011	मिथु	27/01/2025	
मीन 25/10/1979	कुंभ	24/11/1984	मक	16/03/2003	मिथु	28/11/2012	सिंह	06/01/2026	
कुंभ 28/03/1980	मक	18/02/1985	मिथु	05/06/2005	सिंह	09/06/2013	कर्क	20/12/2029	
मक 30/08/1980	मिथु	30/08/1985	सिंह	30/08/2006	कर्क	31/08/2015	कन्या	31/08/2031	

वृश्चिक 7 वर्ष		मीन 10 वर्ष		कुम्भ 4 वर्ष		मकर 4 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष	
31/08/2031		30/08/2038		30/08/2048		30/08/2052		30/08/2056	
30/08/2038		30/08/2048		30/08/2052		30/08/2056		00/00/0000	
वृश्चि 28/03/2032	मीन	03/11/2039	कुंभ	07/11/2048	मक	07/11/2052	मिथु	13/08/2057	
मीन 23/01/2033	कुंभ	23/04/2040	मक	14/01/2049	मिथु	10/04/2053	सिंह	22/02/2058	
कुंभ 23/05/2033	मक	12/10/2040	मिथु	18/06/2049	सिंह	05/07/2053	कर्क	14/05/2060	
मक 20/09/2033	मिथु	02/11/2041	सिंह	12/09/2049	कर्क	01/07/2054	कन्या	17/09/2060	
मिथु 18/06/2034	सिंह	05/06/2042	कर्क	08/09/2050	कन्या	03/12/2054		00/00/0000	
सिंह 16/11/2034	कर्क	24/11/2044	कन्या	10/02/2051	तुला	04/09/2055		00/00/0000	
कर्क 08/08/2036	कन्या	15/12/2045	तुला	12/11/2051	वृश्चि	02/01/2056		00/00/0000	
कन्या 06/05/2037	तुला	03/11/2047	वृश्चि	11/03/2052	मीन	22/06/2056		00/00/0000	
तुला 30/08/2038	वृश्चि	30/08/2048	मीन	30/08/2052	कुंभ	30/08/2056		00/00/0000	

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

तुला - कर्क		तुला - कन्या		वृश्चि - वृश्चि		वृश्चि - मीन		वृश्चि - कुंभ	
06/01/2026		20/12/2029		31/08/2031		28/03/2032		23/01/2033	
20/12/2029		31/08/2031		28/03/2032		23/01/2033		23/05/2033	
कर्क	29/12/2026	कन्या	23/02/2030	वृश्चि	17/09/2031	मीन	02/05/2032	कुंभ	29/01/2033
कन्या	30/05/2027	तुला	20/06/2030	मीन	12/10/2031	कुंभ	17/05/2032	मक	03/02/2033
तुला	26/02/2028	वृश्चि	10/08/2030	कुंभ	22/10/2031	मक	31/05/2032	मिथु	16/02/2033
वृश्चि	24/06/2028	मीन	21/10/2030	मक	31/10/2031	मिथु	02/07/2032	सिंह	23/02/2033
मीन	11/12/2028	कुंभ	20/11/2030	मिथु	23/11/2031	सिंह	19/07/2032	कर्क	25/03/2033
कुंभ	17/02/2029	मक	19/12/2030	सिंह	05/12/2031	कर्क	02/10/2032	कन्या	06/04/2033
मक	26/04/2029	मिथु	22/02/2031	कर्क	26/01/2032	कन्या	02/11/2032	तुला	29/04/2033
मिथु	26/09/2029	सिंह	31/03/2031	कन्या	17/02/2032	तुला	29/12/2032	वृश्चि	09/05/2033
सिंह	20/12/2029	कर्क	31/08/2031	तुला	28/03/2032	वृश्चि	23/01/2033	मीन	23/05/2033

वृश्चि - मक		वृश्चि - मिथु		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कर्क		वृश्चि - कन्या	
23/05/2033		20/09/2033		18/06/2034		16/11/2034		08/08/2036	
20/09/2033		18/06/2034		16/11/2034		08/08/2036		06/05/2037	
मक	29/05/2033	मिथु	19/10/2033	सिंह	27/06/2034	कर्क	21/04/2035	कन्या	06/09/2036
मिथु	11/06/2033	सिंह	04/11/2033	कर्क	03/08/2034	कन्या	27/06/2035	तुला	27/10/2036
सिंह	18/06/2033	कर्क	10/01/2034	कन्या	19/08/2034	तुला	23/10/2035	वृश्चि	18/11/2036
कर्क	17/07/2033	कन्या	08/02/2034	तुला	16/09/2034	वृश्चि	14/12/2035	मीन	20/12/2036
कन्या	30/07/2033	तुला	31/03/2034	वृश्चि	29/09/2034	मीन	27/02/2036	कुंभ	02/01/2037
तुला	22/08/2033	वृश्चि	22/04/2034	मीन	17/10/2034	कुंभ	28/03/2036	मक	15/01/2037
वृश्चि	01/09/2033	मीन	24/05/2034	कुंभ	24/10/2034	मक	26/04/2036	मिथु	12/02/2037
मीन	15/09/2033	कुंभ	05/06/2034	मक	31/10/2034	मिथु	02/07/2036	सिंह	28/02/2037
कुंभ	20/09/2033	मक	18/06/2034	मिथु	16/11/2034	सिंह	08/08/2036	कर्क	06/05/2037

वृश्चि - तुला		मीन - मीन		मीन - कुंभ		मीन - मक		मीन - मिथु	
06/05/2037		30/08/2038		03/11/2039		23/04/2040		12/10/2040	
30/08/2038		03/11/2039		23/04/2040		12/10/2040		02/11/2041	
तुला	05/08/2037	मीन	20/10/2038	कुंभ	11/11/2039	मक	01/05/2040	मिथु	22/11/2040
वृश्चि	13/09/2037	कुंभ	09/11/2038	मक	19/11/2039	मिथु	19/05/2040	सिंह	14/12/2040
मीन	09/11/2037	मक	29/11/2038	मिथु	07/12/2039	सिंह	29/05/2040	कर्क	20/03/2041
कुंभ	01/12/2037	मिथु	14/01/2039	सिंह	17/12/2039	कर्क	11/07/2040	कन्या	30/04/2041
मक	24/12/2037	सिंह	08/02/2039	कर्क	29/01/2040	कन्या	29/07/2040	तुला	12/07/2041
मिथु	13/02/2038	कर्क	25/05/2039	कन्या	16/02/2040	तुला	30/08/2040	वृश्चि	13/08/2041
सिंह	13/03/2038	कन्या	10/07/2039	तुला	19/03/2040	वृश्चि	13/09/2040	मीन	27/09/2041
कर्क	10/07/2038	तुला	29/09/2039	वृश्चि	03/04/2040	मीन	04/10/2040	कुंभ	15/10/2041
कन्या	30/08/2038	वृश्चि	03/11/2039	मीन	23/04/2040	कुंभ	12/10/2040	मक	02/11/2041

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मीन - सिंह		मीन - कर्क		मीन - कन्या		मीन - तुला		मीन - वृश्चि	
02/11/2041		05/06/2042		24/11/2044		15/12/2045		03/11/2047	
05/06/2042		24/11/2044		15/12/2045		03/11/2047		30/08/2048	
सिंह	15/11/2041	कर्क	14/01/2043	कन्या	04/01/2045	तुला	24/04/2046	वृश्चि	28/11/2047
कर्क	07/01/2042	कन्या	20/04/2043	तुला	17/03/2045	वृश्चि	19/06/2046	मीन	02/01/2048
कन्या	30/01/2042	तुला	07/10/2043	वृश्चि	18/04/2045	मीन	08/09/2046	कुंभ	16/01/2048
तुला	11/03/2042	वृश्चि	20/12/2043	मीन	03/06/2045	कुंभ	11/10/2046	मक	30/01/2048
वृश्चि	29/03/2042	मीन	04/04/2044	कुंभ	21/06/2045	मक	12/11/2046	मिथु	02/03/2048
मीन	23/04/2042	कुंभ	17/05/2044	मक	09/07/2045	मिथु	24/01/2047	सिंह	20/03/2048
कुंभ	03/05/2042	मक	28/06/2044	मिथु	19/08/2045	सिंह	05/03/2047	कर्क	02/06/2048
मक	14/05/2042	मिथु	02/10/2044	सिंह	11/09/2045	कर्क	22/08/2047	कन्या	04/07/2048
मिथु	05/06/2042	सिंह	24/11/2044	कर्क	15/12/2045	कन्या	03/11/2047	तुला	30/08/2048

कुंभ - कुंभ		कुंभ - मक		कुंभ - मिथु		कुंभ - सिंह		कुंभ - कर्क	
30/08/2048		07/11/2048		14/01/2049		18/06/2049		12/09/2049	
07/11/2048		14/01/2049		18/06/2049		12/09/2049		08/09/2050	
कुंभ	02/09/2048	मक	10/11/2048	मिथु	31/01/2049	सिंह	23/06/2049	कर्क	10/12/2049
मक	05/09/2048	मिथु	17/11/2048	सिंह	09/02/2049	कर्क	14/07/2049	कन्या	17/01/2050
मिथु	13/09/2048	सिंह	21/11/2048	कर्क	19/03/2049	कन्या	23/07/2049	तुला	26/03/2050
सिंह	17/09/2048	कर्क	08/12/2048	कन्या	04/04/2049	तुला	09/08/2049	वृश्चि	25/04/2050
कर्क	04/10/2048	कन्या	15/12/2048	तुला	03/05/2049	वृश्चि	16/08/2049	मीन	06/06/2050
कन्या	11/10/2048	तुला	28/12/2048	वृश्चि	16/05/2049	मीन	26/08/2049	कुंभ	23/06/2050
तुला	24/10/2048	वृश्चि	03/01/2049	मीन	03/06/2049	कुंभ	30/08/2049	मक	10/07/2050
वृश्चि	29/10/2048	मीन	11/01/2049	कुंभ	11/06/2049	मक	03/09/2049	मिथु	18/08/2050
मीन	07/11/2048	कुंभ	14/01/2049	मक	18/06/2049	मिथु	12/09/2049	सिंह	08/09/2050

कुंभ - कन्या		कुंभ - तुला		कुंभ - वृश्चि		कुंभ - मीन		मक - मक	
08/09/2050		10/02/2051		12/11/2051		11/03/2052		30/08/2052	
10/02/2051		12/11/2051		11/03/2052		30/08/2052		07/11/2052	
कन्या	24/09/2050	तुला	02/04/2051	वृश्चि	21/11/2051	मीन	31/03/2052	मक	02/09/2052
तुला	23/10/2050	वृश्चि	25/04/2051	मीन	06/12/2051	कुंभ	08/04/2052	मिथु	09/09/2052
वृश्चि	05/11/2050	मीन	27/05/2051	कुंभ	11/12/2051	मक	16/04/2052	सिंह	13/09/2052
मीन	23/11/2050	कुंभ	09/06/2051	मक	17/12/2051	मिथु	04/05/2052	कर्क	30/09/2052
कुंभ	01/12/2050	मक	22/06/2051	मिथु	30/12/2051	सिंह	15/05/2052	कन्या	08/10/2052
मक	08/12/2050	मिथु	21/07/2051	सिंह	06/01/2052	कर्क	26/06/2052	तुला	21/10/2052
मिथु	24/12/2050	सिंह	06/08/2051	कर्क	04/02/2052	कन्या	14/07/2052	वृश्चि	26/10/2052
सिंह	02/01/2051	कर्क	13/10/2051	कन्या	17/02/2052	तुला	16/08/2052	मीन	03/11/2052
कर्क	10/02/2051	कन्या	12/11/2051	तुला	11/03/2052	वृश्चि	30/08/2052	कुंभ	07/11/2052

चर दशा

भोग्य दशा काल : वृष 3 वर्ष 0 मास 0 दिन

वृष 3 वर्ष	
17/09/1975	
17/09/1978	
मेष	18/12/1975
मीन	18/03/1976
कुंभ	17/06/1976
मक	17/09/1976
धनु	17/12/1976
वृश्चि	18/03/1977
तुला	18/06/1977
कन्या	17/09/1977
सिंह	17/12/1977
कर्क	19/03/1978
मिथु	18/06/1978
वृष	17/09/1978

मेष 1 वर्ष	
17/09/1978	
17/09/1979	
वृष	18/10/1978
मिथु	17/11/1978
कर्क	17/12/1978
सिंह	17/01/1979
कन्या	16/02/1979
तुला	19/03/1979
वृश्चि	18/04/1979
धनु	19/05/1979
मक	18/06/1979
कुंभ	19/07/1979
मीन	18/08/1979
मेष	17/09/1979

मीन 12 वर्ष	
17/09/1979	
17/09/1991	
मेष	17/09/1980
वृष	17/09/1981
मिथु	17/09/1982
कर्क	17/09/1983
सिंह	17/09/1984
कन्या	17/09/1985
तुला	17/09/1986
वृश्चि	17/09/1987
धनु	17/09/1988
मक	17/09/1989
कुंभ	17/09/1990
मीन	17/09/1991

कुम्भ 7 वर्ष	
17/09/1991	
17/09/1998	
मीन	17/04/1992
मेष	17/11/1992
वृष	18/06/1993
मिथु	17/01/1994
कर्क	18/08/1994
सिंह	19/03/1995
कन्या	18/10/1995
तुला	18/05/1996
वृश्चि	17/12/1996
धनु	18/07/1997
मक	16/02/1998
कुंभ	17/09/1998

मकर 6 वर्ष	
17/09/1998	
17/09/2004	
धनु	19/03/1999
वृश्चि	17/09/1999
तुला	18/03/2000
कन्या	17/09/2000
सिंह	18/03/2001
कर्क	17/09/2001
मिथु	19/03/2002
वृष	17/09/2002
मेष	19/03/2003
मीन	17/09/2003
कुंभ	18/03/2004
मक	17/09/2004

धनु 3 वर्ष	
17/09/2004	
17/09/2007	
वृश्चि	17/12/2004
तुला	18/03/2005
कन्या	18/06/2005
सिंह	17/09/2005
कर्क	17/12/2005
मिथु	19/03/2006
वृष	18/06/2006
मेष	17/09/2006
मीन	17/12/2006
कुंभ	19/03/2007
मक	18/06/2007
धनु	17/09/2007

वृश्चिक 6 वर्ष	
17/09/2007	
17/09/2013	
तुला	18/03/2008
कन्या	17/09/2008
सिंह	18/03/2009
कर्क	17/09/2009
मिथु	19/03/2010
वृष	17/09/2010
मेष	19/03/2011
मीन	17/09/2011
कुंभ	18/03/2012
मक	17/09/2012
धनु	18/03/2013
वृश्चि	17/09/2013

तुला 10 वर्ष	
17/09/2013	
17/09/2023	
वृश्चि	18/07/2014
धनु	19/05/2015
मक	18/03/2016
कुंभ	16/01/2017
मीन	17/11/2017
मेष	17/09/2018
वृष	19/07/2019
मिथु	18/05/2020
कर्क	18/03/2021
सिंह	17/01/2022
कन्या	17/11/2022
तुला	17/09/2023

कन्या 12 वर्ष	
17/09/2023	
17/09/2035	
तुला	17/09/2024
वृश्चि	17/09/2025
धनु	17/09/2026
मक	17/09/2027
कुंभ	17/09/2028
मीन	17/09/2029
मेष	17/09/2030
वृष	17/09/2031
मिथु	17/09/2032
कर्क	17/09/2033
सिंह	17/09/2034
कन्या	17/09/2035

सिंह 11 वर्ष	
17/09/2035	
17/09/2046	
कन्या	17/08/2036
तुला	18/07/2037
वृश्चि	18/06/2038
धनु	19/05/2039
मक	17/04/2040
कुंभ	18/03/2041
मीन	16/02/2042
मेष	17/01/2043
वृष	18/12/2043
मिथु	17/11/2044
कर्क	17/10/2045
सिंह	17/09/2046

कर्क 5 वर्ष	
17/09/2046	
17/09/2051	
मिथु	16/02/2047
वृष	19/07/2047
मेष	18/12/2047
मीन	18/05/2048
कुंभ	17/10/2048
मक	18/03/2049
धनु	17/08/2049
वृश्चि	17/01/2050
तुला	18/06/2050
कन्या	17/11/2050
सिंह	18/04/2051
कर्क	17/09/2051

मिथुन 3 वर्ष	
17/09/2051	
17/09/2054	
वृष	18/12/2051
मेष	18/03/2052
मीन	17/06/2052
कुंभ	17/09/2052
मक	17/12/2052
धनु	18/03/2053
वृश्चि	18/06/2053
तुला	17/09/2053
कन्या	17/12/2053
सिंह	19/03/2054
कर्क	18/06/2054
मिथु	17/09/2054

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

कन्या - धनु		कन्या - मक		कन्या - कुंभ		कन्या - मीन		कन्या - मेष	
17/09/2025		17/09/2026		17/09/2027		17/09/2028		17/09/2029	
17/09/2026		17/09/2027		17/09/2028		17/09/2029		17/09/2030	
वृश्चि	17/10/2025	धनु	18/10/2026	मीन	18/10/2027	मेष	17/10/2028	वृष	17/10/2029
तुला	17/11/2025	वृश्चि	17/11/2026	मेष	17/11/2027	वृष	17/11/2028	मिथु	17/11/2029
कन्या	17/12/2025	तुला	17/12/2026	वृष	18/12/2027	मिथु	17/12/2028	कर्क	17/12/2029
सिंह	17/01/2026	कन्या	17/01/2027	मिथु	17/01/2028	कर्क	16/01/2029	सिंह	17/01/2030
कर्क	16/02/2026	सिंह	16/02/2027	कर्क	17/02/2028	सिंह	16/02/2029	कन्या	16/02/2030
मिथु	19/03/2026	कर्क	19/03/2027	सिंह	18/03/2028	कन्या	18/03/2029	तुला	19/03/2030
वृष	18/04/2026	मिथु	18/04/2027	कन्या	17/04/2028	तुला	18/04/2029	वृश्चि	18/04/2030
मेष	18/05/2026	वृष	19/05/2027	तुला	18/05/2028	वृश्चि	18/05/2029	धनु	18/05/2030
मीन	18/06/2026	मेष	18/06/2027	वृश्चि	17/06/2028	धनु	18/06/2029	मक	18/06/2030
कुंभ	18/07/2026	मीन	19/07/2027	धनु	18/07/2028	मक	18/07/2029	कुंभ	18/07/2030
मक	18/08/2026	कुंभ	18/08/2027	मक	17/08/2028	कुंभ	17/08/2029	मीन	18/08/2030
धनु	17/09/2026	मक	17/09/2027	कुंभ	17/09/2028	मीन	17/09/2029	मेष	17/09/2030

कन्या - वृष		कन्या - मिथु		कन्या - कर्क		कन्या - सिंह		कन्या - कन्या	
17/09/2030		17/09/2031		17/09/2032		17/09/2033		17/09/2034	
17/09/2031		17/09/2032		17/09/2033		17/09/2034		17/09/2035	
मेष	18/10/2030	वृष	18/10/2031	मिथु	17/10/2032	कन्या	17/10/2033	तुला	18/10/2034
मीन	17/11/2030	मेष	17/11/2031	वृष	17/11/2032	तुला	17/11/2033	वृश्चि	17/11/2034
कुंभ	17/12/2030	मीन	18/12/2031	मेष	17/12/2032	वृश्चि	17/12/2033	धनु	17/12/2034
मक	17/01/2031	कुंभ	17/01/2032	मीन	16/01/2033	धनु	17/01/2034	मक	17/01/2035
धनु	16/02/2031	मक	17/02/2032	कुंभ	16/02/2033	मक	16/02/2034	कुंभ	16/02/2035
वृश्चि	19/03/2031	धनु	18/03/2032	मक	18/03/2033	कुंभ	19/03/2034	मीन	19/03/2035
तुला	18/04/2031	वृश्चि	17/04/2032	धनु	18/04/2033	मीन	18/04/2034	मेष	18/04/2035
कन्या	19/05/2031	तुला	18/05/2032	वृश्चि	18/05/2033	मेष	18/05/2034	वृष	19/05/2035
सिंह	18/06/2031	कन्या	17/06/2032	तुला	18/06/2033	वृष	18/06/2034	मिथु	18/06/2035
कर्क	19/07/2031	सिंह	18/07/2032	कन्या	18/07/2033	मिथु	18/07/2034	कर्क	19/07/2035
मिथु	18/08/2031	कर्क	17/08/2032	सिंह	17/08/2033	कर्क	18/08/2034	सिंह	18/08/2035
वृष	17/09/2031	मिथु	17/09/2032	कर्क	17/09/2033	सिंह	17/09/2034	कन्या	17/09/2035

सिंह - कन्या		सिंह - तुला		सिंह - वृश्चि		सिंह - धनु		सिंह - मक	
17/09/2035		17/08/2036		18/07/2037		18/06/2038		19/05/2039	
17/08/2036		18/07/2037		18/06/2038		19/05/2039		17/04/2040	
तुला	15/10/2035	वृश्चि	14/09/2036	तुला	15/08/2037	वृश्चि	16/07/2038	धनु	16/06/2039
वृश्चि	12/11/2035	धनु	12/10/2036	कन्या	12/09/2037	तुला	13/08/2038	वृश्चि	13/07/2039
धनु	10/12/2035	मक	09/11/2036	सिंह	10/10/2037	कन्या	10/09/2038	तुला	10/08/2039
मक	07/01/2036	कुंभ	07/12/2036	कर्क	07/11/2037	सिंह	07/10/2038	कन्या	07/09/2039
कुंभ	04/02/2036	मीन	04/01/2037	मिथु	05/12/2037	कर्क	04/11/2038	सिंह	05/10/2039
मीन	03/03/2036	मेष	01/02/2037	वृष	01/01/2038	मिथु	02/12/2038	कर्क	02/11/2039
मेष	31/03/2036	वृष	01/03/2037	मेष	29/01/2038	वृष	30/12/2038	मिथु	30/11/2039
वृष	28/04/2036	मिथु	28/03/2037	मीन	26/02/2038	मेष	27/01/2039	वृष	28/12/2039
मिथु	26/05/2036	कर्क	25/04/2037	कुंभ	26/03/2038	मीन	24/02/2039	मेष	25/01/2040
कर्क	22/06/2036	सिंह	23/05/2037	मक	23/04/2038	कुंभ	24/03/2039	मीन	22/02/2040
सिंह	20/07/2036	कन्या	20/06/2037	धनु	21/05/2038	मक	21/04/2039	कुंभ	21/03/2040
कन्या	17/08/2036	तुला	18/07/2037	वृश्चि	18/06/2038	धनु	19/05/2039	मक	17/04/2040

चर दशा - प्रत्यन्तर

सिंह - कुंभ		सिंह - मीन		सिंह - मेष		सिंह - वृष		सिंह - मिथु	
17/04/2040		18/03/2041		16/02/2042		17/01/2043		18/12/2043	
18/03/2041		16/02/2042		17/01/2043		18/12/2043		17/11/2044	
मीन	15/05/2040	मेष	15/04/2041	वृष	16/03/2042	मेष	14/02/2043	वृष	15/01/2044
मेष	12/06/2040	वृष	13/05/2041	मिथु	13/04/2042	मीन	14/03/2043	मेष	12/02/2044
वृष	10/07/2040	मिथु	10/06/2041	कर्क	11/05/2042	कुंभ	11/04/2043	मीन	10/03/2044
मिथु	07/08/2040	कर्क	08/07/2041	सिंह	08/06/2042	मक	09/05/2043	कुंभ	07/04/2044
कर्क	04/09/2040	सिंह	05/08/2041	कन्या	06/07/2042	धनु	05/06/2043	मक	05/05/2044
सिंह	02/10/2040	कन्या	02/09/2041	तुला	03/08/2042	वृश्चि	03/07/2043	धनु	02/06/2044
कन्या	30/10/2040	तुला	30/09/2041	वृश्चि	30/08/2042	तुला	31/07/2043	वृश्चि	30/06/2044
तुला	27/11/2040	वृश्चि	28/10/2041	धनु	27/09/2042	कन्या	28/08/2043	तुला	28/07/2044
वृश्चि	25/12/2040	धनु	24/11/2041	मक	25/10/2042	सिंह	25/09/2043	कन्या	25/08/2044
धनु	22/01/2041	मक	22/12/2041	कुंभ	22/11/2042	कर्क	23/10/2043	सिंह	22/09/2044
मक	18/02/2041	कुंभ	19/01/2042	मीन	20/12/2042	मिथु	20/11/2043	कर्क	20/10/2044
कुंभ	18/03/2041	मीन	16/02/2042	मेष	17/01/2043	वृष	18/12/2043	मिथु	17/11/2044

सिंह - कर्क		सिंह - सिंह		कर्क - मिथु		कर्क - वृष		कर्क - मेष	
17/11/2044		17/10/2045		17/09/2046		16/02/2047		19/07/2047	
17/10/2045		17/09/2046		16/02/2047		19/07/2047		18/12/2047	
मिथु	14/12/2044	कन्या	14/11/2045	वृष	30/09/2046	मेष	01/03/2047	वृष	31/07/2047
वृष	11/01/2045	तुला	12/12/2045	मेष	13/10/2046	मीन	14/03/2047	मिथु	13/08/2047
मेष	08/02/2045	वृश्चि	09/01/2046	मीन	25/10/2046	कुंभ	26/03/2047	कर्क	26/08/2047
मीन	08/03/2045	धनु	06/02/2046	कुंभ	07/11/2046	मक	08/04/2047	सिंह	07/09/2047
कुंभ	05/04/2045	मक	06/03/2046	मक	20/11/2046	धनु	21/04/2047	कन्या	20/09/2047
मक	03/05/2045	कुंभ	03/04/2046	धनु	02/12/2046	वृश्चि	03/05/2047	तुला	03/10/2047
धनु	31/05/2045	मीन	01/05/2046	वृश्चि	15/12/2046	तुला	16/05/2047	वृश्चि	15/10/2047
वृश्चि	28/06/2045	मेष	29/05/2046	तुला	28/12/2046	कन्या	29/05/2047	धनु	28/10/2047
तुला	26/07/2045	वृष	25/06/2046	कन्या	09/01/2047	सिंह	11/06/2047	मक	10/11/2047
कन्या	23/08/2045	मिथु	23/07/2046	सिंह	22/01/2047	कर्क	23/06/2047	कुंभ	22/11/2047
सिंह	19/09/2045	कर्क	20/08/2046	कर्क	04/02/2047	मिथु	06/07/2047	मीन	05/12/2047
कर्क	17/10/2045	सिंह	17/09/2046	मिथु	16/02/2047	वृष	19/07/2047	मेष	18/12/2047

कर्क - मीन		कर्क - कुंभ		कर्क - मक		कर्क - धनु		कर्क - वृश्चि	
18/12/2047		18/05/2048		17/10/2048		18/03/2049		17/08/2049	
18/05/2048		17/10/2048		18/03/2049		17/08/2049		17/01/2050	
मेष	30/12/2047	मीन	31/05/2048	धनु	30/10/2048	वृश्चि	31/03/2049	तुला	30/08/2049
वृष	12/01/2048	मेष	12/06/2048	वृश्चि	11/11/2048	तुला	13/04/2049	कन्या	12/09/2049
मिथु	25/01/2048	वृष	25/06/2048	तुला	24/11/2048	कन्या	25/04/2049	सिंह	25/09/2049
कर्क	06/02/2048	मिथु	08/07/2048	कन्या	07/12/2048	सिंह	08/05/2049	कर्क	07/10/2049
सिंह	19/02/2048	कर्क	20/07/2048	सिंह	20/12/2048	कर्क	21/05/2049	मिथु	20/10/2049
कन्या	03/03/2048	सिंह	02/08/2048	कर्क	01/01/2049	मिथु	02/06/2049	वृष	02/11/2049
तुला	16/03/2048	कन्या	15/08/2048	मिथु	14/01/2049	वृष	15/06/2049	मेष	14/11/2049
वृश्चि	28/03/2048	तुला	27/08/2048	वृष	27/01/2049	मेष	28/06/2049	मीन	27/11/2049
धनु	10/04/2048	वृश्चि	09/09/2048	मेष	08/02/2049	मीन	10/07/2049	कुंभ	10/12/2049
मक	23/04/2048	धनु	22/09/2048	मीन	21/02/2049	कुंभ	23/07/2049	मक	22/12/2049
कुंभ	05/05/2048	मक	04/10/2048	कुंभ	06/03/2049	मक	05/08/2049	धनु	04/01/2050
मीन	18/05/2048	कुंभ	17/10/2048	मक	18/03/2049	धनु	17/08/2049	वृश्चि	17/01/2050

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 2, 8, 3
शत्रु अंक	7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सन्तति सुख, धन
नीलम	शनि	80%	पराक्रम, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	78%	सन्तति सुख, सुख
हीरा	शुक्र	77%	सुख, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	77%	स्वास्थ्य, सुख
गोमेद	राहु	67%	दम्पति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	56%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पुखराज	गुरु	34%	हानि, दुर्घटना
मूंगा	मंगल	25%	रोग, व्यय, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

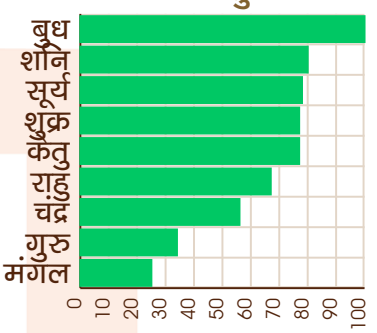

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	16/02/1979	84%	62%	50%	95%	46%	77%	80%	55%	83%
राहु	16/02/1997	66%	38%	0%	100%	34%	83%	86%	80%	64%
गुरु	16/02/2013	84%	62%	38%	95%	54%	64%	80%	67%	77%
शनि	17/02/2032	66%	38%	0%	100%	34%	83%	92%	73%	64%
बुध	16/02/2049	84%	38%	25%	100%	34%	83%	80%	67%	77%
केतु	17/02/2056	66%	38%	38%	100%	34%	83%	67%	55%	89%
शुक्र	17/02/2076	66%	38%	25%	100%	34%	89%	86%	73%	83%
सूर्य	16/02/2082	91%	62%	38%	100%	46%	64%	67%	55%	64%
चंद्र	17/02/2092	84%	69%	25%	100%	34%	77%	80%	55%	64%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना, नीलम, माणिक्य, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पन्ना, माणिक्य व लहसुनिया रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद एवं मोती रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पुखराज व मूंगा रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध पंचम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको प्रसन्नचित्त, कुशाग्रबुद्धि और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। रत्न की शुभता से वाद विवाद में कुशल, तर्ककुशल और मधुरभाषी बनेंगे। यह रत्न आपको सदाचारी, धैर्यशील, चरित्रवान और संतोषी बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आप अपनी बुद्धि से धनार्जन करेंगे। यह रत्न आपको अपनी व्यवसायिक बुद्धि और विद्या के कारण एक सुखद जीवन व्यतीत करने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव आपको लोभ भावना से बचायेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। पन्ना रत्न आपको उद्धोग-व्यापार द्वारा सम्मान दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है. तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यो से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि तीसरे भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके रोगों में कमी करेगा। आध्यात्म की ओर उन्मुख करेगा। यह रत्न आपको विद्वान, चतुर, विवेकी, शत्रुहंता बनायेगा। नीलम रत्न धारण करने से आप बुद्धिमान, दयालु और न्यायकर्ता बनेंगे। शनि रत्न नीलम आपके भाग्य को प्रबल करेगा। सफलता के संघर्ष और कठोर परिश्रम में करेगा। भाईयों से संबंध मधुर करेगा। संतान सुख के योग बनायेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते है। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पिता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपति के मामलों का सहज

समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते है। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। आपको सूर्य माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आप सदाचार मार्ग का पालन करते है। आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। यह रत्न आपको हाजिरजवाब बनायेगा। इसकी शुभता से आपकी लेखन क्षमता का विस्तार होगा। आपकी परामर्श शक्ति का विकास होगा। सूर्य रत्न माणिक्य व्यापार और व्यवसाय को बेहतर करेगा। संतान सुख बढ़ेगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुकूल तरक्की होगी। संतान मेधावी और कुल का नाम करती है। माणिक्य रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। सूर्य आपके लिए केन्द्रेश, सुखेश ग्रह है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप घर, जमीन, जायदाद पैतृक सम्पति, वाहन, माता और जमीन के सुख प्राप्त कर सकते है। सूर्य चतुर्थेश होने के कारण माणिक्य रत्न आपके शैक्षिक ज्ञान का भी विकास करने में सक्षम है। सूर्य की शुभता पाने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न शुभ होने के कारण आपकी वैचारिक शक्ति, निर्णय शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता देगा। माणिक्य रत्न आपको विद्या, बुद्धि, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक और आत्मिक बल प्रदान कर सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए।

अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। रत्न आपको परोपकारी, व्यवहार कुशल, पराक्रमी और प्रसन्नचित्त रहने का स्वभाव देगा। हीरा रत्न प्रभाव से आप दूसरों का हित चाहने वाले, धार्मिक कार्यो में रुचि लेने वाले व्यक्ति बनेंगे। शुक्र रत्न हीरा आपको बुद्धि एवं विद्या दोनो से धनी करेगा। आप मातृ भक्त और मात सेवक बनेंगे। सभी प्रकार के भौतिक सुख साधनों से आप संपन्न रहेंगे। हीरे की शक्तियां अच्छा घर, वाहन, आभूषण, वस्त्र आदि सब प्राप्त करने में सहयोग करेंगी।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते है.

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न लहसूनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे है इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख-सौहार्द पूर्ण बनायेंगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी मानसिक परेशानियों में कमी होगी। यह रत्न आपको सुख शांति, पारिवारिक सौहार्द और भूमि-भवन के विषयों में लाभ देगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको सरकार व सगे संबंधियों से सुख-सहयोग की स्थिति बनाए रखेगा। तथा यह रत्न आपको परदेश का सुख देगा तथा आपके मातृ सुख में वृद्धि करेगा। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने से आपको भौतिक सुख-सुविधाओं का सुख भोगने के प्रर्याप्त अवसर प्राप्त होंगे। यह रत्न आपकी संतोष भावना को बढ़ाएगा। आपको सेवकों का सुख प्राप्त होगा। शैक्षिक पक्ष से भी इस रत्न की शुभता आपके साथ बनी हुई है।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न आपको स्वतंत्र व्यापार करने की ओर प्रेरित कर रहा है। रत्न शुभता से आपका कार्य कौशल चतुराई से परिपूर्ण रहेगा। आपका विवाह अपेक्षाकृत शीघ्र या विलम्ब से हो सकता है। गोमेद रत्न के प्रभाव से आपका अपने जीवनसाथी के मध्य प्रेम संबंध अनुकूल रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आपको गोमेद रत्न धारण करना चाहिए। यह रत्न आपके स्वभाव की उग्रता को नियंत्रित रखेगा।

राहु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न

धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ रहेगा। यह रत्न आपको समाज में प्रतिष्ठा देगा। यह रत्न आपको सफलता तो देगा ही साथ ही लोगों की बीच आपकी लोकप्रियता भी बढ़ायेगा। मोती रत्न कार्यकुशलता में निखार लायेगा। जीवन में बड़ी सफलता देगा। रत्न शुभता से आप दयालु, निर्मल, लोकहित कारक एवं संतोषी व्यक्ति बनेंगे। व्यापार और व्यवसाय में सफलता देगा। आपको उच्चामहत्वांक्षी बनाकर उच्च पद प्रदान करेगा।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र आपके लिए पराक्रमेश है। चंद्र ग्रह की शुभता बढ़ाने और इनके साथ बन रहे अशुभ योगों को निष्फल करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते है। मोती रत्न आपके पराक्रम में वृद्धि, भाई-बहनों से सहयोग, विद्या-बुद्धि एवं संतान सुख दे सकता है। शुभ मोती आपको प्रसन्नचित्त रख सकता है। मोती रत्न से भाग्योदय तथा धर्मपालन में सहयोग प्राप्त किया जा सकता है. तृतीयेश चंद्र का मोती रत्न धारण कर आप चंद्र ग्रह को शक्तिशाली बना सकते है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज से जीवन में सभी प्रकार की

सुख-सुविधाओं की प्राप्ति में कमी के योग बना सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका मान-सम्मान बढ़ सकता है। नौकर चाकरों से सुख सहयोग प्राप्त करने में आपको दिक्कतें आ सकती है। सरकारी क्षेत्र से आय प्राप्ति के लिए आपमें योग्यता की कमी हो सकती है। वैवाहिक जीवन के लिए भी यह रत्न अनुकूल नहीं रहेगा। आमदनी के साधन सीमित हो सकते है। आपके लाभ कम हो सकते है। यह रत्न आपको कंजूस बना सकता है। आपकी पूर्वार्जित संपत्ति को कोई छिन्नने का प्रयास कर सकता है। मित्रों की सलाह आपके भाग्य में कमी का कारण बन सकता है। संतान को लेकर आपको कुछ चिंताएं हो सकती है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्ट्मेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती है। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चीरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल प्रथम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण से आप दुस्साहसी हो सकते है। जिसके कारण दुर्घटनाओं और चोटों की स्थिति बन सकती हैं। अत्यधिक दबाव में कार्य करने में आप असमर्थ हो सकते है। मूंगा रत्न आपको सिर दर्द दे सकता है। रत्न प्रभाव से वाणी पर नियंत्रण कम और आपका अत्यधिक क्रोध का स्वभाव हो सकता है। इसके अलावा यह रत्न धारण करने पर आपको अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं। स्वास्थ्य की कमी के चलते बुखार आपको अपने प्रभाव में ले सकता है। इसके अतिरिक्त लग्न भाव में मंगल चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम भाव को देख रहा है। अतः इस रत्न को यदि आप धारण करते है तो सुख, ग्रहस्थ जीवन एवं बाधाओं का सामना भी आपको करना पड़ सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते है। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शनि
(16/02/2013 - 17/02/2032)

शनि की दशा में आपका पन्ना, नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(17/02/2032 - 16/02/2049)

बुध की दशा में आपका पन्ना, माणिक्य, हीरा, नीलम व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, पुखराज व मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(16/02/2049 - 17/02/2056)

केतु की दशा में आपका पन्ना, लहसुनिया व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, मूंगा व पुखराज रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(17/02/2056 - 17/02/2076)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना, हीरा, नीलम व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ

रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, पुखराज व मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(17/02/2076 - 16/02/2082)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, हीरा, लहसुनिया, मोती व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(16/02/2082 - 17/02/2092)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना, माणिक्य, नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व मूंगा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

मंगल - 16/02/1979

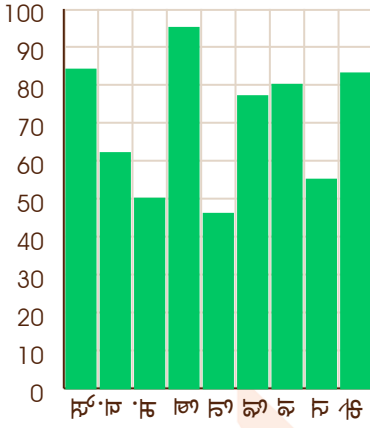

राहु - 16/02/1997

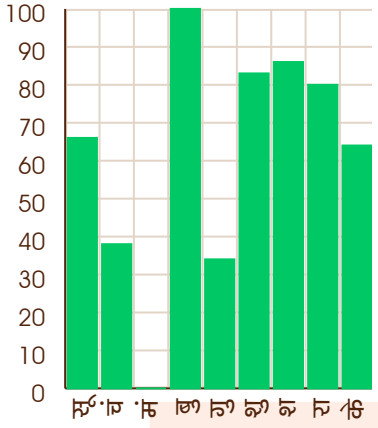

गुरु - 16/02/2013

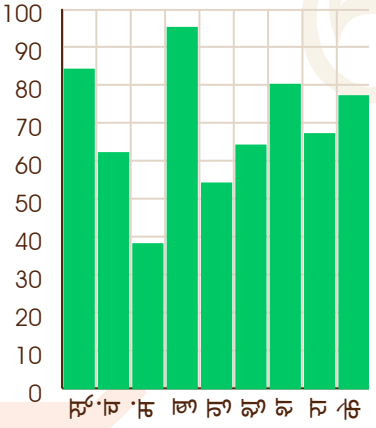

शनि - 17/02/2032

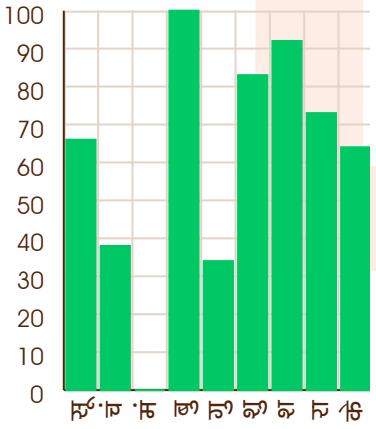

बुध - 16/02/2049

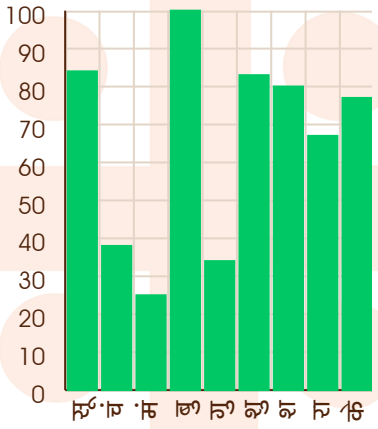

केतु - 17/02/2056

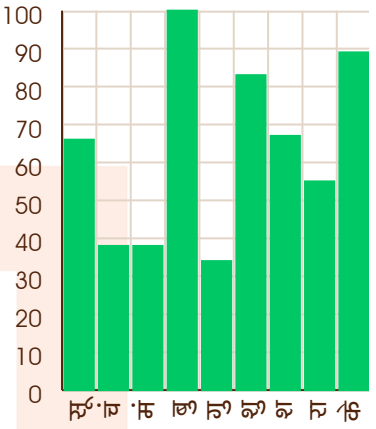

शुक्र - 17/02/2076

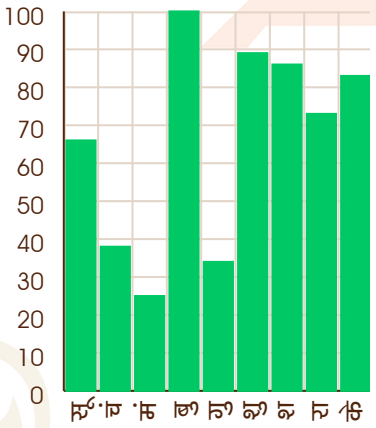

सूर्य - 16/02/2082

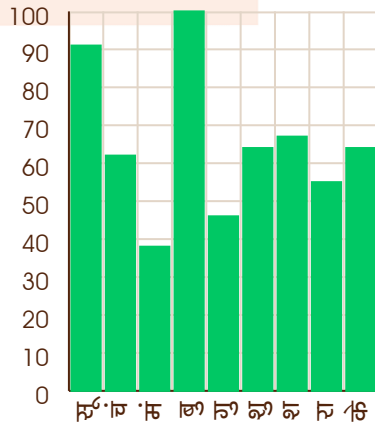

चन्द्र - 17/02/2092

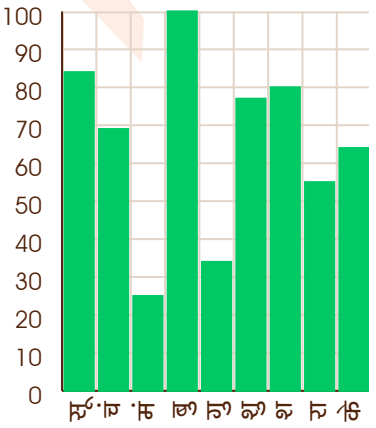

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टरक्वाइज

आपका जन्म वृष राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। टरक्वाइज रत्न शनि ग्रह के लिये धारण किया जाता है और शनि वृष राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि वृष लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृष राशि के लग्न वाले जातकों को टरक्वाइज रत्न धारण करके शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी शनि सेवक का प्रतिनिधि ग्रह है अर्थात यदि जातक सरकारी या प्राइवेट नौकरी में है तो नौकरी में प्रमोशन व आय वृद्धि के साथ-साथ अधिकार भी प्रदान करता है। साथ ही अन्य कर्मचारीगणों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों का सहयोग तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की शुभकामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। जिसको जोड़ों के रोग हों या लाइलाज रोगी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा लाइलाज रोगों से मुक्ति दिलाता है।

टरक्वाइज को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। टरक्वाइज शनि ग्रह का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय शनि की होरा में धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। टरक्वाइज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टरक्वाइज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नीले या काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे सरसों का तेल, काला उड़द सवा मीटर काला कपड़े का दान करें तो टरक्वाइज की अंगूठी धारण करना और भी

अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। शनि मंदिर में शनिदेव की मूर्ति पर सरसों का तेल का अभिषेक करायें तो यह टरक्वाइज की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृष लग्न वाले जातक यदि टरक्वाइज की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्टेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता हैं। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वितीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
साढेसाती तृतीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	सन्तति
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	भाग्योदय
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	स्वास्थ्य

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके । इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य, बुध और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 17 है। एक एवं सात के योग से आपका मूलांक 8 होता है। आठ मूलांक का स्वामी शनि है। अंक एक का सूर्य तथा सात का भारतीय मत से केतु एवं पाश्चात्य मत से नेपच्यून है। इन तीनों ग्रहों का प्रभाव आपके जीवन में दृष्टिगोचर होगा। मूलांक 8 के स्वामी शनि प्रभाव से आपकी उन्नति धीरे-धीरे होगी। आपके जीवन में संघर्ष अधिक रहेंगे एवं प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने के बाद अवरोध आयेंगे। जिन्हें आप मेहनत एवं धैर्य से पार कर उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

निराशा एवं आलस्य दो अवगुण आपकी प्रगति के बाधक रहेंगे। अतः किसी भी कार्य की असफलता से निराश न हों तथा दुबारा प्रयत्न करें, सफलता मिलेगी। कार्य में कर्म के सिद्धांत को मानते हुये आलस्य से दूर रहना सफलता की कुंजी रहेगा। अंक एक के स्वामी सूर्य एवं सात के केतु या नेपच्यून के प्रभाव से आपकी कल्पना शक्ति, विचार शक्ति अच्छी रहेगी। आप में दूसरों को समझनें की शक्ति अच्छी होगी। अतीन्द्रिय ज्ञान भी अच्छा रहेगा। सूर्य प्रभाव से आपका नाम स्थायी प्रसिद्धि को प्राप्त करेगा। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आपको यश तथा लाभ प्राप्त होगा।

उच्च वर्ग में आप लोकप्रिय होंगे एवं उच्चवर्ग से लाभ प्राप्त करेंगे। आपकी इच्छा शक्ति दृढ़ रहेगी एवं अपनी बात पर अड़िग रहने की प्रवृत्ति आप में पाई जायेगी। आप थोड़े हठी होंगे। हठ की यह प्रवृत्ति यदाकदा आपको हानि भी पहुँचायेगी। अतः जहाँ तक हो सके आप अपने हठ पर सन्तुलन रखें एवं क्रोध पर नियंत्रण रखें। सूर्य केतु शनि ग्रहों के प्रभाव से आप अपने जीवन में एक सफल व्यक्ति रहेंगे। आपकी ख्याति अच्छी रहेगी तथा दूसरों के लिये उदाहरण का कार्य करेगी।

भाग्यांक तीन का अधिष्ठाता बृहस्पति ग्रह को माना गया है। इसको गुरु भी कहते हैं। गुरु ग्रह के प्रभाववश आप धार्मिक, दानी, उदार, सच्चरित्र, ज्ञानी, विद्वान, परोपकारी, शान्त स्वभाव, सत्य पर आचरण करने वाले व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त करेंगे। अनुशासन में रहना एवं दूसरों से अनुशासन की अपेक्षा करना आपका प्रमुख गुण रहेगा। आप अपने अधिनस्थों से अधिकांश कार्य अपने बुद्धि कौशल से निकलवाने में सिद्धहस्त होंगे।

सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्रों में आपकी रुचि रहेगी एवं आवश्यकता के समय समाज सेवा के कार्य से पीछे नहीं हटेंगे। धर्म-कर्म के कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। गुरु धन-सम्पदा का दाता ग्रह है। अतः गुरु के प्रभाव से अपने कर्मक्षेत्र, रोजगार के क्षेत्र में अच्छी सम्पदा एकत्रित करेंगे। भूमि, वाहन, सम्पत्ति का अच्छा सुख प्राप्त करेंगे। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में रुचि लेंगे और ऐसा कार्य करना पसन्द करेंगे जिनमें आपके अनुभव, ज्ञान का भरपूर उपयोग होता है। और आपको पूर्ण सम्मान, यश धन इत्यादि मिले।

आपका मूलांक 8 है तथा भाग्यांक 3 है। मूलांक 8 का स्वामी शनि है तथा भाग्यांक 3 का स्वामी गुरु है। मूलांक 8 एवं भाग्यांक 3 के बीच शत्रु संबंध है। इसके प्रभाववश कभी आपका मूलांक साथ देगा, तो कभी आपका भाग्यांक साथ देगा और कभी-कभी इन दोनों

ही अंकों में परिवर्तनशील घटनाएं घटित होंगी। सामान्य तौर पर शनि एवं गुरु के प्रभाववश आपको अपने रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में धीरे-धीरे उन्नति प्राप्त होगी। आप गरीब घर में पैदा हो कर भी अपनी मेहनत के द्वारा प्रौढ़ावस्था तक पहुंचते-पहुंचते काफी आर्थिक संपन्नता प्राप्त करने में सफल होंगे। चल संपत्ति की अपेक्षा अचल संपत्ति एवं भौतिक संपदा आपके पास अधिक रहेगी। आपकी विचार शक्ति गहराई लिए रहेगी तथा आप जो भी कार्य करेंगे, उसको पूर्ण मेहनत से स्थायी बनाने की कोशिश करेंगे। जीवन के विभिन्न मोड़ों पर प्राप्त होने वाली असफलताओं से आप शीघ्र विचलित न होते हुए, उनसे भविष्य की सीख प्राप्त करेंगे। आपके कार्यक्षेत्र में आपका लक्ष्य यही रहेगा कि आप जो भी कार्य करें, उसमें हमेशा सफल रहें तथा दूसरे लोग आपके कार्य की सराहना करें। आध्यात्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र में थोड़े रूढ़िवादी एवं आधुनिक प्रगतिशील व्यक्ति के रूप में आप ख्याति अर्जित करेंगे। आपका कार्यक्षेत्र कोई भी रहे, उसको आप, अपनी मेहनत पर विश्वास रखते हुए, पूर्ण करेंगे तथा नीचे से धीरे-धीरे उठते हुए जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे।

आपका भाग्योदय 30 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 39 वर्ष की अवस्था से आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी एवं 48 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 8 की मित्रता 1 एवं 4 से हैं तथा भाग्यांक 3 की मित्रता 6 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 1, 3, 4, 6, 8, 9 के अंकों का विशेष महत्व है। इनसे आपके जीवन में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से शत्रु संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के शुभ फलों में थोड़ी-बहुत न्यूनता आएगी। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों, मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षो में घटित होंगी। जब कभी इन्ही अंकों की तारीख, मास, वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभवार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए जनवरी, मार्च, जून, अगस्त, सितंबर माह विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक-भाग्यांक से मेल स्थापित करें तथा एक ही समय में दोनों ही शुभ रहें।

मूलांक 8 एवं भाग्यांक 3 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 1, 3, 4, 6, 8, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

1 . 10, 2, 19, 28, 37, 46, 55, 64, 73
3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
4 . 13, 22, 31, 40, 49, 58, 67
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
8 . 17, 26, 35, 44, 53, 62, 71
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 79, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी तथा कुछ घटनाएं जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

सूर्य दिनांक 23 दिसंबर से 19 फरवरी तक, पाश्चात्य मत से सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में रहता है तथा 14 जनवरी से 13 मार्च तक, भारतीय मत से, सूर्य मकर एवं कुंभ राशि में होता है जो शनि की अपनी राशियां है तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक सूर्य तुला राशि में रहता है, जो शनि की उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक आठ के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहेंगे।

अनुकूल दिवस

किसी भी माह में पड़ने वाले शनिवार, रविवार एवं सोमवार आपके लिए अनुकूल दिवस हैं। आप अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, विशिष्ट अधिकारी से संबंध आदि अपनी शुभ तारीखों में पड़ने वाले उपर्युक्त दिवसों में ही प्रारंभ करेंगे तो आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

शुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार सम्बंधी कार्य, पत्र या दस्तावेज लिखने हेतु किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखें अधिक अनुकूल रहेंगी। अतः आप कोशिश करें कि कोई भी महत्वपूर्ण कार्य उपर्युक्त तारीखों में ही संपन्न हो।

अशुभ तारीखें

किसी भी अंग्रेजी माह के दिनांक 3, 6, 12, 15, 21, 24 एवं 30, आपके लिए अनुकूल नहीं रहेंगे। इन तारीखों में आप कोई भी नया कार्य, व्यापार, पत्र लेखन एवं उच्च तथा विशिष्ट अधिकारी से मिलने का कार्य न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 1, 4, 8, 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीखों को अथवा 14 जनवरी से 13 मार्च तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर के बीच हुआ हो, ऐसे व्यक्ति आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगे। इनके सहयोग से आपको अच्छी उपलब्धियां प्राप्त होंगी।

प्रेम संबंध एवं विवाह

आप अपने रोजगार, व्यवसाय या प्रेम, विवाह संबंध इत्यादि में ऐसी स्त्री का चुनाव करें, जिसका मूलांक 1, 4, 8 हो तथा उसका जन्म किसी भी माह की 1, 4, 8 10, 13, 17, 19, 22, 26, 28 एवं 31 तारीख को हुआ हो। ऐसी महिलाएं आपके रोजगार, व्यवसाय तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए गहरा भूरा, काला, गहरा नीला, ककरेजी रंग शुभ होंगे। अपने घर के दरवाजे, पर्दे, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप करें। यदि आपका स्वास्थ्य ठीक न हो तब आप इन्हीं रंगों के कपड़े पहनें एवं रुमाल हर समय अपने पास रखें, जिससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य करते समय भी इन्हीं रंगों के वस्त्रों को धारण करना आपके लिए विशेष फलदायक रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आप अपने लिए कॉम्पलेक्स, फ्लैट या मकान का चुनाव पश्चिम दिशा में करें। आपका मूलांक 8 होने से आपके लिए पश्चिम दिशा उपयुक्त रहेगी तथा भवन क्रमांक का योग 8 हो तो अच्छा रहेगा। अतः आप इस दिशा में फ्लैट या मकान खरीद सकते हैं। आप चाहें तो शहर में पश्चिम दिशा, या भवन के पश्चिम क्षेत्र में निवास करें ऐसा करना आपके लिए लाभकारी रहेगा तथा अपने आवश्यक कार्य भी इसी दिशा की ओर बैठ कर संपन्न करेंगे तो लाभ होगा।

शुभ वाहन नं

आपके मूलांक 8 के 1 और 4 मित्र हैं। अतः आप जब भी कोई नया वाहन इत्यादि खरीदते हैं तो उसके पंजीकरण का योग इन्हीं अंकों में से एक होना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। उदाहरणार्थ वाहन पंजीकरण क्रमांक 5237 = 8। आप यदि वाहन में यात्रा करते हैं तब भी आपके लिए शुभ अंक 1,4,8 ही रहेंगे और यदि आप होटल में कमरा आदि बुक करवाते हैं तब उसके लिए आपका कमरा नंबर 107 = 8 का चयन करना ही उचित रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको वायु रोग, वात रोग, शारीरिक क्षीणता, अंध रोग, हृदय की कमजोरी, रक्त की कमी, मलबद्धता, कब्जियत, गठिया, रक्तचाप, सिर की पीड़ा, कुष्ठ रोग, मूत्र के रोग, गंजापन तथा कान-नाक में पीड़ा होगी। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको शनि की पूजा एवं आराधना करनी चाहिए।

व्यवसाय

कसरत, खेल-कूद, कूद-फांद, पुलिस और सैन्य विभाग, ठेकेदारी, टीन-चद्दर आदि का कार्य, कुलीगिरी, लघु उद्योग, वकालत, ज्योतिष कार्य, वैज्ञानिक कार्य, मुर्गी पालन, बागबानी, कोयला और लकड़ी का व्यवसाय, घड़ीसाज, न्याय वेत्ता, नेतृत्व, नीति निर्धारक, धर्म-कर्म, यज्ञादि कर्त्ता, अध्यापन, संगीतज्ञ आदि कार्य।

व्रतोपवास

शनिवार को शनि अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। शनिवार को काले, नीले वस्त्र धारण कर इक्कावन या उन्नीस शनिवारों को व्रत करें। शरीर में तेल मालिश, तेल दान तथा पीपल के वृक्ष की पूजा करें। शनि मंत्र का यथाशक्ति रुद्राक्ष माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए नीलम सबसे अधिक लाभकारी रहेगा। इसके न मिलने पर आप बैंकॉक नीलम, लाजवर्त, काला नीली इत्यादि धारण कर सकते हैं। इसे आप शनि के दिन, शुक्ल पक्ष में, चौघड़िया मुहूर्त में, त्रिधातु या चांदी की अंगूठी में सवा तीन से सवा पांच रत्ती का नीलम बनवा कर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली की त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें। यह आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा।

अनुकूल देवता

आप शनि ग्रह की उपासना करें अथवा आपको बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा। आप नित्य रुद्राक्ष की माला पर बटुक भैरव के मंत्र का एक सौ आठ बार जप किया करें। इससे आपकी सभी समस्याएं, रोग इत्यादि दूर होंगे। बटुक भैरव का मंत्र इस प्रकार है- 'ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु-कुरु बटुकाय ह्रीं'। यह इक्कीस अक्षर का मंत्र सर्वसिद्धिदाता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन बटुक भैरव की उपासना करना विशेष लाभप्रद रहेगा।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शनि के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु शनि के गायत्री मंत्र का, प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शनि गायत्री मंत्र - ऊँ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शनि का ध्यान करें, मन में शनि की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तंडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ शनि को अनुकूल बनाने हेतु शनि के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान दो सौ तीस माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः दबर्चिन्द्रप्रप नमः।। जप संख्या 23000।।

वनस्पति धारण

आप शनिवार के दिन एक इंच लंबी विच्छु की जड़ ला कर, काले धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या शीशे या लोहे के ताबीज में भर कर गले मे धारण करें। इससे शनि के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावो में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आप प्रत्येक शनिवार को एक बाल्टी या बर्तन में सुरमा, काले तिल, सौंफ, नागरमोथा और लोध आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शनि के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शनि की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शनि के पदार्थ-तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

शनि को अनुकूल बनाए रखने हेतु शनि यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चन्दन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण में वृष लग्न के उदय काल हुआ था। जन्मकाल के समय ही मिथुन के नवमांश में कन्या द्रेष्काण भी उदित था। इस विन्दु पर जन्म के फलस्वरूप आपका जीवन सुखद, आरामदायक धन धान्य से पूर्ण आनंददायक जीवन व्यतीत होने की संभावनाओं का भी सृजन हुआ है।

आप व्यक्तिगत रूप से कठिन श्रम की भावना से समर्पित प्राणी हैं। आप अपने उद्य `श्यित कार्य को यथार्थता के साथ स्पष्ट रूप से संपादित करेंगे।

आप धन-धान्य की प्रर्याप्त प्राप्ति हेतु समझ से पूर्व नियत स्थान पर पहुंचने का निर्णय करेंगे। परंतु आप अपनी यह धारणा ग्रहण करें कि अतिरिक्त विकास एवं पूर्ण सफलता प्राप्ति हेतु अपने उद्देश्य का संपादन कर लेंगे। वास्तव में आपके लिए आकस्मिक रूप से मात्र आलस्यपूर्ण प्रवृत्ति का त्याग करना ही उत्तम होगा।

आप पहले से ही धन की महत्ता से परिचित हैं। आप कठिन श्रम एवं दुरुह रास्ते से धनोपार्जन करेंगे तथा धन के व्यय पर सतर्क भी रहेंगे। आप निश्चित रूप से बहुत उत्तम प्रकार के भौतिक सुख प्राप्ति हेतु, धनकोष का संग्रह करेंगे।

आप वित्तीय विषयक किसी भी प्रकार का दुरुपयोग सा सामंजस्य नही करेंगे।

आप अत्यंत धन संचय करने के लिए लोभ की पराकाष्ठा तक पहुंचे हुए प्राणी हैं। आप में पूर्ण विश्वसनीयता विद्यमान हैं। आप किसी का धन अनीतिपूर्ण ढंग से नही प्राप्त करना चाहते बल्कि आप धन प्राप्ति के लिए उपयुक्त सुअवसर पर ऐसा कार्यान्वयन करते हैं। क्योंकि सत्य तो यह है कि आप धन प्राप्ति संबंधी योजनाओं को सांसारिक रीति से बुद्धिमत्तापूर्वक समर्पित भाव से कार्य रूप देते हैं। साथ ही अन्य लोगों को भी धन प्राप्ति के लिए मार्ग दर्शन करते हैं।

आप किसी के साथ छेड़खानी करना या किसी पर आक्रमण करने पर विश्वास नही करते। आप एक आस्तिक प्राणी हैं। आप अपनी स्पष्ट वादिता पूर्वक संतोषजनक सफलता या, निकटता हेतु किसी को भी तरजीह देते हैं। परंतु जब कोई किसी भी समय या अवसर पर कोई शत्रुता पूर्वक आप से इर्ष्या करता है तो आप उसके प्रगति के पथ पर अवरोधक उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं। आपका प्रदर्शन बाधा पूर्ण एवं विध्वांसात्मक रूप से व्यवधान कारक हो जाता हैं अस्तु आप अपने धैर्य को सीमा के बाहर जाने के लिए सतर्क रहें। अर्थात् अपने धैर्य का संतुलन बनाए रक्खें।

आप स्वाभाविक रूप से यांत्रिक कला में दक्ष एवं परिश्रम तथा समुचित खोजकर अपने लक्ष्य तक पहुंचने वाले प्राणी हैं। आप सामान्यतया प्रशासनिक सेवा कार्य हेतु उपयुक्त हैं। यथा होटल प्रबंधक, अथवा सौंदर्य प्रसाधित व्यवसाय आदि तथा आपकी रूचि साहित्यिक भावनानुसार हो, तों आप उच्च कोटि के लेखक भी हो सकते है यदि आप में लेखन कला एवं क्षमता विद्यमान हो। यद्यपि आप मध्यम कद के ऊंची कंधे वालें, उभरी छाती, उन्नत ललाट एवं

चमकीली आखों से युक्त सुंदर व्यक्तित्व के जीव हैं। आप से विपरीत योनि के प्राणी (स्त्री) आकर्षित रहेंगी।

आपका पारिवारिक जीवन अति आनंददायक साथ-साथ कठिन एवं कोई न कोई आर्थिक समस्याओं से सदैव युक्त रहेगा। साथ ही आपका पारिवारिक जीवन सुव्यवस्थित रहेगा। आप अपने नजदीकी और प्रियजनों को यथेष्ठ प्यार और सम्मान देंगे। आप अपने गले के रोग एवं टोनशील रोग के प्रति रक्षात्मक भावना रक्खें तथा कफ जनित तथा शीत प्रकोप से गले में होने वाले कष्ट तथा रोगों एवं पैरों की सूजन तथा दर्द की रक्षा हेतु सतर्क रहें।

सप्ताह के शुक्रवार एवं शनिवार आपके लिए अच्छा दिन है। इसके अतिरिक्त बुधवार का दिन आपके साझीदारी व्यवसाय हेतु उत्तम एवं समयोचित है। रविवार, गुरूवार सोमवार, एवं मंगलवार का दिन आपके लिए अपव्ययकारी हो सकता है।

इसके अतिरिक्त आपके लिए अंक 2 तथा 8 अंक लाभदायक है। परंतु अंक 5 आपके लिए त्यागनीय है। इसी प्रकार लाल रंग भी आपके लिए प्रतिकूल है। जबकि, आपके लिए अनुकूल एवं भाग्यशाली रंग हरा, सफेद एवं गुलाबी रंग है।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप

सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

वृष राशि में मंगल हो तो जातक अत्यन्त कामुक, अनैतिक आचरण, पुत्रद्वेषी, प्रवासी, सुखहीन, लड़ाकू प्रकृति, वंचक, सिद्धान्त रहित, स्वार्थी एवं क्रूर होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराक्रमी, सद्व्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान, हठी एवं स्वार्थी होता है।

राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

वृश्चिक राशि में राहु हो तो जातक धूर्त, निर्धन, रोगी, धननाशक, अनैतिक चरित्र एवं धोखेबाज होता है।

केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

वृष राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, निरुद्यमी, आलसी, वाचाल एवं कामुक होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया वृष लग्न में उत्पन्न मनुष्य धैर्य युक्त एवं सहनशील स्वभाव के होते हैं तथा अपने वार्तालाप में सर्वदा मधुर वाणी का उपयोग करते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा परिश्रम करने की उनमें अपूर्व क्षमता विद्यमान रहती है तथा अपने परिश्रमशील स्वभाव के द्वारा वे जीवन में उन्नति तथा सफलता अर्जित करने में समर्थ होते है जिससे समाज में उनको मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती है। साथ ही जीवन में सुखऐश्वर्य से युक्त होकर वे भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करते है। वे शांत स्वभाव के होते है परन्तु पराक्रम एवं उत्साह से पूर्ण रहते है।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक शांति तथा सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपकी वाणी मधुर होगी तथा स्ववाक्चातुर्य से आप अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में सहिष्णुता तथा उदारता का भाव विद्यमान होगा। आपके सांसारिक महत्व के कार्य यथा समय पूर्ण होंगे जिससे आपको सुखैश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आप एक उत्साही पराक्रमी तथा परिश्रमी पुरूष होंगे तथा इनसे जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलताओं को अर्जित करेंगे। आप अपने श्रेष्ठ जनों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रखने में समर्थ होंगे। आप में विद्वता का भाव भी रहेगा तथा कला एवं साहित्य के क्षेत्र में परिश्रम पूर्वक उन्नति करेंगे। साथ ही जीवन में भौतिक सुखों को प्राप्त करके प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में मंगल के प्रभाव से आप एक साहसी पराक्रमी तथा तेजस्वी पुरूष होंगे तथा यदा कदा आप क्रोध के भाव को भी प्रदर्शित करेंगे लेकिन क्रोध के भाव पर आपको यत्नपूर्वक नियंत्रण रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हों। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। लेकिन आपके सांसारिक महत्व के सभी कार्य पराक्रम तथा परिश्रम से सफल होंगे तथा जीवन में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा अपने कार्य कलापों में बुद्धिमता की छाप अवश्य छोड़ेगे।

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा परन्तु उदारता का भी आप समय समय पर प्रदर्शन करेंगे तथा जरूरतमंद लोगों की समय समय पर सेवा एवं सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे। लेकिन परिश्रम एवं योग्यता से आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा इच्छित धन वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ होंगे। स्त्री से आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा तथा पुत्र संतति से भी युक्त रहेंगे। संगीत के प्रति भी यदा कदा आप रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा न्यूनाधिक रूप से इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के इच्छुक होंगे।

इस प्रकार आप पराक्रमी तेजस्वी साहसी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा जीवन में स्व योग्यता से सफलता अर्जित करके सुखपूर्वक समय व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रूचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रूचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते है। यदि आप यह अनुभव करते है कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चंद्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने भाई बहिनों के प्रति उदार भावुक तथा अत्यंत ही सहानुभूति का व्यवहार रखेंगे। आप उनसे अत्यधिक प्रेम करेंगे तथा उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगे परन्तु इसके बाद भी उनसे आपको यथोचित सम्मान तथा आदर अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। कभी कभी परिस्थिति के अनुकूल आप असाधारण साहस तथा पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक अनुपालन करते रहेंगे। भाई बहिनों के प्रति समयानुसार आप अपने को परिवर्तन करने में समर्थ रहेंगे। आपकी स्मरण शाक्ति तीव्र रहेगी तथा ऐतिहासिक घटनाओं को याद रखने में सफल रहेंगे। साथ ही भाई बहिनों के प्रति आपका क्रोध भी क्षणिक रहेगा तथा शीघ्र ही उनसे प्रसन्न हो जाएंगे।

जीवन में आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति रहेंगे तथा यत्नपूर्वक अपनी जिम्मेदारियों को पूर्ण करेंगे। आपकी सीखने या याद करने की शक्ति तीव्र होगी अतः किसी से कोई नवीन ज्ञान अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही उच्च शिक्षा या दर्शन शास्त्र के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी। आप सामाजिक जनों की भी यथाशाक्ति सेवा करेंगे। अतः अपने इन कार्यो से ख्याति भी प्राप्त होगी। आप किसी भी उददे्श्य को कार्य रूप में परिवर्तित करने के लिए साहसिक निर्णय लेने में हमेशा समर्थ रहेंगे अतः यदा कदा आप समूह के नेतृत्व को भी प्राप्त कर सकते हैं। आप समाज सेवा, लेखन या किसी नवीन आविष्कार से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते है। साथ ही संचार की सुविधाओं से आप युक्त रहेंगे तथा संचार के क्षेत्र में आजीविका आदि भी कर सकेंगे। प्रकाशक संपादक या संवाददाता के रूप में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप वैश्य वर्ग के मित्र रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक अपने घर एवं परिवार का पालन पोषण करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपकी रूचि रहेंगी तथा शील स्वभाव भी उत्तम रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा लग्नेश शुक्र भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप जीवन में समस्त भौतिक सुख संसाधनों एवं आधुनिक विलासमय वस्तुओं से युक्त होंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। शुक्र के प्रभाव से युवावस्था से ही आपको सुख-संसाधनों की उपलब्धि हो जायेगी तथा इसके लिए विशेष परिश्रम भी कम ही करना पड़ेगा।

जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को आप अवश्य प्राप्त करेंगे। आपके प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा विवाह के बाद इसमें काफी वृद्धि होगी। स्त्री के सहयोग से भी धनाढ्य एवं समृद्धशाली व्यक्ति माने जायेंगे। चल सम्पत्ति की उपेक्षा अचल सम्पत्ति की आपके पास बहुलता होगी जिससे जमीन जायदाद तथा मकान प्रमुख होंगे। साथ ही समस्त आधुनिक भौतिक एवं विलासमय उपकरणों से आप सम्पन्न होंगे तथा आनंदपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

उत्तम निवास स्थान के विषय में आप सौभाग्यशाली व्यक्ति समझे जायेंगे। आपका घर उत्तम एवं आधुनिक स्थान में होगा तथा सर्व प्रकार से यह आकर्षक एवं सुसज्जित रहेगा। आप भी इसकी सुन्दरता एवं सफाई का पूर्ण ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी बुद्धिमान एवं शिक्षित होंगे तथा आपसी संबंध अच्छे रहेंगे। आपकी कुंडली में उत्तम वाहन के भी योग बनते है जिसका आप युवावस्था से ही उपयोग करके प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

आपकी माता जी सुन्दर सुसंस्कृत एवं मृदुस्वभाव की महिला होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। वह एक चतुर एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी चतुराई एवं व्यवहार कुशलता से परिवार का अच्छी तरह पालन पोषण करेंगी एवं किसी भी व्यक्ति को उनसे कोई परेशानी नहीं होगी। आपके प्रति उनके हृदय में विशेष वात्सल्य एवं स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको प्रचुर मात्रा में आर्थिक सहयोग की भी प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उनकी आज्ञा का पालन करने में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त सुख-दुख में उनको अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आपसी संबंध भी मधुर होंगे।

अध्ययन के प्रति वचपन से ही आपकी रूचि होगी तथा बुद्धिमान एवं परिश्रमशील होने के कारण प्रारंभ से ही अध्ययन के क्षेत्र में अनावश्यक समस्याओं एवं बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। इसी परिपेक्ष्य में आप स्नातक परीक्षा आसानी से उतीर्ण करेंगे तथा इससे आप की आत्मिक शक्ति में वृद्धि होगी फलतः जीवन में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। सामाजिक जनों एवं संबंधियों में भी आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं प्रभावित होंगे। इससे आपको प्रोत्साहन मिलेगा जिससे भविष्य उज्ज्वल होगा।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा सूर्य भी चतुर्थेश होकर पंचमभाव में ही बैठा है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्य कलापों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। इससे अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहैंगे तथा आपको वांछित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी बुद्धि निर्मल एवं तीव्र होगी तथा कठिन से कठिन समस्याओं का आसानी से समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य, कविता एवं लेखन कार्य में आपकी रूचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों में कार्य करने में तत्पर रहेंगे। आधुनिक वैज्ञानिक शास्त्र, गणित एवं ज्यौतिष आदि के क्षेत्रों में भी आप कुछ कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। इससे आप स्वयं को समाज में एक विद्वान व्यक्ति के रूप में स्थापित करने में समर्थ होंगे। बुध की राशि में सूर्य की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगो में आप की रूचि रहेगी परंतु आपका प्रेम आदर्शवादी एवं मर्यादित होगा तथा प्रेम में एक दूसरे पर पूर्ण विश्वास रखना आपकी मुख्य विचारधारा होगी। अतः आपका प्रेम प्रसंग विवाह के रूप में भी परिवर्तित हो सकता है। लेकिन प्रेम प्रसंग में आपको भावुकता से दूर ही रहना चाहिए।

पंचमभाव में सूर्य की स्थिति के प्रभाव से संतति सुख से आप युक्त होंगे तथा यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी एवं पुत्र संतति अवश्य होगी। आपके बच्चे योग्य, बुद्धिमान एवं गुणवान होंगे तथा परिश्रम एवं योग्यता से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता-पिता के वे आज्ञाकारी होंगे तथा उन्हे वांछित सम्मान प्रदान करेंगे। सांसारिक कमहत्व के कार्यों को वे माता पिता की सलाह से ही सम्पन्न करेंगे। इससे बच्चों से आप संतुष्ट रहेंगे। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों का विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए पिता पर अधिक निर्भर होंगे तथा पिता भी उनको मित्रवत सलाह देंगे तथा अध्ययन के प्रति प्रोत्साहित करेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति अत्यधिक उन्नति करेगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के प्रति विशेष रूचि का प्रदर्शन करेगी। आप भी अपनी ओर से बच्चों की शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा इसके लिए आवश्यक व्यय करने के लिए तत्पर होंगे तथा उन्हे अच्छे से अच्छा सामाजिक एवं शैक्षणिक स्तर प्रदान करेंगे। इससे बच्चे भविष्य में अन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। वे व्यवहार कुशल भी होंगे तथा अपने इस गुण से सामाजिक जनों को प्रभावित एवं प्रसन्न रखेंगे। इससे आपके समाज में प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। फलतः ऐसी संतति से आप गौरव की अनुभूति करेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को सहन करने की शक्ति आप में विद्यमान रहेंगी। आप यदा कदा बुखार या अन्य सामान्य रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए क्योंकि आप में रोग अवरोधक तत्वों की न्यूनता होने से जब एक बार बीमार पड़ेगें तो इसमें ठीक होने में काफी समय लग जाएगा। इसके अतिरिक्त भावुकता में आपको वाहन आदि को भी सामान्य गति से चलाना चाहिए।

आपके शत्रु काफी होंगे तथा समय समय पर आपको नीचा दिखाने के लिए वे प्रयत्नशील रहेंगे क्योंकि वे आपकी खुशहाली के प्रति ईर्ष्या का भाव रखते हैं। साथ ही आपके मित्र, संबन्धी एवं पड़ौसी भी आपके ऐश्वर्य से ईर्ष्या करेंगे अतः ये भी समय समय पर शत्रुओं का कार्य करेंगे जो कि आपके अन्य प्रत्यक्ष शत्रुओं से अधिक प्रभावी होंगे। यद्यपि मुकद्दमे आदि में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी परन्तु धन संबन्धी मामलों में आप कोई मुकद्दमा दायर कर सकते हैं। इसमें आपका धन व्यय अधिक होगा परन्तु कुछ परिश्रम के बाद आपको इसमें सफलता मिल सकती है। आपके नौकर आपके लिए विश्वास पात्र नहीं रहेंगे तथा पारिवारिक गुप्त रहस्यों को वे अन्य लोगों को बताकर आपके सम्मान में न्यूनता लाएंगे। साथ ही उनकी चोरी करने की आदत से भी आपको आर्थिक हानि की संभावना रहेगी।

आप स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा अपनी रूचि के अनुसार ही कार्यो को सम्पन्न करेंगे। यद्यपि आपके पास प्रचुर मात्रा में धनागमन होता रहेगा लेकिन आपात्काल के लिए आप बचाव करने में असमर्थ रहेंगे तथा प्रौढ़ावस्था में आपको भाइयों या संबन्धियों के कारण आपको ऋण के बोझ में दबना पड़ सकता है। इससे आपके सामाजिक सम्मान में न्यूनता होगी अतः ऐसी परिस्थितियों से सावधान रहना चाहिए। आपके मामा मामियों से संबन्ध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा उनसे सुख एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। खान पान के प्रति भी आपको सतर्क रहना चाहिए अन्यथा वृद्धावस्था में आपको वायु, गुर्दे तथा प्रमेह संबन्धी रोगों से परेशानी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप एक धनवान व्यक्ति होंगे परन्तु समाज में आपके अच्छे कार्यो से भी लोगों से शत्रुता के भाव में वृद्धि होगी अतः सावधान रहें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा राहु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया सप्तम भाव में वृश्चिक राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी व्ययशील एवं पित प्रकृति युक्त होता है परन्तु राहु के प्रभाव से उसमें उग्रता तेजस्विता तथा भौतिकता का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा साहस एवं पराक्रम का भी वे अवसरानुकूल प्रदर्शन करेंगी। वह एक भौतिकतावादी महिला होंगी जिससे पाश्चत्य साहित्य एवं संस्कृति के प्रति उनका पूर्ण झुकाव रहेगा। सांसारिक कार्यो में वह दक्षता का परिचय देंगी एवं अपने कौशलपूर्ण कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी।

आपकी पत्नी श्यामवर्ण की आकर्षक महिला होगी एवं उनका कद भी सामान्य रहेगाा यद्यपि अग्नितत्व राशि एवं शुष्क ग्रह राहु के प्रभाव से शारीरिक संरचना में पतलापन होगा लेकिन आकर्षण विद्यमान रहेगा। साथ ही अपने सौन्दर्य की अभिवृद्धि करने के लिए वह सौन्दर्य प्रसाधनों का भी समयानुसार प्रयोग करेंगी। उनके अंग प्रत्यंगों में भी पुष्टता रहेगी जिससे व्यक्तित्व में भी आकर्षण बना रहेगा एवं लोग उनसे प्रभावित होंगे इसके अतिरिक्त आधुनिक भौतिक उपकरणों या वस्तुओं के प्रति मन में विशिष्ट लगाव रहेगा।

राहु की सप्तम भाव में स्थिति के कारण आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व कोई प्रक्रिया टूट भी सकती है। आपका विवाह सामान्यतया विज्ञापन द्वारा सम्पन्न होगा परन्तु विशिष्ट परिस्थितियों में आप अपनी इच्छा के अनुसार भी विवाह कर सकते है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन यद्यपि सुखी रहेगा परन्तु दोनों अपनी स्वाभिमानी प्रवृति तथा असहिष्णुता के भाव के कारण स्वयं के लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे। अतः यदि संयम से दोनों कार्य लें तो संबंधों में मधुरता आ सकती है ।

आपका विवाह किसी साधारण परिवार से सम्पन्न होगा एवं उनका सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति भी सामान्य रहेगी। सास ससुर से भी संबंधों में विशेष मधुरता नहीं रहेगी एवं एक दूसरे के प्रति सामान्य एवं स्नेह की भावना में न्यूनता रहेगी अतः विशिष्ट अवसरों पर ही आपका मेल मिलाप होगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा एवं श्रद्धा का भाव नहीं होगा एवं सुख दुख में उनका कोई ध्यान नहीं रखेंगी साथ ही देवर एवं ननद भी उनके उग्रव्यवहार से अप्रसन्न रहेंगे एवं उन्हें यथोचित सहयोग एवं सम्मान प्रदान नहीं करेंगे। इससे परिवार में अशांति होगी।

साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं रहेगी एवं इससे आपको व्यापार या किसी योजना में लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः साझेदारी की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। इसके प्रभाव से आपकी ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि के प्रति श्रद्धा रहेगी तथा यत्न पूर्वक इसके ज्ञानार्जन करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी कुछ कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आप के पास पैतृक सम्पत्ति रहेगी लेकिन वह अधिक नहीं होगी साथ ही उसका उपयोग भी आप अच्छी तरह करने में असमर्थ से रहेंगे। आपके संबन्धी भी आपकी जमीन जायदाद आदि पर अपना दावा कर सकते है जिससे अनावश्यक तर्क विर्तकों के साथ वातावरण अप्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके प्रभाव से पारिवारिक कलह भी हो सकता है। अतः यह जायदाद सन्तुष्टि की जगह असन्तुष्टि का भाव ही उत्पन्न करेगी।

विवाह के समय दहेज आदि आपको मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा तथा ससुराल पक्ष से किसी निश्चित रकम के बारे में कोई विवाद भी हो सकता है जिससे दाम्पत्य जीवन की मधुरता प्रभावित हो सकती है। आपको न्यूनाधिक रूप से बीमा अवश्य कराना चाहिए चाहे वह किसी का भी हो इससे आपको न्यूनाधिक लाभ अवश्य प्राप्त होगा यद्यपि जीवन में आपको यहां चोरी आदि की संभावना नहीं है तथापि सावधान अवश्य रहना चाहिए। आप स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित धनार्जन करेंगे तथा विशिष्ट धन लाभ के भाव की अल्पता रहेगी। आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन में आप स्वस्थ रहकर अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे परन्तु वृद्धावस्था में यदा कदा आप शारीरिक अस्वस्थता प्राप्त करेंगे लेकिन इसका विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप धर्म तथा धार्मिक कार्य कलापों का विरोध नहीं करेंगे परंतु स्वयं की इसमें कोई विशेष रूचि नहीं रहेगी। साथ ही इच्छा पूर्वक किसी भी धार्मिक ग्रंथ के अध्ययन के इच्छुक भी नहीं रहेंगे लेकिन ईश्वर की सत्ता में आपका पूर्ण विश्वास रहेगा तथा इसी परिपेक्ष्य में आप व्रतादि का भी आचरण करेंगे। आप दैनिक पूजा पाठ भी सम्पन्न करेंगे या इस उदद्शेय की पूर्ति के लिए प्रतिदिन किसी मंदिर या अन्य पूजास्थल में जा सकते है। आप धार्मिक कार्य कलापों में विशेष व्यय करना उचित नहीं समझते। इसके साथ ही अन्य विषयों में उच्चशिक्षा अर्जित करने के लिए विशेष उत्सुक रहेंगे लेकिन धर्म एवं भाग्य को आप अपनी विचार धारा में सम्मिलित कम ही करेंगे। आपकी अर्न्तप्रज्ञा विकसित रहेगी तथा शरीर में आत्मा को स्वीकार करेंगे।

आपके विचार में जीवन कर्म प्रधान होना चाहिए तथा भाग्य इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। अतः अन्य जनों को हमेशा कार्य करने की शिक्षा देंगे तथा भाग्य पर अल्प विश्वास करने के लिए कहेंगे लेकिन प्रौढ़ावस्था में आप स्वयं कर्म की अपेक्षा भाग्य की महत्ता को अधिक मात्रा में अनुभव करेंगे तथा आपके विचार में भाग्य की प्रबलता के बिना कर्म का कोई विशेष महत्व नहीं है। आपकी लम्बी दूरी की यात्राएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इनसे विशेष लाभ भी नहीं होगा लेकिन समाज में सम्मानीय तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आप अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के फल से मध्यमायु में शुभ फल प्राप्त करेंगे तथा इस समय सुखी रहेंगे लेकिन वृद्धावस्था में किंचित परेशानी हो सकती है। साथ ही पौत्रादि का सुख भी मध्यम ही रहेगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही चन्द्रमा भी दशम भाव में ही स्थित है। कुम्भ राशि वायु एवं चन्द्रमा जलतत्व युक्त ग्रह है अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र परिवर्तनशील होगा तथा इसमें बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं की प्रधानता रहेगी लेकिन परिवर्तन से आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सफलता मिलती रहेगी।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए जलविभाग, वस्त्र उत्पादन फैक्टरी, स्टेनो ग्राफर, कैमिकल्स, कार्यालय सहायक, सचिव, जलसेना, जहाजरानी विभाग अनुकूल रहेंगे। इन विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता मिलेगी तथा मानसिक रूप से भी आप सतुष्टि की अनुभूति करेंगे।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए जल से उत्पन्न पदार्थों यथा शंख मोती प्रबाल, मछली, मिट्टी के खिलौने, बालू ईट आदि का व्यापार से वांछित उन्नति एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही द्रव्य पदार्थो यथा दूध, घी, दही, सफेद एवं मूल्यवान वस्त्र, रेशम या मदिरा आदि से भी आप वांछित लाभ अर्जित कर सकते है। यदि आप जीवन में विशेष लाभ उन्नति एवं धन अर्जित करना चाहते है तो आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार को प्रारम्भ करना चाहिए। इससे आपके स्तर में वृद्धि होगी तथा कार्य क्षेत्र में नवीन आयाम स्थापित करने में समर्थ होंगे।

चन्द्रमा की दशम भाव में स्थिति के प्रभाव से आपको जीवन में वांछित सम्मान एवं किसी उच्चपद की प्राप्ति होगी परन्तु चन्द्रमा की अपनी राशि से अष्टम भाव में स्थिति के प्रभाव से इसमें विलम्ब होगा तथा वांछित सम्मान एवं पद प्राप्त करने में अनावश्यक समस्याओं का सामना भी करना पड़ेगा लेकिन इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए तथा ईमानदारी से अपने कर्तव्य मार्ग पर तत्पर रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त किसी महिला के सहयोग से आप समय समय पर वांछित लाभ एवं सम्मान अर्जित करेंगे।

आपके पिताजी शांत एवं विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। अपने कार्य क्षेत्र में वे एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग उनको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सहयोग का भाव होगा तथा आपकी शिक्षा दीक्षा का पूर्ण प्रबन्ध करेंगे एवं आपको जीवन में एक योग्य व्यक्ति देखकर सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सहयोग का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन में तत्पर होंगे लेकिन तृतीयेश की अपने भाव से अष्टम भाव में स्थिति के प्रभाव से यदा कदा वैचारिक तथा सैद्धांतिक मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में यदा कदा वैमनस्य या कटुता का भाव उत्पन्न हो सकता है। अतः आप दोनों को ऐसी स्थिति की यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं तथा इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईमानदारी तथा सत्य का अनुपालन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक उनको पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही आप जब भी जिस वस्तु की कामना करते है आपको उसकी प्राप्ति भी हो सकती है। आप शिक्षक, बैंक अधिकारी, वकील कम्पनी या सरकारी अधिकारी के रूप में व्यवसायिक सफलता अर्जित कर सकते है या इन लोगों से आपको समय समय पर विशिष्ट लाभ की प्राप्ति हो सकती है। इसके प्रभाव से आप मित्रों के संबंध में भाग्यशाली रहेंगे तथा उनसे आपको समय समय पर इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। मित्रों से आप को जीवन में उचित प्रोत्साहन भी प्राप्त होगा जिससे आपकी उन्नति होगी तथा वे आपसे वयस्क एवं अनुभवी होंगे।

आपका सामाजिक स्तर उच्च रहेगा तथा बड़े बड़े अधिकारी मंत्री नेता या महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका मेल जोल या संबंध रहेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही महत्वपूर्ण लोगों के प्रभाव से आप उचित लाभ एवं ख्याति प्राप्त करेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपके संबंध सामान्यतया मधुर रहेंगे आवश्यकतानुसार उनका सहयोग भी मिलता रहेगा। आपके आय के साधन मुख्य कार्य के अतिरिक्त अन्य भी हो सकते है जिससे की आपका धनार्जन अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में आप समयानुसार कोई विशिष्ट सम्मान भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते है। इसके अतिरिक्त बाएं कान के दर्द से यदा कदा परेशान हो सकते है परन्तु सामान्य जीवन आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगे।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप धन का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति होंगे तथा अवसरानुकूल बचत भी करेंगे। आप समान्यतया अनावश्यक व्यय कम ही करेंगे। साथ ही धैर्य का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा। आप धन की कीमत समझेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक इसका उपयोग करेंगे लेकिन आपको अपना पूंजीनिवेश सामान्य कंपनियों या अन्य स्थानों में नहीं करना चाहिए।

आपकी जीवन में उन्नति शनैः शनैः सम्पन्न होगी क्योंकि आप किसी कार्य को अत्यंत ही सोच समझकर धैर्य पूर्वक सम्पन्न करते हैं तथा आर्थिक स्थिति भी युवावस्था के बाद ही विशेष अनुकूल हो सकती है। अतः आपको आर्थिक क्षेत्र में किसी नाटकीय परिवर्तन की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त आप लम्बी अवधि के निवेशों से लाभान्वित हो सकते है।

आपका सामान्य व्यय परोपकार संबंधी कार्यो पर होगा तथापि यदा कदा कोई अनावश्यक व्यय भी हो सकता है। अतः इससे आपको सावधानी रखनी चाहिए। यात्राओं से आपको आनन्द की अनुभूति होगी तथा समय समय पर इनसे लाभ भी होता रहेगा। आप जीवन में विदेश यात्रा अवश्य करेंगे। यह यात्रा आपकी धर्म या धार्मिक कार्यो से संबंधित होगी अथवा किसी अन्य व्यक्ति या संबंधी के सहयोग से आपको यह सुअवसर प्राप्त होगा। यह चाहे यात्रा किसी भी संदर्भ में हो आपके लिए आर्थिक एवं अन्य दृष्टियों से लाभदायक रहेगी तथा विभिन्न दर्शनीय स्थानों की सैर करने का भी आपको अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपको बायीं आंख में कोई परेशानी हो सकती है। अतः इसका उचित ध्यान रखना चाहिए।

नक्षत्रफल

आप धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मार्जार, योनि सिंह, नाड़ी मध्य तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "गु" या "गू" अक्षर से होगा।

आप एक सदाचार से युक्त पुरूष होंगे तथा आपका चाल चलन भी उत्तम रहेगा जिसे समाज में अन्य लोग आपकी प्रशंसा करेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका अनुकरण भी करेंगे। आप एक व्यवहार कुशल व्यक्ति भी होंगे तथा अन्य जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही मधुर तथा अपनेपन का आभास करने वाला होगा। इस प्रकार आप अन्य व्यक्तियों के लिए सर्वदा आदर एवं सम्मान के पात्र रहेंगे एवं सभी लोगों पर आपका प्रभाव भी रहेगा। धन धान्य की आप में अधिकता रहेगी अतः एक धनाढ्हय पुरूष के रूप में आप जाने जाएंगे। आपमें शारीरिक बल पूर्ण मात्रा में रहेगा तथा स्वभाव से करूणा का भाव विद्यमान रहेगा अतः दीन दुःखियों पर आपकी विशेष कृपादृष्टि रहेगी। इस प्रवृति से आपकी दूर दूर तक ख्याति रहेगी साथ ही समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति भी रहेंगे एवं सभी लोगों पर आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा।

आचारदातादरचारूशीलो धनाधिशाली बलवान् कृपालुः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्धनिष्ठा महाप्रतिष्ठो सहितः नरः स्यात्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ आचरण वाला, व्यवहार कुशल, धनाढ्य, बलवान, दयालु और अतिप्रतिष्ठा वाला होता है।

आपके मन में कभी भी नैराशा की भावना उत्पन्न नहीं होगी तथा हमेशा आशान्वित रहकर जीवन व्यतीत करेंगे। अतः मानसिक कष्टों की अनुभूति आप अल्प मात्रा में ही करेंगे। साथ ही सर्व प्रकार के भौतिक सुख संसाधनों से युक्त होकर आप इनका प्रसन्नता पूर्वक जीवन में उपभोग करेंगे।

आशालुर्वसुमान वसूद्रुजनिः पीनोरूकंठः सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक आशान्वित, धनी, मोटी जांघ तथा कंठ वाला एवं सुखी होता है।

संगीत शास्त्र के प्रति आपकी गहन रूचि रहेगी तथा इसमें आप प्रयत्नपूर्वक सफलता तथा ख्याति प्राप्त कर सकेंगे। आपको सम्पूर्ण कुल तथा परिवार में सम्मान तथा स्नेह प्राप्त होगा एवं बन्धुवर्ग से भी आप पूर्ण रूपेण सम्मानित्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के स्वर्ण आभूषण तथा अन्य बहुमूल्य रत्नों से भी आप युक्त रहेंगे एवं किसी न किसी रूप में इसमें समृद्धि प्राप्त करेंगे। आप कई लोगों के मध्य एक प्रतिष्ठित तथा प्रभावशाली व्यक्ति होंगे।

इनसे आपको पूर्ण आदर प्राप्त होगा एवं आपकी आज्ञा पालन करने के लिए ये सर्वदा तत्पर रहेंगे।

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
जातो नरो धनिष्ठायाम् शतैकस्यपतिर्भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक गान विद्या का प्रेमी, परिवार में सम्मानित, सुवर्ण मोती आदि रत्नों के आभूषणों से सुशोभित एवं सैकड़ों आदमियों का अधिपति होता है।

आपमें दनशीलता का भाव नेसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगा तथा समाज में दीन दुःखियों एवं जरूरतमन्द लोगों के प्रति आप इस प्रवृति का नित्यानुपालन करते रहेंगे। साथ ही वीरता एवं बहादुरी के गुणों से भी आप सम्पन्न रहेंगे तथा साहस एवं निर्भयता से अपनी समस्याओं का सामना करके उनका समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त धन के प्रति आपके मन में लालच का भाव रहेगा जिससे कभी कभी आपके लिए अनावश्यक समस्याएं तथा सहयोग उत्पन्न होंगी।

दाता आढ्यः शूरोगीतप्रियो धनिष्ठासु धन लुब्धः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, धनी, शूरवीर, गीतप्रिय और धन का लोभी होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

कुम्भ राशि में उत्पन्न होने के कारण आपकी नासिका ऊंची रहेगी तथा ललाट एवं मुखभाग विस्तृत होंगे साथ ही हाथ, पैर तथा कटिभाग भी स्थूलता से युक्त होंगे। आपके शरीर में कोमलता का ाभाव अल्प रहेगा फिर भी आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। समाज में आपके संबंध विस्तृत रहेंगे। उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा एवं यदा कदा आप किसी का भी कहना

नहीं मानेंगे इससे अन्य लोग आपसे असन्तुष्ट से रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में सामादृय श्रद्धा का भाव रहेगा। साथ ही दूसरों की संतति के प्रति भी आपके मन में विशेष स्नेह की भावना भी रहेगी। आपके स्वभाव में कभी कभी दुष्टता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा एवं आलस का भी आप प्रदर्शन करेंगे। शिल्प विद्या या चित्रकारी के आप ज्ञाता होंगे तथा इस क्षेत्र में विशेष सफलता अर्जित करने में सफल हो सकेंगे। इसके अतिक्ति कभी कभी आप मानसिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

विविध प्रकार के कार्यों को सम्पन्न करने में आपकी रूचि रहेगी तथा इनमें आप निपुणता भी प्राप्त करेंगे। साथ ही नाना प्रकार के शास्त्रों का भी आपको ज्ञान रहेगा एवं एक विद्वान के रूप में आपका सम्मान रहेगा। आप में हिंसक प्रवृतियों की न्यूनता रहेगी एवं स्वभाविक शान्ति विद्यमान रहेगी। साथ ही शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। एवं वे सभी आपसे भयभीत रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप अप्रत्यक्ष रूप से कठोर कार्यों को सम्पन्न करेंगे या उसमें अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही यात्रा एवं भ्रमण कार्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा अपने अधिकांश समय को इसी पर व्यतीत करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लोलुपता का भाव विद्यमान रहेगा। आप हमेशा दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा भी अपने मन में रखेंगे एवं इसके लिए यत्नशील भी रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में प्रायः उतार चढ़ाव आते रहेंगे एवं इसमें विषमता बनी रहेगी कभी अत्याधिक मात्रा में धन प्रप्ति होगी तो कभी अति न्यून मात्रा में। इसके अतिरिक्त चन्दन के अनुलेपन तथा पुष्प सुगन्ध में भी आपकी रूचि रहेगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

समाज में आप एक श्रेष्ठविद्वान होंगे तथा सर्वत्र आपकी ख्याति रहेगी परन्तु अन्य विद्वान लोगों को आप उचित मान सम्मान प्रदान नहीं करेंगे। इसके साथ ही आपके स्वभाव में सुशीलता का अभाव रहेगा जिससे आपके व्यवहार से अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे एवं इसमें आपके सम्मान तथा प्रभाव में भी न्यूनता आएगी।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।

आपको जीवन में सर्वत्र विजय तथा सफलता अर्जित होती रहेगी साथ ही आप एक सच्चरित्र पुरूष होंगे तथा आपका चरित्र अन्य जनों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय रहेंगे। आप धन सम्पत्ति से प्रायः युक्त रहेंगे। गुरूजनों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा तथा इनको हार्दिक सेवा करने के लिए आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे। आपका परिवार भी विशाल रहेगा तथा अपनी जाति या वर्ग के लोगों के लिए जो भी श्रेष्ठ या लाभदायक कार्य होगा उसको आप पूर्ण करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे अतः बन्धुवर्ग के मध्य आप पूर्ण रूप से आदरणीय तथा सम्मानित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सर्वप्रकार के गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा इनका अनुपालन करते हुए प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन करेंगे।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरूभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपके गर्दन की लम्बाई सामान्य से अधिक दृष्टिगोचर होगी एवं नसें भी शरीर से बाहर प्रदर्शित होती रहेगी। साथ ही महिला वर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे एवं उनकी सहायता एवं सहयोग के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ऊध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आपके मन में दानशीलता की प्रवृति प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगी तथा जीवन में आप अवसरानुकूल यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करते रहेंगे। साथ ही अन्य जनों के उपकार संबंधी कार्यों को करने में भी आप प्रायः उद्यत एवं प्रयत्नशील रहेंगे। आपके मन में कृतज्ञता की भावना का भी समावेश रहेगा। साथ ही कई प्रकार के वाहन साधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपकी आखें भी सुन्दर होगी एवं बुद्धि सरलता से युक्त रहेगी एवं किसी भी प्रकार के प्रपंच या धोखे से आप विहीन रहेंगे। इसके अतिरिक्त धन एवं विद्यार्जन करने के लिए आप सर्वथा प्रयत्नशील रहेंगे। आप अपने सत्कार्यों के द्वारा तथा स्नेहशील व्यवहार से समाज में ख्याति प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप अपने बाहुबल से धनार्जन करेंगे तथा साहस एवं निर्भयता पूर्वक अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।

पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने वाली होगी तथा आपके मन में दया एवं करूणा का भाव अल्प रूप से ही विद्यमान रहेगा परन्तु आप एक साहसी पुरूष होंगे। अतः आपके अधिकांश कार्य साहस एवं निर्भयता से ही सम्पन्न होगे। आप के स्वभाव में क्रोध की भी प्रवलता रहेगी तथा कभी कभी आप अकारण ही शीघ्र क्रोधित भी हो जाएंगे।आप में विवाद की प्रवृति भी रहेगी एवं अन्य जनों से परस्पर विवाद प्रायः होता रहेगा। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप बलशाली रहेंगे।

जीवन में आप कभी कभी उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकते हैं। आपका शारीरिक सौन्दर्य मध्यम रहेगा साथ ही यदा कदा आप अपने संभाषण में कठोर शब्दों का भी उपयोग करेंगे जिससे श्रोता तथा अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

सिंह योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी धर्म के प्रति हार्दिक निष्ठा तथा श्रद्धा का भाव रहेगा तथा जीवन में आप यत्न पूर्वक इसका अनुपालन करते रहेंगे। आप प्रायः अच्छे कार्यों को करने के प्रति रूचिशील दौरान आपकी- इन कार्यों से अन्य सामाजिक जन भी लाभान्वित होंगे। आपमें सद्गुणों की भी प्रधानता रहेगी। अतः सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने कुल या परिवार की समृद्धि के लिये आप हमेशा चिन्तित रहेंगे एवं इसे पूर्ण करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण

करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आथिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गंडयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र, वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर एवं धनुराशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मन में चिन्ता, शारीरिक व्याकुलता,

व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के नियमित रूप से उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्णपादुका आदि पदार्थो का दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपको शारीरिक कष्टों से मुक्ति मिलेगी साथ ही अशुभ फलों का प्रभाव खत्म होकर शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर सौ अलग-अलग स्थानों की मछलियों को खाना खिलाना चाहिए।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के पांचवे खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप पढ़ाई में तेज, उच्चशिक्षित, सत्ता पक्ष से लाभ-प्राप्त करेंगे। सुखी माता-पिता से युक्त, अपने घर का भाग्य जगाने वाले, संतान सुख मिलेगा। आप सेवक पुत्र के पिता होंगे। पुत्र प्राप्ति के बाद परिवार में तरक्की होगी। आप सबको साथ लेकर आगे बढ़ने वाले और शूरवीर होंगे, बुढ़ापा सुख से बीतेगा। सरकारी अधिकारियों से मधुर संबंध रखेंगे। यदि राजा सहायक न हो तो फकीर से आपका भला होगा। पारिवारिक उन्नति होगी। पौत्र के जन्म के बाद माली हालात अच्छी हो जाएगी। औलाद की वृद्धि होगी, बुढ़ापे में हर तरह का आराम मिलेगा। मां-बाप का सुख लंबे समय तक मिलेगा। जिंदगी आराम से गुजरेगी। 42 से 47 साल की आयु तक शुभ फल होगा। ज्यों-ज्यों आयु बढ़ेगी, आप का रुतबा अच्छा होता जायेगा। आपको सरकारी विभाग से मान-सम्मान मिलेगा, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, अचानक धन प्राप्ति के भी योग हैं।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया या बुरे काम किये, संतान से झगड़ा किया सरकारी विभाग से बेईमानी की या झूठ बोलने की आदत होगी तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य का मंदा असर पेट पर पड़ेगा और आपका स्वभाव क्रोधी होगा। पत्नी छोड़े या मर जाए या दूसरी शादी भी हो सकती है, ऐसा शक है। स्त्री की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। स्त्री द्वारा अपमानित भी होना पड़ सकता है। लड़के पर भी बुरा असर हो सकता है। काफी दुःखों का सामना करना पड़ सकता है। औलाद की आर्थिक हालात पर बुरा असर होगा। ननिहाल के लिए अशुभ फल रहेगा। झूठ और बेईमानी से धन हानि का भय और दीर्घ रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. झूठ से दूर रहें।
2. किसी के प्रति मन में ईर्ष्या न रखें।

उपाय :

1. बुजुर्गी रस्मों-रिवाज बन्द न करें।
2. साला, जीजा, दोहते या भांजे में से तीन की सेवा करें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा दसवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप कुल की नैया पार लगायेंगे। आपको चीर-फाड़ के या सर्जिकल के सामान से अधिक लाभ होगा। आप चिकित्सक होकर भी डॉक्टर का काम नहीं करें। यदि डाक्टर बन कर डाक्टर का कार्य करते हैं तो अपने पास से दवाई न देवें। आपको माता-पिता का पूरा सुख मिलेगा। आपको मकान और

ससुराल वालों से लाभ मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा।

यदि आप डाक्टर हैं और अपने पास से रोगी को लिक्विड दवाई दी, समाज विरोधी कार्य किये, बड़े-बुजुर्गों का अपमान किया, रात के समय अपने मकान की नींव रखी तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी प्रेमिका या विधवा स्त्रियों के कारण धन की बर्बादी होगी। आप अपने जीवन में धोखेबाजी और तैरते को पानी में डुबाने वाले होंगे। आपको दुर्घटना का शिकार भी होना पड़ सकता है। किसी भी औरत के साथ नाजायज संबंध आपकी बर्बादी का कारण बन सकता है। आपका मां से अच्छा सलूक नहीं रहेगा। दवाई के व्यापार से हानि होगी। आपको चोर-डाकू, जुआरी एवं शराबी लोगों से नुकसान हो सकता है। नौकरी-व्यापार में बार-बार तबदीली का योग है। आपकी माता को 10 वर्ष बीमारी हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोर-डाकू से संबंध न रखें।
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पीयें।

उपाय :

1. दूध को फटा कर दूध का पानी पीयें (खराब सेहत के समय)
2. सूर्यास्त के बाद दूध न पियें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में पहले खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से आप अंदर-बाहर एक जैसे, संतान सुख से युक्त, और प्रसन्न रहेंगे। आप विद्वान, शूरवीर, एवं साहसी है। आप बुरे के साथ भी नेकी करेंगे। आप नेकी छोड़ने से कलंकी बन जाएंगे। आप परिवार के भाग्य को जगाने वाले हैं। आप साधू-सन्यासी की सेवा करेंगे। 18 वर्ष के बाद सरकारी सेवा में या सलाहकार के कामों में रुचि लेंगे। शत्रु से आप बचते रहेंगे। आप अगर नौकरी करते हैं तो 35-40 वर्ष की आयु तक ही नौकरी करेंगे। राज्य सरकार से लाभ मिलेगा। आप पलट कर आक्रमण करने वाले हैं। आपको छोटे बहन-भाई का सुख मिलेगा। आप 28 साल के बाद जीवन में उन्नति करेंगे। आप किसी की सच्चाई या नेकी को सदा याद रखेंगे। आपके उच्च पदाधिकारियों से अच्छे संबंध रहेंगे। लोहा, लकड़ी तथा मकान के कामों में लाभ पाएंगे। परिवार के लोगों के साथ मिल कर काम करें तो बहुत अच्छा रहेगा। आपके मुंह से निकली बुरी बात का दूसरों पर बुरा असर होगा। आपका आर्शीवाद लोगों को फलेगा।

यदि आपने मुफ्त माल या दान लिया, जूठन खाया और झूठ बोला, माता को कष्ट दिया या माता का विरोध किया, अपशब्द बोलने की आदत हो तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से शारीरिक कष्ट की आशंका है। मुफ्त की चीजें नहीं फलेंगी। आलस्य से कई बार आप अपने बने-बनाये काम

बिगाड़ सकते हैं। मानसिक रोग या तनाव हो सकता है। दुर्घटना का भय है, अतः वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। आपकी माता को आप्रेशन का भय है। भाई को परेशानी या आपको बहन के सुख का अभाव रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मुफ्त का माल या दान न लेवें।
2. हाथी दांत घर में न रखें।

उपाय :

1. बड़ा भाई जीवित हो तो लाल रुमाल रखें।
2. भाई और साले की सेवा करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध पांचवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका जीवन खुशहाल रहेगा। आपकी ज्योतिष विद्या तथा आयुर्वेद शास्त्र में रुचि रहेगी। आपका वाक्य ब्रह्मा जी के मुंह से निकली बात के समान होगा। आपको अपने भाई से सुख मिलेगा और लाभ होता रहेगा। आपको जीवन में औलाद सुख मिलेगा। आप बिना सोचे-समझे भी कुछ बात कह दें, तो वह सच हो जाएगा। आपका चरित्र अच्छा होगा। आपकी जद्दी जायदाद, गृहस्थी और औलाद पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। 34 वर्ष की उम्र के बाद आपका भाग्य पूरी बुलंदी पर आ जाएगा। आप पूर्ण ज्ञानी और तेजस्वी प्रभाव के व्यक्ति होंगे। आपके सगे संबंधियों या किसी भी व्यक्ति पर आपका अच्छा असर रहेगा। आप अच्छे प्रबंधकर्त्ता हैं। अकस्मात् धन की प्राप्ति के भी योग है। आपको अपने जीवन में बहुत अच्छे दिन देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा। आपको पराविद्या, तंत्र-मंत्र पर पूर्ण भरोसा रहेगा। धर्म, आध्यात्म और ईश्वर भक्ति के प्रति आपकी रुचि अच्छी रहेगी। आपकी बुद्धि तेज है। आपको बुद्धि के खजाने और विद्या का पूर्ण लाभ मिलेगा।

यदि आपने संतान का विरोध किया सरकारी अधिकारियों से झगड़ा किया, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, आपके घर में बांस का वृक्ष हुआ तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आप कभी-कभी बहुत कड़की बातें करने लगेंगे। इस बात का परहेज रखें। संतान पर कष्ट के दिनों में आप अधिक ही चिंतित हो जाया करेंगे। आप कल्पना लोक में भ्रमण करेंगे या काल्पनिक डर से भयभीत रहेंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. गऊ मुख घर में रिहाइश न करें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :

1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. तांबे का पैसा सफेद धागे में डाल कर गले में धारण करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति ग्यारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको पिता का सहयोग प्राप्त होगा। भाई आपके मदद्गार हो सकते हैं और उनसे लाभ भी होगा। कारोबार में भाई का साथ भाग्य जगाता है। आपके जीवन के 16 वर्ष से 28 वर्ष तक का समय भाग्य आपका खूब साथ देगा। आपके भाग्य से ससुराल वालों को बहुत लाभ होगा आपको धन-संपदा प्राप्त होगी। आप गरीबों की मदद करेंगे तथा धर्म में विश्वास रखेंगे, तो आपका भला होगा। पिता की उम्र तक आपकी हालात अच्छी रहेगी। आपको लाभ तो होगा परंतु आप कर्जदारी में भी रहेंगे। सरकारी कामों से संबंधित कमाये धन में बहुत बरकत होगी। आपके जीवन में आमदनी के और भी कई रास्ते हो सकते हैं। आप दूसरों के मदद्गार होंगे आप अपनी आमदनी का अपव्यय भी कर सकते हैं या आप अपने धन को संभाल कर नहीं रख सकेंगे। आपकी दोस्ती से दूसरों को लाभ मिलेगा। आप अपने भाई-बंधुओं, दोस्तों के साथ अच्छा व्यवहार रखेगें। आप अपनी किस्मत पर भरोसा नही करेंगे।

यदि आपने पूजा स्थान घर में रखा, चाल-चलन खराब किया, घर में या घर के पास सूखा पीपल का वृक्ष हुआ तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से परंतु पिता की मृत्यु के बाद कोई सहायता नहीं करेगा। आप परिवार के साथ रह कर सुखी परंतु अकेले रहने में दुःखी रहेंगे। आप की आंखों की नज़र कमजोर हो सकती है। बुढ़ापे में आपकी किस्मत ढीली हो जाएगी। परिवार कितना बड़ा हो मगर कफन पराया मिले ऐसा शक है। आप शराब-बीयर आदि न पीएं वरना आपके पास धन नहीं टिकेगा। पिता की मौत के बाद आपके भाग्य पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आपकी मौत शान और सम्मान से होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अण्डे न खावें।
2. पूजा स्थान घर में न रखें। धर्म मंदिर में पूजा करें।

उपाय :

1. पीला रुमाल पास रखें।
2. लावारिस लाश को कफन दान देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान

होंगे। स्त्री, संतान सुख मिलेगा और स्वस्थ एवं खुश रहेंगे। आपकी यात्राएं अधिक और सफल होंगी। आपकी पत्नी अपनी इच्छा से सभी काम करेगी। विवाह के बाद घर में कुआं खुदवाना शुभ रहता है। आपकी स्त्री और संतान का बुरा प्रभाव 34 वर्ष की आयु में दूर होगा। शादी के चार साल तक खूब ऐशो आराम पाएंगे। आप में आध्यात्मिक रुचि और शक्ति निश्चित होगी। आपको राजयोग के संयोग से जीवन में सुख प्राप्त होगा। यदि आप मामा और मौसी के कारोबार में साथ दें तो उनका व्यापार सफल होगा। आपको उत्तम भवन और वाहन सुख मिलेगा। माता स्वस्थ और बहुत दिनों तक आपको सुख देगी। आप अपने खानदान या गांव, देश-विदेश में प्रसिद्ध होंगे। आप उत्तम भोजन, भ्रमण एवं शयन के शौकीन होंगे। नौकरी-व्यापार पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। सामान्यतया आप सरकारी विभाग से लाभ पायेंगे, उच्च पद या राजकीय सुख से युक्त रहेंगे।

यदि आपने सुरमें से संबंधित काम किया, 21-22, 24-25 वर्ष आयु में विवाह किया, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी माता और आपकी पत्नी में झगड़ा होता रहेगा। आपके लिए इश्क और प्रेम आपकी तबाही का कारण बनेगा। आपकी पत्नी आपके खानदान के लिए मनहूस होगी। गंदे प्रेम संबंध का बुरा फल मिलेगा। आप नशे आदि में पड़ कर बर्बाद हो सकते हैं। जीवन में दो विवाह संभव हैं। पत्नी के गर्भाशय में रोग या गर्भाशय निकाल दिया जायेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज खराब न होने दें।

उपाय :

1. कुएं में केसर डालें।
2. चार आड़ू की गुठली में सुरमा भर कर वीराने में दबायें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि तीसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप स्वस्थ, विद्वान, विवेकी और खर्चीले स्वभाव के होंगे। धन की कमी नहीं रहेगी। आपके पास बहुत धन आएगा। आप पराए लोगों की मदद करेंगे। आपको चोरी और धन नाश की तरफ से सतर्क रहना चाहिए। आप सबकी मदद करेंगे मगर वह व्यक्ति दूसरों का काम बिगाड़ेगा, और खुद आराम पाएगा। आपके जीवन में अड़चने भी पैदा हो सकती हैं। आप साहसी होंगे। भाई-बहन से सामान्य सुख के आसार हैं। आप दुःसाहस करने में भी बाज नही आएंगे। लोहा/मशीनरी से संबंधित कामों से धन लाभ होगा।

यदि आपने चोरी-ठगी की, घर का मुख्य दरवाजा पूर्व या दक्षिण दिशा में हुआ,

दूसरे लोगों के काम बिगाड़े तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारणवश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से शराब पीना, मांस खाना अच्छा फल नहीं देगा। नगद धन का अभाव रह सकता है। नर संतान को कष्ट की आशंका है। आपकी आंखों की नज़र कमजोर हो सकती है। छोटे भाई से दूरी या उसका सुख न होगा। भाई-बंधु आपकी नेकी को भूल जाएंगे। चोरी-ठगी करने पर भी धन की कमी रहेगी। कुत्ते के काटने का भय रहेगा। मकान बनाने में बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. शराब-मछली का सेवन न करें। मछली का शिकार न करें।
2. कीकर-बेरी का वृक्ष घर में न लगावें।

उपाय :

1. तीन कुत्तों को भोजन का हिस्सा देवें।
2. मकान के अंत में अंधेरी कोठरी बनावें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से 21 वर्ष के पहले या 29वें वर्ष विवाह हो जाए तो बुरे फल की आशंका बनती है। आपका संबंध राजनीतिज्ञों से रहेगा। अगर आप सरकारी विभाग में सेवारत हैं तो सरकारी विभाग में पदोन्नति एवं पुरस्कार मिलने की आशा है। धन और मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। आप बिजली के काम, पुलिस या जेल विभाग की नौकरी से आजीविका चला सकेंगे। शेयर/लाटरी में दिवालिया हो सकते हैं। आपको कन्या संतान का सुख विवाह के बाद जल्द ही परंतु पुत्र सुख में विलंब हो सकता है। विदेश की यात्रा भी हो सकती है। आप जन्म स्थान से बाहर रह कर ही सुखी रह सकेंगे। यदि आप अपने धन पर नियंत्रण नहीं रख सके तो सगे-संबंधी निश्चित रूप से धन की क्षति करने में पीछे नहीं रहेंगे।

यदि आपने अपने पास दोहता रखा या कुत्ता पाला, समाज में बदनामी के कार्य किये, पत्नी से मार-पीट की तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से भाई-बन्धु आपकी संपत्ति खा जाएंगे। भाई द्वारा भी आपके धन का दुरुपयोग हो सकता है। आपको साझेदारी के व्यवसाय, बिजली के सामान की दुकानदारी या व्यवसाय से हानि की आशंका है। पुलिस, जेल विभाग की नौकरी में धोखा-धड़ी की तो आपकी आयु क्षीण होगी। पत्नी से मन-मुटाव रह सकता हैं इसका कारण आपका शंकाग्रस्त रहना बताता है। पत्नी से जुदाई मुकद्दमेबाजी हो ऐसी शंका है। आपको राजदरबार से परेशानी या काम काज में रुकावट नहीं आएगी। आपके जीवन में आपकी बदनामी भी हो सकती है। जीवन में संघर्ष रहेगा। पारिवारिक दशा बहुत अच्छी नहीं रहेगी। धन-संपत्ति एवं पत्नी के सुख में अभाव रह सकता है। कोई गर्भपात संभव है। पत्नी को सिरदर्द की बीमारी

रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. घर में कुत्ता न पालें।
2. बिजली, पुलिस व जेल विभाग में काम न करें।

उपाय :
1. घर में 2 चांदी की ईंटें कायम करें।
2. नारियल का दान करें।
3. चांदी की डिब्बी में चांदी का चौरस टुकड़ा रख कर गंगा जल भर कर रखें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पहले खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप सुखी, धनी, मेहनती होंगे। आपकी तरक्की अधिक तबदीली कम रहेगी। आप अपने पिता के लिए वरदान सिद्ध होंगे। आप पिता की सेवा करेंगे। आप सरकारी विभाग में सेवारत होंगे तो एक अच्छे सरकारी आफिसर हो सकते हैं। यात्रा का आदेश पत्र प्राप्ति के बावजूद यात्रा न होगी। आपकी आजीविका निरंतर चलती रहेगी। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में भी हो सकता है। आपको शक्ति मिलेगी। आपके भाग्य में शुभ फल प्राप्त होगा। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। माता पर भी अच्छा प्रभाव ही रहना चाहिए। परंतु यह कोई जरूरी नहीं है कि माता पर शुभ प्रभाव ही पड़े। आप लाखों का लेन-देन करेंगे परंतु धन जमा होने में आशंका है। आप गुरु-पिता के सेवक होंगे।

यदि आप अपने पिता से दूर रहे, रिश्तेदारों को बर्बाद करने की कोशिश की या मकान को बिना कारण बेचा तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से जहां आपका जन्म होगा रिश्तेदार तबाह हो जाएंगे। आपके मन में काल्पनिक फिक्र पैदा हो सकती है। पुत्र को कोई कष्ट उत्पन्न होगा। आप पर बुरा असर पड़ सकता है। आपकी गृहस्थी पर कुछ बुरा प्रभाव पड़े ऐसी आशंका है। नाभि के नीचे की बीमारियां होंगी या आपको गुप्तांग में बीमारी हो सकती है। आपको लंबी या विदेश की यात्रा बीच में छोड़ कर वापिस आना पड़ सकता है। आपको संतानोत्पत्ति की चिंता बनी रहेगी। पोते के जन्म के बाद सेहत खराब हो सकती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. बकरी न पालें या बकरी की सेवा न करें।
2. गली के आखिरी मकान में रिहाईश न करें।

उपाय :

1. लाल रुमाल पास रखें।
2. काले-सफेद कुत्ते की सेवा करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे औंर उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगेऔर आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्धबहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगीजिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभुषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि-विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिबिधियों मेंबढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दुसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्धउत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकि शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारणबेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोइ विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंग या पयर्टन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ,अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगें।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ऊँ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शत्रुपक्ष प्रबल रहेगा फलतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। साथ ही आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा अतः आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में भी न्यूनता आएगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में भी कई प्रकार से व्यवधान आएंगे तथा उनमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी दूर समीप की भी कोई यात्रा हो सकती है। आपके सांसारिक कार्य भी इस समय अल्प मात्रा में ही सफल होंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी धन अधिक मात्रा में व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः इस मास को सावधानी तथा संयम पूर्वक व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतःआप सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से सहयोग तथा लाभ अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को परिश्रमपूर्वक सफल बनाने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त किसी नवीन द्रव्य या वस्त्र की भी प्राप्ति करने में भी आप सफल रहेंगे। इस प्रकार मध्यम रूप से आप अपने समय को इस मास में व्यतीत करेंगे।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्य शाली रहेगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा आपके उच्चाधिकारी वग! आपसे पूर्ण प्रसतथा सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न होगा। संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलेगा तथा इनकी ओर से आप निश्चिन्त रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। समाज में इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे।साथ ही आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव रहेगा तथा आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार सर्वत्र आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिमता से प्रचुरमात्रा में धन एवं सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आप श्रद्धालु होंगे एवं धर्मानुपालन में तत्पर रहेंगे जिससे समाज में आपके सम्मान में अभिवृद्धि

होगी।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज से आप यथोचित आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान मिलेगा एवं उनसे आप वांछित लाभ भी प्राप्त करेंगे तथा आपसे वे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे इच्छित सहयोग की आपको प्राप्ति होगी। साथ ही आपके अधिकांश शुभ कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। देवता एवं ब्राहमणों में भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करेंगे। सन्तति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगे एवं उनसे आप वांछित सुख भी प्राप्त करेंगे। साथ ही बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्ति आपके पूर्व संकल्प भी इस मास में पूर्ण होंगे जिससे मानसिक रूप से भी शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा धर्मानुपालन में भी आप तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते हैं।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल दायक रहेगा परन्तु न्यूनाधिक अशुभ फल भी होंगे। इस समय आप स्त्रीवर्ग से पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा आपके भाग्य में भी वृद्धि होगी जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय पर पूर्ण होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। इस मास में आपका स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा तथा मन में भी शान्ति रहेगी। अध्ययन के प्रति भी आप की रूचि उत्पन्न होगी तथा इसमें आप सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों एवं संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको इच्छित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस मास में आप को मनोवांछित द्रव्य पदार्थो की भी प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त बन्धुवर्ग में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा विगत असफल आशाओं में भी सफलता प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी या पितरोगों से शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगे। साथ ही रूधिर विकार की भी संभावना रहेगी। अतः इस समय शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सावधान रहें तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

मई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अशुभ अधिक तथा शुभ अल्प मात्रा में रहेगा। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट जनों की संगति प्राप्त होगी जिससे आप कष्ट

प्राप्त करेंगे।साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी जिससे मन में अशान्ति का भाव विद्यमान रहेगा। इस समय शरीर में दुर्बलता रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य कठिन परिश्रम करने के बाद भी सफल नहीं होंगे। इस मास में धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप उपेक्षा का भाव रखेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपको धन हानि होती रहेगी। इस समय मित्रों एवं बन्धुओं से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मन मुटाव रहेगा। साथ ही कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त शत्रुपक्ष से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे तथा जिस कार्य को प्रारम्भ करेंगे उसी में असफलता मिलेगी। अतः संयम पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में शुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप स्त्री एवं पुत्र से वांछित सहयोग अर्जित करेंगें तथा इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि को भी प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त होकर व्यतीत होगा।

जून 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभफल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।साथ ही इस मास आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे। इस समय आपके लाभ मार्ग प्रशस्त रहेंगे अतः आर्थिक स्थिति अत्यंत ही सुदृढ़ रहेगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे एवं कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य भी सिद्ध होगा जिसकी काफी समय से आप प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इस समय सांसारिक कार्यो में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न एवं संतुष्ट रहेंगे। अतः आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

परन्तु शुभफलों के साथ साथ आप समय समय पर अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं जाने या अनजाने में किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा आपको इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त अग्नि आदि से भी आप न्यूनाधिक क्षति प्राप्त कर सकते है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस माह में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सक्षम रहेंगे। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आप का यश भी दूर दूर तक

व्याप्त होगा। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप यथोचित सम्मान अर्जित करेंगे एवं उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे।उच्चाधिकारी वर्ग का आपको पूर्ण आश्रय प्राप्त होगा जिससे आप उनसे प्रचुर मात्रा में लाभ अर्जित करेंगे।साथ ही इस मास में मिष्ठान्न के प्रति आपके मन में विशेष रूचि रहेगी तथा आप प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न ही रहेंगे। इस मास में आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो के द्वारा आप लाभ तथा धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

परन्तु शुभ फलों के मध्य यदाकदा इस मास में अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप शीत या वातजनित रोगों से शारीरिक रूप से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा आपकी बुद्धि किसी ऐसे कार्य को करने के लिए उद्यत होगी जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी। एवं बाद में इसके लिए आप पछताएंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप किंचित धन हानि प्राप्त करेंगे अतः बुद्धिमतापूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे ।साथ ही समाज में सभी लोग आपको हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। साथ ही दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी कार्य करने में तत्पर रहेंगे। शारीरिक रूप से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस मास में बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा आप भी उन्हें इच्छित सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने संकल्पों तथा मानसिक विचारों को मूर्त रूप देने में भी आप सफल सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी अर्जित करेंगे। जिससे यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फल दायक रहेगा।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास में आपके शत्रु प्रबल रहेंगे अतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप अशान्त तथा उद्विग्न रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए।साथ ही आपके व्यापार या नौकरी आदि के क्षेत्र में शिथिलता रहेगी तथा कई अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय आपका कोई कार्य परिवर्तन हो सकता है या छूट भी

सकता है। समाज में अन्य जनों से भी आपका परस्पर विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे आपके सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि की भी संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित से उत्पन्न होने वाले रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा किसी दुर्घटना आदि से रूधिर विकार भी हो सकता है अतः इस मास में आप सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें तथा शारीरिक सुरक्षा की ओर विशेष ध्यान रखें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। इस मास में आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे एवं पुत्र संतति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा ज्ञान प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। आपके प्रभुत्व में इस मास में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे। इस समय आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे एवं कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको प्रसन्नता होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप वांछित लाभ अर्जित करेंगे तथा समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार यह समय आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण तथा सुख प्रदान करने वाला होगा जिससे आप मानसिक रूप से पूर्ण शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में शुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा अतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी।साथ ही आपके शत्रु भी इस महीने में प्रबल रहेंगे तथा आपके लिए समय समय पर समस्याएं उत्पन्न करेंगे।अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। इस समय आपके घर में किसी प्रकार से चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए।उच्चाधिकारी वर्ग से इस मास में आपको पूर्ण सहयोग करना चाहिए तथा विनम्रता पूर्वक उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए अन्यथा उपेक्षा होने पर वे आपको दंडित कर सकते हैं।साथ ही इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे एवं धन का व्यय भी अधिक रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी। इस मास में

आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। मित्रों एवं संबधियों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा। साथ ही समाज से भी आप उपेक्षित रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय सफल नहीं होगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य आपको यदाकदा शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे साथ ही आपके महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम एवं बुद्धि बल से सम्पन्न होंगे। इस प्रकार आप सामान्य धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल अल्प मात्रा में घटित होंगे। इस समय स्त्री तथा स्त्रीपक्ष से कष्ट प्राप्त करेंगे या पत्नी को किसी प्रकार के कष्ट होने की संभावना रहेगी। साथ ही शत्रुपक्ष से भी आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में कमी आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी कमजोर रहेंगे। साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा बैचेन रहेंगे। शारीरिक अस्वस्थता के साथ साथ आपके मन में लोलुपता के भाव की भी वृद्धि होगी। अपने बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे एवं परस्पर मनमुटाव रहेगा। ऐसे समय में मित्र भी शत्रुओं के समान व्यवहार करेंगे। इसके अलावा समाज में अन्य लोगों के साथ वाद विवाद तथा संघर्ष होता रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता का भाव रहेगा।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभफल भी घटित होंगे।अतः आप महिला वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही इस समय परिश्रम पूर्वक धनार्जन एवं लाभ प्राप्त करने में भी आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आप की रूचि उत्पन्न होगी तथा समाज में न्यूनाधिक प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नती के साथ-साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य-व्यवसाय मेंसफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण सेयह वर्ष अच्छारहेगा।एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नही तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव

से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते है। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निधारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा फिर भी अल्प मात्रा में शुभ फल अवश्य प्राप्त होंगे। इस समय आपके दुश्मन बलवान रहेंगे तथा आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे फलतः आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी अत्यंत ही परिश्रम से सफल होंगे। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से भी कमजोर रहेंगे। शारीरिक रूप से भी आप दुर्बल रहेंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव अल्प ही रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप अल्प मात्रा में ही पूजन तथा सेवा करेंगे। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ रहेंगे तथा शरीर में दुर्बलता का भाव रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। इस मास में आपकी दूर समीप की यात्रा भी हो सकती है। आपके पारिवारिक कार्य भी इस समय असफल रहेंगे एवं मुकद्दमे आदि में धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे इससे आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं अपने बुद्धिचातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त सामान्य धन तथा सुखार्जन करके आप प्रसन्नता की अनुभूति कर सकेंगे।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा। इस समय आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जित करने में सफल रहेंगे तथा आर्थिक रूप से पूर्ण सम्पन्न रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को यथासमय सिद्ध करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप अपने घर में किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकते है। इस समय संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे।साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा। अपने बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र सम्माननीय तथा आदरणीय समझे जाएंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में भी समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में श्रद्धा का प्रदर्शन करते हुए आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में सम्मान अर्जित कर सकेंगे।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा सामाजिक एवं पारिवारिक जनों से यथोचित मान सम्मान प्राप्त होगा। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सम्मान अर्जित करेंगे जिससे आपके महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे एवं वांछित लाभ भी प्राप्त होगा। मित्रों एवं बन्धु जनों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। आपके शुभ कार्य भी इस मास में सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करने के लिए तत्पर रहेंगे। संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगे एवं बन्धु तथा मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप की मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आप अल्प मात्रा में अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा की दृष्टि से मास में पूर्ण सतर्क रहें तथा अन्य कार्यो को भी बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करें।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय महिला वर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे तथा आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सौभाग्य से ही सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति आप अपनी रूचि का प्रदर्शन करेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। मित्रों तथा संबधियों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा साथ ही मनोवांछित द्रव्यों की भी इस मास में उपलब्धि हो सकती है। संतति पक्ष से भी आपको यथोचित लाभ तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। सामाजिक जनों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आपकी असफल आशाएं भी इस मास में पूर्ण होंगी। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं की भी प्राप्ति करने में सफल सिद्ध हो सकते हैं।

मई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप अशुभ फलों की ही प्राप्ति करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्टजनों की संगति आपको प्राप्त होगी जिससे आर्थिक दृष्टि से आप कमजोर होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी

विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्ट की अनुभूति करेंगे साथ ही मानसिक रूप से भी आप अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत ही परिश्रम के उपरांत भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध हो सकेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी एवं देवता तथा ब्राहमणों की आप उपेक्षा करेंगे। इस मास में आप के अन्य प्रकार से भी हानि के योग बनते रहेंगे। इस समय आपके मित्रों तथा बन्धुओं से विशेष संबध नहीं रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग भी अल्प ही मिलेगा।साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी। इस समय शत्रुपक्ष आपका बलवान रहेगा तथा उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त जिस कार्य को भी आप प्रारम्भ करेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।

इसके साथ ही इस मास में आप शीत या वात से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक अवमानना होगी एवं बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको क्षति हो सकती है। अतः सावधानी तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

जून 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्य रूप से ही शुभ फलदायक रहेगा तथा अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा हृदय से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में पूर्ण वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप सफल रहेंगे तथा आपके शत्रु आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आप की आय स्त्रोतों में भी उन्नति होगी फलतः प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी आप लाभार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य की भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके विलम्बित कार्य भी इस मास में पूर्ण हो सकेंगे। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके संबध मधुर रहेंगे तथा सांसारिक कार्य भी समय पर सम्पन्न होते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको यथा योग्य सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

परन्तु इस मास में शुभफलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आप कोई ऐसा कार्य करेंगे जिससे आपको पश्चाताप करना पड़ेगा तथा समाज में आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त इस मास में अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार क्षति होने की संभावना है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धनार्जन करने में सफल रहेंगे साथ ही समाज में आपको पूर्ण यश तथा सम्मान भी प्राप्त होगा। इस समय आपके परिवार तथा मित्र

जनों से मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आप यथोचित आदर प्राप्त करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा। अतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मिष्ठान्न के प्रति आपकी तीव्र रूचि रहेगी। शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी एवं शत्रुओं को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे।स्त्री से आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा अतः आपका गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। इसके अलावा व्यापारादि कार्यों से भी आप अतिरिक्त धन अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में सफल हो सकते है। इस प्रकार यह महीना आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अशुभ फल भी अल्प मात्रा में होते रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धन अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा विविध प्रकार से सुखों का उपभोग भी करेंगे। समाज में आपके यश एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। साथ ही समाज में आप लोगों की भलाई के कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी ठीक ही रहेगा। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा तथा अन्य लोग भी आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा। इसके अलावा इस समय आपकी चिर प्रतीक्षित मनोकामनाएं भी पूर्ण होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।

परन्तु इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप गर्मी या पित द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त कर सकते है। साथ ही रूधिर विकार का भी भय रहेगा। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा संयम पूर्वक अपने कार्य कलापों को संपन्न करें।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। साथ ही दुश्मन भी बलवान रहेंगे अतः उनकी ओर से आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। इस मास में आपके कार्य क्षेत्र में न्यूनता रहेगी तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन या कोई कार्य छूट सकता है या बंद भी हो सकता है। साथ ही समाज में अन्य जनों से आपके विशेष मधुर संबध

नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि होने की संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है। अतः सावधानी तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग से भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। इसके साथ ही इस समय आप अपनी बुद्धिमता से धनार्जन एवं सुख प्राप्त करने में सफलता अर्जित कर सकेंगे।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं अनुकूल रहेगा। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता की वृद्धि होगी तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही नवीन ज्ञानार्जन करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे।आपके महत्वपूर्ण कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी सुनने को मिलेगा।देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा के कार्य में तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग से भी लाभ तथा सहयोग अर्जित करने में आप सफल होंगे।साथ ही आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से मुक्ति मिलेगी जिससे मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अपने बुद्धिचातुर्य से धनार्जन एवं सुख साधनों को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय धर्मानुपालन में तत्पर रह कर समाज के सभी लोगों में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा वे आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आप के लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा तथापि न्यूनाधिक शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं शारीरिक रूप से आप दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। शत्रुपक्ष भी आपका इस मास में बलवान रहेगा अतः उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे।साथ ही घर में भी किसी प्रकार की चोरी आदि भी हो सकती है अतः सावधान रहें। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की आज्ञा का तत्परता से पालन करें तथा उनकी किसी भी प्रकार से उपेक्षा न करें अन्यथा आप उनसे दण्ड प्राप्त कर सकते है। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अथक परिश्रम के बाद अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही इस मास में

आप किसी ऐसे कार्य को करेंगे जिससे आपको पछताना पड़ेगा तथा सम्मान में भी न्यूनता आएगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपका मन मुटाव रहेगा। आपकी इच्छाएं इस समय में पूर्ण नहीं होंगी अतः मानसिक रूप से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप पत्नी से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा बुद्धि में निर्मलता होने के कारण बुद्धिचातुर्य से अपने कार्यो को सिद्ध करने में सफल रहेंगे। साथ ही धनार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे तथा समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त कर सकेंगे।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे। इस समय आप स्त्री तथा बन्धुवर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे या इनको कोई कष्ट हो सकता है। साथ ही आपका शत्रुपक्ष भी बलवान रहेगा तथा आपके लिए वे समस्याएं उत्पन्न करते रहेंगे। इस मास में आपके अन्दर उत्साह के भाव की न्यूनता स्पष्ट परिलक्षित होगी तथा धन भी अधिक मात्रा में व्यय होगा। अतः आर्थिक क्षेत्र में आप कष्ट प्राप्त करेंगे। आप का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर मनमुटाव तथा वैमनस्य रहेगा। इसके अतिरिक्ति समाज तथा परिवार के लोगों से आपके परस्पर विवाद होते रहेंगे।अतः ऐसे समय को संयम पूर्वक व्यतीत करना ही बुद्धिमानी रहेगी।

साथ ही इस मास में आपको अल्प मात्रा में शुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। इससे आप श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति भी हो सकती है। इस समय आप नवीन वस्त्र तथा द्रव्य आदि भी प्राप्त कर सकते है जिससे आप किंचित सुख की अनुभूति प्राप्त करेंगे।

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें ।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परंतु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो

सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुघर्टना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नही रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रूचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते है। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा हैं। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नही रहेगा। व्यावसायिक जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है। आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे परन्तु 04 फरवरी के बाद राहु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में चण्डाल योग बना रहा है। इस समय आपको कार्य व्यवसाय में हानि हो सकती है। साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो असंतुष्ट रहेंगे और साझेदार के साथ संधंब भी खराब हो सकते हैं।

अप्रैल के बाद मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल हो रहे हैं फलस्वरूप आय के सारे मार्ग बन्द हो सकते हैं। अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। अधिकारी आपको अनायास ही तंग कर सकते हैं।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति अनुकूल नहीं होने के कारण आय के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। 04 फरवरी के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें और खर्च पर भी अंकुश लगाए।

01 मई से समय और ज्यादा खराब हो रहा हैं। इस समय के अंतराल में आपके सारे ग्रह प्रतिकूल है अतः धोखा, हानि व आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। लोन इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थितियों में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और मां लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए।

घर-परिवार, समाज

दूसरे भाव में शनि एवं राहु के गोचरीय प्रभाव के चलते पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता बनी रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े या विवाद मे नहीं पड़ना चाहिए और वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए,

नहीं तो आपकी प्रतिक्रिया पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छी नहीं रहेगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

04 फरवरी के बाद धर्मपत्नी के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता या साझेदारी है तो उसमें दरार आ सकती है। या उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। मई के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक स्थिति को लेकर मानसिक परेशानी बनी रहेगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपकी संतान के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 04 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है, जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

01 मई से गुरु का गोचर प्रतिकूल होने से संतान की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न होंगे। शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावट आ सकती है। अतः उस समय मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही भी न करें।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य ही रहेगी। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। मुख्यतः सारे ग्रह प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है।

मई से उदर सम्बन्धित परेशानी हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठकर टहलना व व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए अच्छा रहेगा। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए नहीं तो मानसिक भटकाव के कारण आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

शनि ग्रह के गोचर के बाद आलस्य आपके करियर को खराब कर सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही द्वादशस्थ शनि के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें दुर्घटना हो सकती है। राहु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्य के कारण भी आपका दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित होगा। मई से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।

इस वर्ष वृष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का पूर्वार्द्ध कार्य व्यवसाय के लिए बहुत अच्छा नहीं रहेगा। सप्तम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके व्यावसायिक जीवन में व्यवधान ला सकती है। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। यदि आप साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो आप अपने साझेदार से असंतुष्ट रहेंगे और उसके साथ आपका संधंब भी खराब हो सकता है। 9 अगस्त से राहु का गोचर अनुकूल होने के कारण आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। आप अपने व्यापारिक जीवन में उन्नति करने का पूर्ण प्रयास करेंगे और उसके लिए अथक परिश्रम भी करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकती है।

15 अक्टूबर से आपका समय फिर से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप आपकी आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका साथ नहीं देंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी लोग आपको तंग कर सकते हैं जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए बहुत अच्छा नहीं है। व्यावसायिक स्थिति प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। गुरु एवं राहु की युति निवेश के लिए अच्छी नहीं होती है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

18 फरवरी से आपका समय और ज्यादा खराब हो रहा है अतः धोखा, हानि या आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। ऋण इत्यादि भी लेना पड़ सकता है। विषम परिस्थिति में आपको अपना आत्मबल बनाए रखना होगा। 09 अगस्त से राहु का गोचर अच्छा होने के कारण धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। अचानक आपको मातुल पक्ष के लोगों से लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। घरेलू मामलों में आपको बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद में नहीं पड़ना चाहिए। यदि आपकी किसी के साथ मित्रता है तो उसमें दरार आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय काफी अच्छा हो रहा है। पत्नी के साथ आपके मधुर संबंध होंगे। माता पिता सहित मातुल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से आपके शत्रु भी आपके साथ मित्रवत व्यवहार करेंगे। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए सामान्य रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी परन्तु उसके लिए उनको अथक परिश्रम करना पड़ेगा सप्तम स्थान में गुरु एवं राहु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो कि आपके दूसरे बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।

18 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपकी संतान की उन्नति में बाधा आ सकती है। मानसिक कष्ट व शारीरिक व्याधि के कारण शिक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं अतः उस समय उनको अपने मन को एकाग्र कर पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। 15 अक्टूबर से समय अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

साल की शुरुआत स्वास्थ्य के लिहाज से उत्तम नहीं रहेगी। लग्नस्थ शनि पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। आपको ऐसा लग सकता है कि आपकी शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे करके कम हो रही है। पेट संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। खान-पान पर संयम रखकर इसे कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। सूर्योदय से पहले उठ कर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा।

9 अगस्त के बाद राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। यदि आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो इस समय के अंतराल में अच्छे हो जाएंगे। 15 अक्टूबर से समय और बढ़िया हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना चाहिए। विदेशी भाषा सीखने वालों के लिए यह समय अच्छा है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने

लक्ष्य में सफल होंगे। लग्नस्थ शनि के कारण आप आलसी भी हो सकते हैं।

9 अगस्त से राहु का गोचर बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से अचानक बेरोजगारों को नौकरी मिल जाएगी। व्यवसायियों को उनका ब्राण्ड नेम मिल सकता है प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपनी परीक्षा में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है। आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी। 18 फरवरी के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

9 अगस्त के बाद आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा के अंतराल या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तो दुर्घटना हो सकती है, क्योंकि लग्न स्थान का शनि चोट चपेट की सम्भावन बनाएं हुए है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में पूजा पाठ में आपका मन कम लगेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक शनिवार शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं लग्न स्थान में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए साल का पूर्वार्द्ध अच्छा नहींरहेगा। आर्थिक तंगी के चलते व्यापार में विस्तार करने की योजनाएं वर्षारंभ में धीमी पड़ेंगी। अथकप्रयास एवं बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है। घर से दूर अर्थात् विदेश में सफलता मिल सकती है। लग्नस्थ शनि के कारण कुछ गलत फहमियों से आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। 5 मार्च के बाद वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरुस्कृत किया जा सकता है।

12 अगस्त के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो उससे आपको हानि हो सकती है। जमीन-जायदाद से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय अनुकूल नहीं है। 23 अक्तूबर के बाद व्यवसाय व नौकरी के लिए लंबी यात्रा हो सकती है। ये यात्रा सफल सिद्ध होगी। इस दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना देखे दस्तखत न करें और जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाएं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल आपके लिए मिला-जुला रहेगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें।आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

5 मार्च के बाद कई लाभकारी अवसर मिलेंगे। इन अवसरों का भरपूर लाभ उठाएं। क्योंकि मई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। इस समय अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें।जोखिम भरा निवेश करने से बचें। कृषक वर्गों एवं फुटकर विक्रेताओं के लिए वर्षान्त अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए सामान्य रहेगा। अधिक भाग-दौड़ के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। 5 मार्च के बाद परिवार में छोटे भाई-बहनों का मांगलिक कार्य सम्पन्न होने का योग बन रहा है। यदि परिवार में कोई मुकद्दमा चल रहा हो

तो अनुकूलता प्राप्त होगी। 31 मई के बाद परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

23 अक्तूबर से आपके पारिवारिक एवं सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा। आपकीमाता के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी और आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से बरतनी चाहिए ।

5 मार्च के बाद का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। संतान के साथ संबंध में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकीसकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मानसिक चिंताएं भी रहेंगी।दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

5 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। यदि स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो 23 अक्तूबर के बाद आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। 5 मार्च के बाद लग्न भाव पर गुरु की दृष्टि आपके मनोबल को बढ़ाएगी। अगर आप प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले रहे हैं तो सफलता आपके पक्ष में होगा। षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक ही आपको उन्नति व सफलता मिलेगी।

मई के बाद चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए अनुकूल समय रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त होगा। अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 23अक्तूबर से आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आपकीछोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 5 मार्च के बाद लम्बी यात्राएं भी होंगी। आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थ स्थल की यात्रा भी करेंगे।

कुछ समय के लिए आप प्रवास भी कर सकते हैं। 23अक्तूबर के बाद देश-विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे। 5 मार्च के बाद समय अच्छा हो रहा है। दैनिक पूजा व दिनचर्या में काफी सुधार होगा। 15 अक्तूबर से आप दान-पुण्य अधिक करेंगे।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवारके दिन गरीबों को काला कम्बल दान करें।
- अपनेबजन के बराबर अन्न आदि दान करें जिससे आपको शारीरिक अनुकूलता प्राप्त होगी।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि नवीन विचारधारा, नयी योजनाओं को जन्म देगी। उसका उचित लाभ उठा कर आप अपने कार्य व्यवसाय में अच्छी उन्नति करेंगे। 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ मंगल के कारण गुप्त या प्रत्यक्ष शत्रु परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं।

8 अक्टूबर के बाद आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच-विचार कर ही उसमें निवेश करें। क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन-जायदाद के लिए अच्छी नहीं होती। द्वितीय स्थान में शनि ग्रह की स्थिति आपकी आर्थिक उन्नति के लिए शुभ नहीं है। परन्तु 18 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो इस समय के अंतराल में आपको लोन मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख-सुबिधा पर भी अधिक खर्च करेंगे।

द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त भी रह सकते हैं। 18 मार्च से द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से परिवारिक प्रतिकूलता दूर होगी एवं परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी।

आपके माता पिता के लिए यह समय बहुत शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। गुरु ग्रह की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। 8 अक्टूबर से आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार चढ़ाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु संतान के लिए अच्छा नहीं होता। वर्ष भर संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। संतान इच्छित व्यक्तियों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा। गर्भवती स्त्रियां सावधानी बरतें अन्यथा गर्भपात हो सकता है।

8 अक्टूबर के बाद का समय आपके दूसरे बच्चे को प्रभावित कर सकता है। इस समयान्तराल में स्वास्थ्य पर ध्यान दें। यात्रादि से भी बचना चाहिए।

स्वास्थ्य

द्वितीस्थ शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। शनि की स्थिति आपके परिवार, संचय, वाणी व आयु के प्रतिकूल सिद्ध हो सकती है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं रहेगी। रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोग होने की संभावना है।

आपको दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए समय समय पर चिकित्सक की सलाह लेते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 18 मार्च के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को अपने करियर में उचित सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

दशमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। वकील, जज एवं कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ नहीं होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 18 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

परिवार के साथ भ्रमण पर जाएंगे। यह यात्रा मनोरंजनात्मक व आनन्ददायक रहेगा। इन यात्राओं में आपको कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ गुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 18 मार्च से घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति व समाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। मन्दिर निर्माण, धार्मिक कार्य, भण्डारादि कार्यों में आप अच्छा दान करेंगे। गरीब बच्चों की पढ़ाई हेतु दान देकर या अनाथ आश्रम में भण्डारा कर अधिक से अधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। आप व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे। दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी और साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए यह समय बहुत ही शुभ है। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ करेंगे। जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होंगे। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भूमि क्रय-विक्रय या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान का राहु अच्छा नहीं होता। छोटे व्यापारियों को अपना ब्राण्ड नेम मिलेगा, जिससे वह अपने व्यापार को बड़े पैमाने पर ले जाएंगे।

धन संपत्ति

आपकी आर्थिक स्थिति के बारें में क्या कहना, इस साल तो आपकी बल्ले-बल्ले रहने वाली है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मार्च माह के बाद तो स्थिति और भी सुदृढ़ होने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा।

12 अगस्त के बाद चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इस साल आपकी जिन्दगी में बहुत बदलाव आने वाले हैं।

घर-परिवार, समाज

इस साल आपकी पारिवरिक स्थिति बेहतर रहने वाली है, बस जरूरत है सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आने की। परिवार के लोगों के सुझावों पर

अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है, लेकिन इसके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। है। द्वितीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

12 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके परिवार में कुछ परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं। लेकिन कुछ ज्यादा हानि होने की संभावना नहीं है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, अतः उनका समुचित ख्याल रखें और संयम बरतें। पिता जी के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। विवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। गर्भवती स्त्रियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो पंचम स्थान का राहु गर्भपात करा सकता है।

वर्ष का उतरार्द्ध आपकी संतान के लिए काफी उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। आपके बच्चे कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। उनकी इस कामयाबी से समाज में भी आपके पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपकी दूसरी संतान के लिए भी समय काफी शुभ रहेगा।

स्वास्थ्य

सामान्यतः वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेगी। द्वितीय स्थान के शनि आपको मानसिक परेशानी दे सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे आपकी ऊर्जा कम हो रही है और आप कमजोर होते जा रहे हैं। परन्तु मार्च के बाद समय काफी शुभ हो रहा है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। अर्थात इस समय आप रोग-मुक्त रहने वाले हैं। लेकिन आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं, क्योंकि मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्यागकर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए अच्छा नहीं है। विद्यार्थियों को मेहनत करने के बावजूद भी पारिश्रमिक फल नहीं मिलेगा। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावट उत्पन्न कर सकता है। परन्तु मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के करण आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नये स्रोतों का सृजन करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों

के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

मार्च के बाद आप अधिक से अधिक यात्राएं करेंगे। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी प्रबल योग बन रहा है। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपकी उन्नति के लिए अच्छी होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यों के लिए शुभ नहीं है। आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास एवं श्रद्धा उत्पन्न होगी, जिसके चलते आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। मन्त्र जाप या भगवान का ध्यान करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अपने आपको नियंत्रित रखें।
- हनुमान चालीसा का पाठ करना आपके लिए श्रेष्ठ रहेगा।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उनका पूजन करें।

इस वर्ष कर्क राशि का शनि तृतीय भाव में और सिंह राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए बहुत ही अनुकूल है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। कार्य व्यवसाय में आपके भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। साझेदारी में व्यवसाय कर रहे व्यक्तियों की उन्नति होगी। 6 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रति किसी प्रकार का षड्यन्त्र या कोई बड़ी समस्या उत्पन्न की जा सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा या रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। धन संचित करने में आपके भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका व्यय होगा।

अप्रैल के बाद आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों पर अंकुश लगाएं। लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें।

घर-परिवार, समाज

यह साल पारिवारिक जीवन के लिए अच्छा नहीं रहेगा। व्यापारिक व्यस्तता के कारण अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान का राहु परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकता है। ऐसे मे आपको बड़े ही विवेक से काम लेना होगा। सभी लोगों के साथ स्नेह और आपसी सौहार्द के साथ पेश आए।

परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो

सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं। अतः उनका समुचित ख्याल रखें और व्यवहार में संयम बरतें। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से समाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ बच्चों के लिए बहुत ही शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा मे भी सुधार होगा। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपकी दूसरे संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे।

6 अप्रैल के बाद समय प्रभावित हो रहा है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो यह समय काफी अच्छा रहेगा। परन्तु 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से छोटी-मोटी बीमारियों से आप प्रभावित हो सकते हैं।

गुरु के अग्नि तत्व राशि में होने के कारण पाचन या गैस संबंधित परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना बहुत जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। चतुर्थ स्थान का राहु आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। उच्च शिक्षा हेतु किसी अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न होगी। चतुर्थ स्थान का राहु एकेडमिक एजूकेशन में कमी करेगा। जो जातक नौकरी की तलाश में हैं उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि के कारण आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे। 5 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ शुभ रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र पाठ अधिक करेंगे एवं योग इत्यादि क्रियाओं में भी रुचि लेंगे। द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भूखे को खाना खिलाना, गरीबों को दान देना, मजबूरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। अभी कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा और यह परिवर्तन आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। 15 अप्रैल के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ विशेष करेंगे, जिससे आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

अतः इस समय के अंतराल में एकाग्रचित होकर व्यापार के विस्तार और नए कारोबार को शुरू करने के लिए सोचना कारगर होगा। क्योंकि लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा एवं नयी योजनाओं को जन्म देगा, जिसका भरपूर लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति कर सकते हैं। अगस्त के बाद बेकार के कुछ मुद्दे आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे एवं अपने कार्य में सफल रहेंगे।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु व्यय अधिक करा सकता है। अतः बहुत ही सोच विचार कर आर्थिक निर्णय लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। आयात-निर्यात करने वालों को बहुत उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। नए कार्य में हाथ डालने के लिए बेहतर समय नहीं है। 15 अप्रैल से समय अच्छा हो रहा है। रुका हुआ अथवा फंसा हुआ धन वापस मिल सकता है। आपके छोटे भाई व धर्मपत्नी से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। भौतिक सुख सुविधाओं पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

27 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चौकस और विश्लेषिक व्यक्ति हैं, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केश मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी और आपको नुकसान का सामना करना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। चतुर्थ स्थान के राहु आपके पारिवारिक माहौल में थोड़ी कटुता का वातावरण बना सकते हैं, जिसके कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। उस समय आपको विवेक से काम लेना होगा। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह के गोचर काफी अनुकूल हो जाएगा। यदि आप विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है एवं नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती हैं।

तृतीयस्थ शनि के कारण आपको भाइयों का सहयोग मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। सामाजिक कार्यों के प्रति नैसर्गिक रूप से आपका लगाव बढ़ेगा, जिससे आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। परन्तु 15 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अच्छा हो रहा है। यह समय गर्भाधान के लिए उत्तम रहेगा।

आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। मेहनत करने में कभी वे पीछे नहीं रहेंगे और आप अपने बच्चों पर गर्व करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि पहले से कोई बीमारी भुगत रहे हैं तो यह समय अधिक कष्ट कारक हो सकता है। द्वादशस्थ गुरु अग्नितत्व राशि में होने के कारण पेट से सम्बन्धित व पाचन संबंधित रोग दे सकते हैं। 15 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है।

लग्न स्थान के गुरु मन में अच्छे विचार लाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ शनि किसी भी परीक्षा में उन्नति के संकेत दे रहा है। अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है।

पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पढ़ाई-लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। अतः वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 15 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है।

तृतीयस्थ शनि एवं राहु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरुरी है। क्योंकि 27 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा। मन एकाग्र नहीं रहने के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। जिससे पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

इस साल कारोबार में अच्छी सफलता मिलने वाली है और बेहतर लाभ भी होगा। विभिन्न प्रकार के स्रोतों से धन का आगमन होगा। जो लोग ब्याज पर पैसे देते हैं उनको अच्छा लाभ होने वाला है। यदि आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं तो अच्छा लाभ मिलेगा। 26 अप्रैल के बाद समय और भी रोमांचक और शानदार हो रहा है। हालाँकि चतुर्थ स्थान का शनि कुछ परेशानियाँ ला सकता है। लेकिन हताश होने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो के कारण कोई खास प्रभाव नहीं पड़ने वाला है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों को किंचित परेशानी हो सकती है। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है। अतः अपने से बड़े अधिकारियों के साथ संबंध अच्छा बनाकर रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपकी मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सहकर्मियों का सहयोग भी मिलेगा। इस समय आपको कुछ ऐसी खुशियाँ मिलेंगी, जिसकी तलाश आपको एक लम्बे अरसे से थी। आप अपने काम को समय से पहले पूरा करने में सफल रहेंगे। 19 अक्टूबर के बाद आपका समय कुछ प्रभावित हो सकता है।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ मे आपकी आर्थिक स्थिति शानदार रहने वाली है। आप अपने कार्यों के प्रति गंभीर बने रहेंगे, जिस कारण धन का आगमन भी सुचारु रूप से होता रहेगा। 26 अप्रैल के बाद स्थिति में अप्रत्याशित बदलाव होगा और आप यह पाएंगे कि आपकी जमापूंजी में वृद्धि हो रही है। द्वितीयस्थ गुरु के कारण आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं। तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

16 सितम्बर के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है। भूमि, घर व वाहन खरीदते समय कागजी कार्यवाही पर विशेष ध्यान दें नहीं तो चतुर्थ स्थान का शनि आपको फंसा सकता है। कुछ अपने ही लोग आपके साथ धोखा-धड़ी कर सकते हैं, इसलिए अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। जमापूंजी और लेन-देन के मामले में किसी प्रकार की कोताही न करें। संभव हो तो लिखित रूप में ही लेन-देन करें। कोई बड़ा-बुजुर्ग आदमी आपके साथ ठगी कर सकता है। किसी प्रकार का कर्जा लेने से परहेज करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की स्थिति पारिवारिक माहौल में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर रही है। आपके माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। परिवार मे किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए और घरेलू माहौल को अनुकूल बनाये रखने के लिए छोटी मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धर्मपत्नी के लिए अच्छी है। अतः उनके साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद पारिवारिक स्थिति कुछ अनुकूल होगी। परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है। उन लोगों को अच्छा सहयोग मिलगा। तृतीय स्थान के राहु सामाजिक पद प्रतिष्ठा में उन्नति करेंगे। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में आपका एक अलग ही व्यक्तित्व होगा।

संतान

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि संतान के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

अप्रैल के बाद आपके बच्चों को उन्नति प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। परन्तु अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो जाएगा। उसके बाद आपके दोनों बच्चे एक साथ उन्नति करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु केछछछछ प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट व शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान व दिनर्चया पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

26 अप्रैल के बाद समय और भी बढ़िया हो रहा है। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। लेकिन मक्खन, घी और मिठाई से दूर रहना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद होगा, अन्यथा आपका वजन बढ़ सकता है। 19 अक्टूबर के बाद से आप अचानक छोटी-मोटी बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। जैसे - सिर दर्द और अपच आपको परेशानी में डाल सकती है। अतः अपनी सेहत के प्रति सावधान रहें। आँख, किडनी और लीवर से संबंधित कुछ दिक्कतें हो सकती हैं। आलस्य भी आपके उपर हावी रहेगा। इस समय आपको दिमाग स्थिर रखने की आवश्यकता है। सुबह-शाम टहलना और प्रोटीनयुक्त पदार्थ अपने आहार में शामिल करना आपके लिए

हितकर होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

नौकरी इच्छित व्यक्तियों को अथक परिश्रम के पश्चात् नौकरी मिल सकती है। इंजीनियर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

अक्टूबर के बाद वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है क्योंकि राहु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपकी पूजा पाठ के प्रति विशेष रूचि रहेगी। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। जागरण, साई संध्या इत्यादि धार्मिक गतिविधियों में संलग्न रहेंगे। तीर्थ यात्रा व भण्डारा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।

- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करे एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले के धारण करें।

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यदि आप नौकरी करते हैं तो यह साल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होने की प्रबल संभावना बन रही है। कुछ लोग आपकी छवि धूमिल करने की कोशिश कर सकते हैं, इसे नजरअंदाज न करें। बेहतर परिणाम के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। मई के बाद आपका कारोबार सही रास्ते पर आएगा और मुनाफा भी होगा। प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर परिणाम मिलेंगे।

प्रतिद्वन्दी आपकी नकल करने की खूब कोशिश करेंगे लेकिन वे अपने मंसूबों में सफल नहीं होंगे। आप अपने अहंकार और गुस्से पर नियंत्रण रखें। तभी आपको प्रतिष्ठा और धन दोनों की प्राप्ति होगी। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे।

7 अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो रहा है। नौकरी में पदोन्नती व कार्यों में सफलता मिलेगी। बड़े अधिकारी व उच्च लोगों का सहयोग मिलने के कारण व्यापारिक क्षेत्र में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। साथ ही विशिष्ट उपलब्धियां भी अर्जित करेंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपकी आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक रहने वाली है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। मई के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। अचानक संचित धन में कमी आ सकती है। परिवार में रोगादि की अधिकता होने के कारण धन व्यय होगा। आर्थिक लेन देन के मामलों में सावधान रहना बहुत ही जरूरी है। जमीन खरीदते समय व निवेश करते समय कागजी कार्यवाई पर पूरा ध्यान देना होगा, नहीं तो आपके साथ धोखा हो सकता है। आधुनिक सुख संसाधनों को प्राप्त करने में भी बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

अक्टूबर के बाद शेयर बाजार से दूरी बनाकर ही रहें तो बेहतर होगा। निवेश करने से ज्यादा बचाने के बारें में सोचना आपके लिए फायदेमंद होगा। भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु जल्दबाजी में कोई भी बड़ा निर्णय न लें नहीं तो हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। जीवनसाथी के साथ अच्छे पल व्यतीत होंगे। पारिवारिक खुशियों में वृद्धि होगी। मई के बाद माता के साथ थोड़ी अनबन हो सकती है। उस समय राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक माहौल में नकारात्मक स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जिससे अंतर्कलह हो सकती है। खुद पर नियंत्रण रखें। परिवार से जुड़ी किसी भी समस्या को छोटा न समझें और तुरन्त उसका हल निकालें।

तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। बांछित मान-सम्मान मिलेगा। किसी सम्मानित पद को अर्जित करेंगे। आपकी प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त हो सकती है एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। अक्टूबर के बाद परिवार से जुड़ी सभी समस्याएं दूर होंगी। एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

इस वर्ष आपके बच्चे महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमत्ता से ही सम्पन्न करेंगे। मई के बाद बांछित लाभ एवं सफलता भी अर्जित कर सकते हैं। आपकी दूसरी संतान अधिक प्रभावित करेगी। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति उसकी रुचि अल्प मात्रा में होगी, परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास इत्यादि के प्रति उसका आकर्षण बढ़ेगा।

अक्टूबर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान का शनि संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़े सावधानी से रहना चाहिए नहीं तो आपका गर्भ खराब हो सकता है। माता पिता के प्रति संतान के मन में आदर व संमान का भाव कम होगा। इस समय के अंतराल में आपको उन पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो आपके बच्चे गलत संगति में फंस सकते हैं।

स्वास्थ्य

इस साल आपकी सेहत ठीक-ठाक रहेगी। आपकी जिन्दगी सुचारु रूप से चलेगी। मई के बाद कुछ असमंजस की स्थिति पैदा हो सकती है, लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। इससे आप जल्द ही उबर जाएंगे। इस पर ज्यादा सोच-विचार करने की जरूरत नहीं है। आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी, लेकिन कुछ सामान्य सी दिक्कतें आ सकती हैं- जैसे-पेट में दर्द, बदहजमी, जोड़ों और घुटनों में दर्द संबंधी शिकायत हो सकती है।

बजन बढ़ने से बचने के लिए खान-पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। नहीं तो आपका बजन बढ़ सकता है। चतुर्थस्थ शनि के कारण आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। 7 अक्टूबर के बाद आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा, जिससे आप आरोग्य बने रहेंगे, परन्तु

22 अक्टूबर को शनि ग्रह का गोचर पत्नी एवं संतान के स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

कहते हैं कि अच्छे दिन आने से पहले बुरे दिन देखने पड़ते हैं। आपके साथ भी कुछ ऐसा हो सकता है। शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन समय के साथ स्थितियों में सुधार होगा। 11 मई के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपनी परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न होंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो स्थान परिवर्तन का योग बन रहा है। अक्टूबर के बाद मेकेनिकल इंजीनियर एवं हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले लोगों की अच्छी उन्नति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी मोटी यात्राएं होती रहेगी। परन्तु मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी करा सकती है। इस यात्रा से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा।

अक्टूबर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी। विदेश यात्रा की भी संभावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में राहु गुरु की युति के कारण सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपके आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। 11 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। अक्टूबर के बाद अपने घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। जैसे- जागरण, साई संध्या, माता की चौकी इत्यादि। तांत्रिक क्रियाएं व काला जादू के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष में जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- दुर्गा सप्तति का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- वीरवार के दिन पीला केला गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए मिला जुला रहेगा। मेहनत और लग्न से किये गये कार्यों में सफलता मिलेगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। 13 अप्रैल के बाद राजनीति से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा। 3 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। व्यवसायिक क्षेत्र में रूके हुए कार्य पूरे होंगे। व्यापारिक उन्नति के लिए आपको ऋण लेना पड़ सकता है। बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा।

13 जुलाई के बाद नौकरी करने वालो व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तण होगा। इस अवधि में आप पर आजीविका क्षेत्र में मानसिक दबाव अधिक रहेगा। आय में अनियमितता का भाव बना रहेगा। पैतृक संपत्ति, जमीन जायदाद से संबंधित मामलों में अनुकूलता नहीं मिलेगी। कुछ विरोधियों का भी सामना करना पड़ सकता है। 4 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः उस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। यदि आप नौकरी में हैं तो बड़े अधिकारी परेशान कर सकते हैं, जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे।

धन संपत्ति

पंचम स्थान का शनि आर्थिक स्थिति के लिए अच्छा नहीं है। अतः आपके लिए एक सुझाव है कि जुआ सट्टा इत्यादि से दूरी बनाकर ही रहें और साथ ही किसी प्रकार का आर्थिक जोखमि उठाने से परहेज करें। वित्तीय विषयों के लिए यह समय सही नहीं है। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में भी कमी कर सकता है। अप्रैल के बाद पैसे के मामले में सावधान रहें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास करना अच्छा नहीं होगा।

2 जून से गुरु ग्रह का गोचर आपके लिए शुभ हो रहा है। भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की प्रबल संभावना बन रही है। 4 नवम्बर के बाद आपके सारे धनागम के स्रोत खुलेंगे तथा आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आप खुले हाथों से खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात करें तो वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु पारिवारिक माहौल में कुछ विषम स्थिति उत्पन्न कर सकता है। अचानक किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद होने की संभावना बन रही है। ऐसे समय में कुछ ऐसा न करें जिससे बाद में पछताना पड़े। जीवनसाथी के साथ बेहतर सामंजस्य बिठाने की कोशिश करें क्योंकि सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि धर्म पत्नी के लिए शुभ नहीं है। 5 अप्रैल के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है अतः इस समय अपने सहन शक्ति को बढ़ाएं एवं अपनी वाणी पर पूर्ण नियन्त्रण रखें।

2 जून के बाद आपके पारिवारिक स्थिति में अनुकूलता आनी शुरू हो जाएगी। आपके माता पिता के लिए यह समय काफी शुभ है। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। 4 नवम्बर से पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

संतान

पंचम स्थान का शनि संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी, जिससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। उसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ही सावधान रहना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है। परन्तु 13 अप्रैल के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। आपकी दूसरी संतान की उन्नति होगी।

4 नवम्बर से समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चे अध्ययन के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे तथा उनकी आय में वृद्धि होगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो उसके विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। वजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। नहीं तो 7 अप्रैल को लग्न स्थान में राहु का गोचर अचानक आपको बीमार कर सकता है, जिससे आप शारीरिक एवं मानसिक रूप से ज्यादा परेशान हो सकते हैं। अतः इस अवधि में स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें तथा अपने खान पान पर पूर्ण ध्यान दें।

4 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि करेगी, जिससे आप तंदुरूस्त एवं सेहतमन्द बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। पंचम स्थान का शनि विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक परिश्रम करना पड़ेगा। मार्च के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। इस अवधि में वांछित सफलता नहीं मिलने के कारण आप निराश हो सकते हैं। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो 2 जून के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है।

विद्यार्थियों के लिए 4 नवम्बर से समय काफी शुभ हो रहा है। अतः आपको वांछित शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

साल के प्रारम्भ में यात्रा के योग कम ही बन रहे हैं। परन्तु 3 मार्च के बाद छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। 5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण घर से दूर भी हो सकता है।

13 जुलाई के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। अपने पूरे परिवार के साथ सुखद यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशष पूजा का आयोजन करेंगे। परन्तु 7 अप्रैल के बाद लग्न स्थान में राहु का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। 2 जून के बाद गरीबों को दान देना, भिखारियों को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। योग व ध्यान के प्रति भी आपका रुझान बढ़ेगा।

- महामृत्यंजय मन्त्र का पाठ करें तथा सोमवार का व्रत करें ।
- पारद शिव लिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मेहनत और लगन से किये गए कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। 6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह परिवर्तन आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यवसायी व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी। परन्तु लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को ज्यादा लाभ मिलेगा। यदि आप शेयर, लॉटरी व सट्टा से जुड़े है तो यह समय काफी शुभ है। सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि आपको उच्चमहत्वाकांक्षी बना रही है। आप अधिक आय प्राप्त करने के प्रयास करते रहेंगे तथा परिश्रम के बल पर अपने व्यवसाय में वृद्धि करेंगे। यदि आप साझेदारी में कोई नया कार्य करना चाहते हैं तो यह समय अच्छा नहीं है। सप्तम स्थान पर राहु एवं शनि की दृष्टि मित्रता में धोखे का योग बना रही है। 3 दिसम्बर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। अतः वर्षान्त में व्यापारिक निर्णय बहुत ही सोच विचार कर लें।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में एकादश स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। यदि आप शिक्षा, कानून व बैंक से जुड़े हैं तो इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। धनागम के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। हालांकि 6 अप्रैल से समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः वित्त से सम्बन्धित गतिविधियों के लिए यह समय सही नहीं है अतः लेन देन करते समय सावधान रहें। लग्नस्थ राहु के कारण आर्थिक स्थिति को लेकर मानसिक कष्ट भी बना रहेगा। नई संपति क्रय करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है।

28 जून के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके रुके हुए व फंसे हुसे पैसे मिलेंग। अप्रत्याशित धन की प्राप्ति होने से आपको आनन्द की अनुभूति होगी। बहुत दिन से चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। पिता व भाईयों से धन लाभ होगा। आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर अचानक धन व्यय होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

घर-परिवार, समाज

घर परिवार के लिए वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। सप्तम स्थान पर राहु की दृष्टि से दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार-चढ़ाव बना रहेगा। घरेलू विषयों को लेकर चिन्ता हो सकती है। परन्तु 6 अप्रैल को चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक स्थिति के लिए काफी शुभ है। परिवार के सभी लोग एक दूसरे का सहयोग करेंगे, जिसके परिवार में स्नेह-सौहार्द का संचार होगा तथा भावनात्मक लगाव में भी वृद्धि होगी। 28 जून के बाद लम्बे समय से चली आ रही संतान संबंधी दिक्कतों का अन्ततः समाधान हो जाएगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी तथा मांगलिक कार्य भी सम्पन्न होंगे। सामाजिक उन्नति के लिए भी यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित उच्च पद को ग्रहण करने में भी आप समर्थ होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। मां-बाप के प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। 6 अप्रैल से समय थोड़ा कष्टकर हो रहा है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते हैं।

28 जून से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपके दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। जातक को जोड़ों में दर्द, सिर दर्द एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। यदि आप आयुर्वेद और योगाभ्यास आदि का सहारा लें तो जल्दी लाभ मिलेगा। सूर्योदय से पहले उठकर पार्क में घ ूमना भी आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगा।

पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि घबराने की कोई बात नहीं है क्योंकि लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि रोग प्रतिरोधक शक्ति को विकसित कर रही है। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए तुला दान श्रेष्ठ रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता में उन्नति के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। रोजगार के नये अवसर पैदा

होंगे। जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में सफलता मिलेगी।

28 जून के बाद नये-नये तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम रहेगा। साल के अंत में रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी अधिक यात्राएं होंगी। व्यावसायिक यात्रा के कारण आप ज्यादातर घर से बाहर ही रहेंगे। 6 अप्रैल के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में तीर्थ यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। यात्रा के अंतराल में किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगी। 11 दिसम्बर के बाद विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

यह वर्ष धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। लग्नस्थ राहु के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। आलस्यता व दीर्घ सूत्रता की भावना बनी रहेगी। दैनिक पूजा भी प्रभावित होगी। इस समय के अंतराल में आप कर्मनिष्ठ होंगे अर्थात् अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे तथा आप दान पुण्य अधिक करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप साधना, योग व ध्यान में अपना समय अधिक व्यतीत करेंगे। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे तथा दूसरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- महामृत्युंजय मन्त्र का पाठ करें तथा शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए तुला दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें तथा घृणी सूर्याय नमः मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें तथा बुधवार व शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- आठमुखी रुद्राक्ष रत्न धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

काम काज के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। यदि व्यावसायिक क्षेत्र बढ़ाना चाहते हैं तो अप्रैल के बाद ही विस्तार करें क्योंकि उससे पहले का समय अच्छा नहीं है। नौकरी करने वाले लोगों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कार्यस्थल पर आपके खिलाफ साजिश रची जा सकती है। आपकी छवि को धूमिल करने की कोशिश भी की जा सकती है, इसलिए सतर्क रहें। नौकरी छोड़ने का भी मन बना सकते हैं। वरिष्ठ सहकर्मियों से झगड़ा करने से बचें। सरकारी नौकरी वालों को ज्यादा सावधानी बरतने की आवश्यकता है, नुकसान होने की संभावना ज्यादा है।

साझेदारी में काम करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध प्रभावित रहेगा। आपके मित्र आपको धोखा दे सकते हैं। सकारात्मक बने रहें। 25 सितम्बर के बाद का समय आपके पक्ष में होगा। विरोधी शान्त होंगे तथा उन्नति के मार्ग खुलेंगे। उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। लोहा, कच्चे तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकारी रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का राहु खर्च में वृद्धि करेगा। निवेश व लेन देन के मामले में सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक अनुकूलता के कारण लाभ होगा। शेयर, सट्टा व जुआ आदि से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम है। नयी संपत्ति क्रय करने का भी सुंदर योग बन रहा है। गुप्त धन की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध में गोचर प्रतिकूल होने के कारण चोरी, बीमारी, दुर्घटना व अपव्यय के योग हैं। यदि धन संपत्ति से संबंधित कोई मामल कोर्ट कचहरी में चल रहा है तो उसमें सफलता प्राप्त नहीं होगी। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिसके कारण आपको कर्ज लेना पड़ सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक स्थिति

अनुकूल नहीं रहने से आप चिंतित रहेंगे। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद होने का प्रबल योग बना रहा है। छोटी छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद न करें। 6 मई से समय कुछ अच्छा होगा। आपके भाईयों की उन्नति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको कुछ पारिवारिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे समय में समझदारी से काम लेना आपके लिए हितकर होगा। आपके रास्ते में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। 25 सितम्बर के बाद षष्ठस्थ शनि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे तथा समाज में लोग भी आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ में पंचम स्थान में शनि ग्रह का गोचर आपके बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है, जिसका असर उनकी शिक्षा पर भी पड़ेगा, परन्तु 6 मई से समय अनुकूल हो रहा है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है। आपके बच्चे आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेंगे। बच्चे मान सम्मान में वृद्धि व गर्व का अनुभव कराएंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध दूसरी संतान के लिए शुभ नहीं है। आलस्य के कारण उनके सभी कार्यों में व्यवधान आने कि संभावना बन रही है। उनके रहन सहन पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां होने की प्रबल संभावना बन रही है। मुख्यतः सभी ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। ऐसे में आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा। खान पान के साथ-साथ अपनी दिनचर्या में सुधार करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

6 मई से समय स्वास्थ्य के लिए अनुकूल हो रहा है। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि होने के कारण मानसिक शान्ति बनी रहेगी। आप दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे। अगस्त के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान होंगे। परन्तु 25 सितम्बर के बाद समय काफि अच्छा हो रहा है। छठे स्थान का शनि आपको व्याधि मुक्त रखेगा तथा आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विदेशी भाषा सीखने वाले लोगों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं उन लोगों की उन्नति होगी। 6 मई के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों को भी सफलता मिलेगी।

25 सितम्बर के बाद नौकरी इच्छित व्यक्तियों को वांछित सफलता मिलेगी तथा उन्नति के सारे मार्ग प्रसस्त होंगे। छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षा के लिए बहुत ही शुभ होता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। द्वादश स्थान का राहु अचानक विदेश यात्रा करा सकता है। 6 मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आप धार्मिक यात्राओं का भी आनन्द लेंगे।

मुख्यतः आपके सारी यात्राएं अचानक होंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का अंत बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक द्वंद्वता के कारण आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित होंगे। पंचमस्थ शनि के कारण पूजा-पाठए यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि कर्मों में आपका मन नहीं लगेगा, परन्तु 6 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप सांस्कृतिक उत्सवों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे तथा दान पुण्य अधिक करेंगे। अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उनका पूजन करें तथा प्रत्येक बुधवार के दिन दुर्वा (घास) चढ़ाएं और लड्डुओं का भोग लगाएं।

- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- चन्दन का तिलक लगाएं तथा गुरु के मन्त्र का पाठ करें।
- साधु संन्यासियों की सेवा करें तथा अपने से बड़े लोगों का सम्मान करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं एकदश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी वाले लोगों को जबरदस्त सफलता मिलने की संभावना है। आपको उच्च अधिकारियों का सहयोग व पदोन्नति मिलने के भी योग बने हुए हैं। आपके वेतन में बढ़ोत्तरी हो सकती है व कंपनी की तरफ से आपको सुख-सुविधाएं प्रदान की जा सकती हैं। व्यावसायिक क्षेत्र में आपको वांछित सफलता भी मिल सकती है। अगर कोई नया काम करने की सोच रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए फायदेमंद होगा। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वाद-विवाद से बचें क्योंकि राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको सरकारी या निजी क्षेत्र से कोई बड़ा प्रोजेक्ट मिल सकता है। शॉर्टकट या कम मेहनत से धन कमाने का विचार अगर आपके मन में आ रहा है तो इस अवधि में उसका त्याग करें। शेयर बाजार में लंबी अवधि के लिए निवेश करना आपके लिए काफी फायदेमंद रहेगा। यदि आप प्रॉपर्टी से सम्बन्धित कार्य करते हैं, तो इस अवधि में अच्छा लाभ होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहने वाला है। धनागम में अनियमितता बनी रहेगी। भौतिक सुख सुविधाओं पर आप अधिक खर्च करेंगे। द्वादशस्थ राहु के कारण आपको थोड़ी आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए धन बचाकर रखें और फिजूलखर्ची से बचें। किसी भी प्रकार का धन संबंधित लेन-देन करते वक्त सावधानी बरतें क्योंकि किसी नजदीकी व्यक्ति से धोखा मिलने की संभावना बन रही है।

22 जून से आर्थिक मामले के लिए समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आमदनी के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। किसी सरकारी आदमी के सहयोग से आर्थिक पक्ष मजबूत होगा तथा कोई मुनाफे का बड़ा सौदा हाथ लग सकता है। जो जातक व्यवसाय करते हैं, उनके टर्नओवर में बढ़ोत्तरी होगी तथा आप वांछित बचत करने में सफल होंगे।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता सहित पूरे

परिवार का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा। धर्मपत्नी के साथ आपके संबंध और मधुर होंगे। चतुर्थ स्थान पर राहु की दृष्टि माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है, परन्तु 22 जून के बाद यह स्थिति भी अच्छी हो जाएगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई बहनों के लिए उन्नतिकारक व श्रेष्ठ है। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक कल्याण के लिए कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे समाज में आपकी ख्याति और बढ़ेगी तथा सभी लोग आपको सम्मान की दृष्टि से देखेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अपने बौद्धिक बल के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 22 जून के बाद अचानक आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपकी दूसरी संतान के लिए शुभ है। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति करेंगे। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहे हैं। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही अनुकूल है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध कोई खास नहीं रहेगा। द्वादशस्थ राहु के कारण स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। परन्तु 22 जून के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल हो जाएगा।

यदि आप किसी पुरानी बीमारी से परेशान हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में उससे छुटकारा मिल सकता है। 27 अगस्त के बाद लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता प्रदान करेगी। आप आपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन करें एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपनी परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको वांछित नौकरी की प्राप्ति होगी।

व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वालो विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। द्वादशस्थ राहु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको खूब लाभ होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। धार्मिक गतिविधियो में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। मई के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- अमावस्या तिथि को किसी ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार या बुधवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक लिहाज से ग्रह स्थिति आपके पक्ष में बनी हुई है। कार्य व्यवसाय में जो परेशानियां आ रही थी उन सब से छुटकारा मिलेगा। व्यावसायिक गतिविधियां तेजी से चलेंगी। व्यापार में काफी ठोस व बड़े निर्णय लेंगे, जिससे आपके मुनाफे में बढ़ोत्तरी होगी। अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों से आप खुद को आगे पाएंगे। कस्टम, रॉयल्टी, वैट, इनकम टैक्स आदि से सम्बन्धित परेशानियां आ सकती हैं। किसी सरकारी मुसीबत का सामना करना पड़ सकता है लेकिन घबराने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि 30 जुलाई के बाद उसका भी समाधान मिल जाएगा।

11 सितम्बर के बाद आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं अतः उस समय आप सतर्क रहें तथा किसी पर भी आवश्कता से ज्यादा विश्वास न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति होगी तथा अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आपको बड़े अधिकारियों का समय समय सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। अचल संपत्ति के साथ साथ वाहनादि का सुख भी मिल सकता है। मांगलिक कार्यों में या सामाजिक कार्यों में आप अधिक व्यय करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ अनावश्यक खर्चे आ सकते हैं परन्तु जुलाई के बाद यह स्थिति भी अच्छा हो जाएगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध और भी श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके पास कोई पुराना कर्ज है तो उससे छुटकारा पा सकते हैं। आमदनी के नए स्रोत मिलने की उम्मीद है। विदेश अथवा दूर की यात्रा के माध्यम से भी धनार्जन होने के योग बन रहे हैं। यदि आपका पैसा कहीं रुका हुआ है तो थोड़े से प्रयास से उसकी प्राप्ति हो सकती है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा में अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहेगा। परिवार में कोई मांगलिक कार्य

सम्पन्न होने के योग बन रहे हैं। परिवार में सुख और शान्ति का वातावरण बनेगा। भाई-बहनों से आपके सम्बन्ध और मधुर होंगे। भाई-बहनों की उन्नति होगी। दूर रहने वाले पारिवारिक सदस्यों का घरागमन अथवा उनके साथ सम्बन्धों में सुधार होने से मन प्रसन्न होगा। परिवार के सभी सदस्यों का वर्ताव आपके प्रति अच्छा रहेगा। माताजी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, परन्तु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

जुलाई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा मे बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियो में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान-सम्मान के साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपका पराक्रम बढ़ेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों को उदर संबंधित रोग हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा-दीक्षा पर पड़ेगा। निर्णय लेने की शक्ति में कमी व उन्नति में व्यवधान आ सकता है। दूसरी संतान के लिए यह समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। लेकिन घबराने की बात नहीं है क्योंकि 30 जुलाई को गुरु ग्रह का गोचर आपके बच्चों के लिए शुभ हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके बच्चों के लिए शुभ है। संतान के उन्नति के मार्ग खुलेंगे तथा शिक्षा-दीक्षा में आने वाली रुकावटें दूर होंगी। आपके बच्चों को वांछित सफलता मिलेगी। यदि आपकी दुसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या सुधारें तथा व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करें। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

30 जुलाई के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ने से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव होने से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रुचि बढ़ेगी, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष काफी अच्छा रहेगा। छठे स्थान में शनि तथा एकादश स्थान में राहु के प्रभाव से आप सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। सभी शत्रुओं को परास्त कर सफलता के मार्ग पर आप सबसे आगे रहेंगे। जो

व्यक्ति इलेक्ट्रोनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में वांछित सफलता मिलेगी।

यदि आप कोई व्यासायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद है। यदि आप किसी नए शिक्षण संस्थान की तलाश में हैं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपको एक अच्छे संस्थान की प्राप्ति होगी जहां से शिक्षा लेने के बाद आप को नई और सही दिशा की प्राप्ति होगी। जो लोग दूर देश में जाकर शिक्षा लेना चाह रहे हैं, उनके लिए भी समय अनुकूल है। बेरोजगार जातकों को इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

30 जुलाई के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं अधिक होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक द्वन्दता के कारण पूजा पाठ में एकाग्रता नहीं रहेगी। परन्तु 30 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा। उस समय आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति आकृष्ट होगा।

आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। लक्ष्य प्राप्ति के लिए आप विशेष रूप से ईश्वर की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रुषा करें।
- केला या पीली वस्तुओं का दान करें। वीरवार का व्रत करे एवं बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- अपने पूजा घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें।
- प्रतिदिन गणेश जी के निम्नलिखित मन्त्र का पाठ करें-

  ॐ गं गणपतये नमः।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कारोबारियों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कोई कारोबार कर रहे हैं, उन्हें अधिक लाभ होने वाला है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहें है तो इस वर्ष इच्छित लाभ होगा। वर्ष के प्रारम्भ में अष्टमस्थ गुरु के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश करेंगे, परन्तु 16 फरवरी के बाद आप सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर लेंगे। उसके बाद समय बहुत ही शुभ होने वाला है।

आपके प्रयासों की सार्थकता ही आपकी सफलता को सिद्ध करेगी। जिससे विरोधी पक्ष भी आपकी तारीफ करने पर मजबूर हो जाएगा। सहयोगियों की सहायता से मान-सम्मान बढ़ सकता है। आय के बहुत सारे नये स्रोत सामने आ सकते हैं। जो लोग नौकरी में हैं, उन्हें तरक्की मिलने से वेतन वृद्धि हो सकती है। आप अपनी सारी ऊर्जा अपने नए प्रोजेक्ट में लगाएँ और अपने प्रयासों को दोगुना करें।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। 16 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आपके संचित धन में वृद्धि होगी। कोई पुराना उधार वापस मिलने से आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। जिसके चलते आप अपने व्यवसाय को विस्तार देने के बारे में सोच सकते हैं या किसी नए व्यापार में निवेश कर सकते हैं। ऋण और वित्तीय मामलों के संदर्भ में आपके प्रयास सफल हो सकते हैं।

यदि आप किसी से धन लिया हो अथवा उधारी हो तो उसे भी चुका कर कर्ज में कमी कर सकेंगे। आर्थिक सुधार के कारण व्यापार में सम्मान बना रहेगा। धन प्राप्ति के लिए आपको भाग दौड़ करनी पड़ सकती है। लेकिन आपको अपेक्षित नतीजे मिलने के कारण आत्म संतुष्टी भी होगी। भूमि व वाहन से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि पारिवारिक अनुकूलता के लिए अच्छी नहीं है। आपकी माता जी के साथ आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा आपके पारिवारिक

जीवन में थोड़ी मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। एक बात जो आपको सभी लोगों से जुदा करती है, वह है आपका अचानक क्रोधित होना और जल्दी शांत नही होना। यह आपके दाम्पत्य जीवन के लिए कतई अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें नहीं तो परिवार में किसी के साथ अनबन हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। सामाजिक स्तर पर भी आपको सतर्क रहना होगा कुछ अपमान जनक परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। घर की शोभा बढ ाने के लिए कुछ सुंदर वस्तुओं की खरीददारी संभव है।

संतान

संतान की दृष्टि से 16 फरवरी तक समय अच्छा नहीं है, परन्तु उसके बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य के बल पर आगे बढ़ेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है, परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। उनको शारीरिक एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। आलस्यता एवं दीर्घसूत्रता के कारण उनके सभी कार्यों में व्यवधान आते रहेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपको स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है। बाहर का खाना खाने से बचें अन्यथा फूड पॉयजनिंग से पीड़ित हो सकते हैं। आवश्यकता से अधिक परिश्रम आपको स्वास्थ्य की हानि दे सकता है इसलिए बेहतर है की आप पूर्ण विश्राम भी करें। त्वचा संबंधी विकार हो सकते हैं। 16 फरवरी के बाद समय अनुकूल हो रहा है। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत है। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जाओं का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता प्रदान करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवरी के बाद पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

प्रतियोगिता परीक्षार्थियो को सफलता मिलेगी परन्तु अथक परिश्रम के बाद। यदि

आप किसी के मित्र के साथ साझेदारी में कोई नया काम शुरु करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए काफी लाभप्रद रहेगा।

यात्रा-तबादला

16 फरवरी के बाद नवमस्थ गुरु के प्रभाव से इस वर्ष आपकी खूब यात्राएं होंगी। ज्यादातर समय आप अपने घर से बाहर ही रहेंगे। यात्रा दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह तबादला आपके घर से दूर भी हो सकती है। इस वर्ष आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान सम्पन्न करेंगे, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। गुरु दीक्षा लेकर मन्त्र साधना कर सकते हैं। गुरुजनों पर आपको अटूट विश्वास होगा।

- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना करें तथा उसके सामने देशी घी की दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- वीरवार के दिन केला व बेसन के लड्डू गरीबों को दान करें।
- माता पिता व अपने से बड़े लोगों की सेवा करें।

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आपको व्यापार में अच्छा लाभ मिलने वाला है। कुछ नए कारोबारियों से आपका संपर्क बढ़ेगा, उनके साथ काम करके आप एक नई ऊँचाईयों को प्राप्त करेंगे, साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको सभी कार्यों में वाच्छित सफलता मिलेगी। यदि आप अपनी पत्नी के साथ मिलकर कार्य रहे हैं तो सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले लोगों के लिए समय श्रेष्ठ रहने वाला है। पदोन्नति व इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण का पूर्ण योग बन रहा है। इस अवधि में आपको सराहना, सहयोग व ऐसी खुशी मिलेगी जिसकी तलाश आप एक लम्बे समय से कर रहे थे। आपका प्रत्येक काम समय से पहले पूरा होगा। वर्तमान नौकरी के अलावा अन्य स्रोतों से भी आपको लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष लाभदायक सिद्ध होगा। अतिरिक्त आय प्राप्त होने की उम्मीद पूरी हो सकती है। आपमें साहस का स्तर अधिक रहेगा तथा आप आमदनी के नए स्रोत भी पैदा कर सकते हैं। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे। मांगलिक कार्यों व सुख-सुबिधाओं पर इस वर्ष आप अधिक खर्च कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले लोगों को उनकी मेहनत का फल प्रोत्साहन राशि या वेतन वृद्धि के रूप में मिल सकता है। आर्थिक मोर्चे पर अच्छे समाचार मिल सकते हैं। सरकारी विभाग या अन्य किसी जगह पैसा फंसा हुआ है, उसकी पेमेंट हो सकती है। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ कुछ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण परिवार में काफी उतार-चढ़ाव होने की संभावना है। माता-पिता के साथ कुछ विवाद हो सकता है तथा फालतू के झगड़ों की संभावना है, इसलिए विवादों से दूरी बनाकर रहना आपके लिए फायदेमन्द रहेगा नहीं तो इससे आपकी पेशेवर और सामाजिक जिन्दगी प्रभावित हो सकती है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध अनुकूल होने के कारण परिजनों, परिचितों एवं मित्रों से हर कार्य

में सहयोग मिलेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार के लिए कोई नया वाहन लेने की स्थिति बना सकती है। मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से आपके कार्य पूर्ण हो सकते हैं। आपके खर्चों में वृद्धि की संभावना है। घर में मांगलिक कार्यक्रम का आयोजन हो सकता है। पुराने परिचितों से मिलने-जुलने और पुराने रिश्तों को फिर से तरोताजा करने के लिए अच्छा समय है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय मे शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं। दूसरे बच्चे के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

पंचम स्थान पर राहु की दृष्टि आपकी प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है तथा उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में भी रुकावटें आ सकता हैं।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी, परन्तु 2 मार्च के बाद जैसे ही यह स्थिति समाप्त होगी, उसके बाद आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित होगा।

15 जून के बाद अचानक बीमार हो सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी बीमारियां होती रहेंगी। अतः आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान तथा रहन-सहन पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा संक्रामक बीमारियों से है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इन सबका आपकी सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। आपकी शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। इस समय यदि आप अपने मन को एकाग्र कर पढ़ाई करेंगे तो अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पढ़ाई-लिखाई में कमी व प्रतियोगिता परीक्षा में व्यवधान आ सकता है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में धार्मिक यात्राएं अधिक करेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक यात्राएं

अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको खूब लाभ होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर तबादला होगा तथा यह परिवर्तन आपके लिए काफी शुभ रहेगा। अपने घर से दूर रहने वाले लोगों की इस वर्ष जन्मभूमि की यात्रा होगी। इस वर्ष आपकी विदेश यात्रा प्रभावित होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचम एवं लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा के लिए शुभ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। व्रत, यज्ञ, अनुष्ठान व भगवान की भक्ति में ज्यादा समय व्यतीत करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा पूजा पाठ में आपका मन भी नहीं लगेगा। मानसिक अशान्ति व शारीरिक कष्ट के कारण भी यज्ञ, अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें तथा नित्य उनका दर्शन करें।
- संपूर्ण बाधामुक्ति यंत्र का विधिवत् पूजन एवं दर्शन करें।
- प्रातःकाल पक्षियों को दाना डालें।
- सात मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन प्रातः काल धारण करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(16/02/2013 - 17/02/2032)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 16/02/2013 को आरम्भ और 17/02/2032 को समाप्त होगी।

शनि आपकी कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है और फल की प्राप्ति में विलम्ब और बाधा करता है। फल प्राप्ति की दिशा में यह जातक को कठिन परिश्रम के लिए प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है, किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है। अतः यह एक 'कार्मिक' ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि आपकी जन्मकुण्डली के पांचवें, नवें और बारहवें भाव पर है और इन भावों पर इसका प्रभाव है। तृतीय भाव, जिसमें यह स्थित है, मानसिक अभिरुचि, बुद्धि, साहस, पराक्रम, छोटी यात्रा, संप्रेषण, हाथ, गले, बाँह तथा स्नायु-तंत्र का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

साहस तथा पराक्रम के तृतीय भाव में स्थित महादशा स्वामी शनि अपने भाव को शक्ति प्रदान करता है। इसलिए इस दशा के दौरान आप स्वयं को साहसी और बहादुर अनुभव करेंगे और आपको कोई गम्भीर बीमारी अथवा स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी।

धन-सम्पत्ति :

शनि तृतीय अर्थात साहस, बुद्धि और अभिरुचि के भाव में स्थित है। फलतः आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके ऋणों का भुगतान होगा और आप आराम व विलास की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

बहादूर तथा साहसी होने के कारण आप तरंगी तथा निर्मम होंगे। आप स्थानीय बोर्ड, नगर निगम आदि के प्रधान या अध्यक्ष हो सकते हैं। आपको सफलता मिलने में कठिनाई होगी और लक्ष्य प्राप्ति में बाधाएं आएंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्तम और सद्भाव पूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपका सहयोग करेंगे। किन्तु, आपके भाई-बहन समस्याएं और कठिनाइयाँ खड़ी करेंगे जिनका सामना आप साहसपूर्वक करेंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

उच्च शिक्षा तथा साहित्यिक वृत्ति के विकास के लिए दशा अनुकूल है।

अंर्तदशा :- शनि - मंगल
(21/08/2025 - 29/09/2026)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 16/02/2013 को प्रारंभ होकर 17/02/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 21/08/2025 को प्रारंभ होकर 29/09/2026 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

इस अवधि में आप जल्दबाज, ऊर्जावान, साहसी और महत्वाकांक्षी होंगे मगर दुर्घटना का खतरा होगा। घरेलू जीवन में थोड़ी अशांति हो सकती है। आपके जीवनसाथी साहसी मगर क्रोधी स्वभाव के हो सकते हैं। आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आप मंगली हैं, अतः आपके जीवनसाथी भी मंगली हों, तो उत्तम रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन हनुमान मंदिर में जाएं और हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- शनि - राहु
(29/09/2026 - 05/08/2029)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 16/02/2013 को प्रारंभ होकर 17/02/2032 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 29/09/2026 को प्रारंभ होकर 05/08/2029 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। सप्तम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी जीवन शैली समृद्ध और सुख-सुविधामय होगी। खान-पीन के शौकीन होंगे। इस कारण निम्नकोटि के लोगों से मित्रता हो सकती है। खान-खान में अनियंत्रण के कारण मधुमेह आदि व्याधियां हो सकती हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कच्चे दूध से धोकर, बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

महादशा :- बुध
(17/02/2032 - 16/02/2049)

बुध की महादशा 17/02/2032 को आरम्भ और 17 वर्ष की होकर 16/02/2049 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध पंचम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, सफलता, उत्तम शिक्षा और धन की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी शिक्षा उत्तम होगी, सट्टे में लाभ तथा सन्तान से सुख मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, आशावादी तथा स्फूर्तिवान होंगे। आपको अक्सर पाचन क्रिया की शिकायत हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग तथा स्नायविक समस्या हो सकती है। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। सतर्कता बरतकर इन मामूली बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपको सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। आपको अचानक लाभ या अवकाश ग्रहणसे लाभ, ग्रेच्यूइटी आदि की प्राप्ति होगी। आपका निवेश शुभदायक और आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। कुछ मामूली नुकसान भी हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तर तथा परिवर्तन हो सकता है जो लाभदायक होगा। वाणिज्य-व्यापार से सम्बद्ध सभी कार्यों में आप अच्छा करेंगं। सहकर्मियों तथा सहायकों

के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। दशा की प्रगति के साथ-साथ स्थिति में सुधार होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के कार्य में परिवर्तन होगा। आप आपने कार्य में परिवर्तन या अन्य आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं जो अन्ततः लाभदायक होंगे। आपका उपार्जन तथा लाभ अच्छा होगा। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग तथा बौद्धिक कार्य कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यपार लाभदायक हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

पारिवारिक सुख और वाहन की दृष्टि से यह दशा आपके लिये उत्तम होगी। आपको जमीन-जायदाद या ऐसी अन्य सम्पत्ति से लाभ होगा। आपको यातायात से भी लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा में आप की छोटी और शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आप की शिक्षा अति उत्तम होगी। आपका प्रशिक्षण अच्छा होगा और आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफल होंगे। आपकी लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षण तथा शैक्षिक सेवा आदि में रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपको रुचि होगी। आपका मस्तिष्क बौद्धिक तथा विश्लेषणात्मक होगा और सभी बौद्धिक कार्यों में आप अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा और उनसे आपको सुख मिलेगा। वे आप से दूर जा सकते हैं या उन्हें कुछ मामूली समस्याएं हो सकती हैं जो दशा की उन्नति के साथ गुजर जाएंगी। आपके जीवन साथी को हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा, उन्हें सुख की प्राप्ति होगी और उनकी मनोकामनाएं पूरी होंगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता के लिये यह दशा लाभदायक होगी जबकि आपके पिता को सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनका भाग्यादेय और यात्रा होगी तथा बौद्धिक कार्यों में उनकी रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कठिन परिश्रम करना होगा, उनकी छोटी यात्रा होगी और सम्बन्धियाँ से सहायता मिलेगी जबकि आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ मिलेगा, उनकी शादी होगी और वाणिज्य व्यापार में सफलता मिलेगी। आपका उनके साथ संबंध अच्छा रहेगा। बुध की इस दशा में आपको सुख मिलेगा, वैवाहिक जीवन उत्तम रहेगा, आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी तथा अच्छे पद की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर दशा के कारण आपको सम्पत्ति तथा सुख मिलेगा और शिक्षा उत्तम होगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। सूर्य की अन्तर्दशा के कारण लाभ तथा विवाह हो सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य खराब हो सकता है तथा ननिहाल से लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में जीवन-वृत्ति में उन्नति तथा छोटी यात्रा होगी। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप लाभ तथा

सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि लग्नेश शनि की अन्तर्दशा में यशा, ख्याति और सफलता मिलेगी।

अंर्तदशा :- बुध - बुध
(17/02/2032 - 15/07/2034)

आपके लिए बुध की महादशा 17/02/2032 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 17/02/2032 को प्रारंभ होकर 15/07/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको निवेश और शेयर आदि से लाभ होगा। बुद्धिमत्ता उत्तम होगी। प्रत्येक कार्य सावधानी से करेंगे। प्रसन्न और आशावादी होंगे। सम्मान में वृद्धि होगी। उच्चपद प्राप्त हो सकता है।

दर्शन और अध्यात्म में रुचि हो सकती है। नाटक, कला और बाल मनोविज्ञान में रुचि होगी। विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा। नौकरी में सफल रहेंगे।

आपके जीवनसाथी धन कमाएंगे, सफल होंगे, नयी योजनाएं बनाएंगे। आपके पिता प्रसिद्ध और धनी बनेंगे, अध्यात्म में रुचि होगी। माता को धन का लाभ होगा, घरेलू जीवन सुखी रहेगा, उत्तम वस्त्र और आभूषण प्राप्त होंगे।

आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, व्यापार और साझेदारी से लाभ का संकेत है। आपकी संतान परीक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, विवाह हो सकता है, यात्रा संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। परामर्शदाताओं के कार्य में अप्रत्याशित घटना घट सकती है। व्यापारी धनी बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुधवार को काली गाय को रोटी और गुड़ दें।

अंर्तदशा :- बुध - केतु
(15/07/2034 - 12/07/2035)

आपके लिए बुध की महादशा 17/02/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 15/07/2034 को प्रारंभ होकर 12/07/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म में रुचि होगी, अंतर्ज्ञान शक्ति सुदृढ़ होगी। कभी-कभी वैराग्य की भावना प्रबल हो सकती है। साझेदारी से लाभ हो सकता है। व्यापार में अचानक प्रगति हो सकती है। यात्रा संभव है। विवाह हो सकता है। सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि हो सकती है। माता तीर्थयात्रा कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, सुख-साधन,

सम्मान, प्रसन्नता, धन में वृद्धि, स्पर्धियों पर विजय और साहस का संकेत है। आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी, पिता और गुरु से संबंध मधुर रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं, अचानक लाभ हो सकता है, रुका धन वापस मिल सकता है। परामर्शदाताओं को पहले किये निवेश और साख से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। मुख और नेत्रों की व्याधि के प्रति सावधान रहें। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की पूजा करें।

अंर्तदशा :- बुध - शुक्र
(12/07/2035 - 12/05/2038)

आपके लिए बुध की महादशा 17/02/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 12/07/2035 को प्रारंभ होकर 12/05/2038 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न और संतुष्ट रहेंगे। माता से प्रेमपूर्ण संबंध रहेंगे। परिवारजनों और मित्रों से अच्छे संबंध होंगे। जीवन सुखमय होगा। अचल संपत्ति, वाहन और आभूषण क्रय कर सकते हैं। शिक्षा उत्तम होगी। बहुत से मित्र होंगे। कूटनीति में सफल रहेंगे। साहित्य में नाम कमा सकते हैं। नेकी के कामों में हिस्सा लेंगे।

आपके जीवनसाथी सफल और प्रसिद्ध होंगे। आपके पिता प्रसन्नचित्त रहेंगे। माता के लिए शांति और धन की संभावना है। आपके भाई-बहनों के लिए धनलाभ, सुख-साधन, उत्तम शिक्षा, शत्रुओं पर विजय, मामापक्ष से लाभ और उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

आपकी संतान का मन पढ़ाई में कम लग सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो स्पर्धियों पर विजयी होंगे, धन की बचत करेंगे और सुख के साधन क्रय करेंगे।

अंर्तदशा :- बुध - सूर्य
(12/05/2038 - 19/03/2039)

आपके लिए बुध की महादशा 17/02/2032 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 12/05/2038 को प्रारंभ होकर 19/03/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपकी आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। प्रारंभ किया कार्य पूर्ण होगा। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। शिक्षा उत्तम होगी। उच्चपद मिल सकता है। बुद्धि का प्रयोग अच्छी तरह से करेंगे। दर्शनशास्त्र आदि का अध्ययन कर सकते हैं। सफलता सरलता से मिल जाएगी। सम्मान, सफलता और समृद्धि का योग है।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता का भाग्य चमकेगा। माता को धनलाभ, खुशी और व्यक्तित्व में निखार का संकेत है। आपके भाई-बहनों के पास सुविधाएं होंगी, विवेकशक्ति उत्तम होगी, साझेदारी से लाभ होगा, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, धनी बनेंगे।

आपकी संतान आत्मविश्वास से पूर्ण होगी। अगर वे सेवारत हैं तो धन, प्रसिद्धि, सफलता का संकेत है।

अगर आप सेवारत हैं तो परिवर्तन या तबादला हो सकता है। परामर्शदाताओं को अचानक लाभ हो सकता है; कुछ सुखकारी परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारी समृद्ध बनेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली पित्त संबंधी शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - चन्द्र
(19/03/2039 - 17/08/2040)

आपकी बुध की महादशा 17/02/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 19/03/2039 को प्रारंभ होकर 17/08/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। शिक्षा उत्तम रहेगी। उपलब्धियों द्वारा प्रसिद्धि मिलेगी। उपहार प्राप्त हो सकते हैं, खुशियों और घरेलू सुख का संकेत है। कार्यक्षेत्र में लाभकारी परिवर्तन हो सकता है। साहित्यिक प्रतिभा और बारीकी से काम करने के लिए प्रशंसा मिलेगी। अचल संपत्ति और खेती से लाभ हो सकता है। वाहनसुख रहेगा। जीवन में खुशियां और सुख-सुविधाएं मिलेंगी।

आपके जीवनसाथी की परिवार से घनिष्ठता बढ़ेगी । आपके पिता के धन में वृद्धि होगी; परिवार से खुशियां मिलेंगी। माता को साझेदारी से लाभ होगा, सुख-साधन उपलब्ध होंगे।

आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है, अचानक लाभ हो सकता है, खुशियां मिलेंगी, उपहार-वसीयत आदि से लाभ होगा, साझेदार से लाभ होगा, व्यर्थ की यात्रा संभव है, खर्चे बढ़ेगे, कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आपकी संतान परीक्षा और स्पर्धा में सफल होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - मंगल
(17/08/2040 - 14/08/2041)

आपके लिए बुध की महादशा 17/02/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 17/08/2040 को प्रारंभ होकर 14/08/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी, लक्ष्य प्राप्त होगा। स्पर्धा में सफल होंगे। साहस उत्तम रहेगा। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। नीति और धैर्य से लाभ होगा। व्यापार में लाभ होगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, कार्यों में सफलता मिलेगी, विरासत में धन आ सकता है। पुरानी सुविधाएं बदल कर नया वातावरण निर्मित हो सकता है। तंत्र, मंत्र आदि में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी और व्यापार में लाभ होगा। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। माता सफल और ऊर्जावान रहेंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए धन, सफलता, लाभकारी निवेश, सुख, कला और साहित्य में रुचि का संकेत है। आपकी संतान सफल और प्रसिद्ध होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी चोट से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए शिवजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- बुध - राहु
(14/08/2041 - 03/03/2044)

आपके लिए बुध की महादशा 17/02/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 14/08/2041 को प्रारंभ होकर 03/03/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारी से लाभ होगा। व्यापार में लाभ होगा। लाभ में वृद्धि होगी। इच्छाशक्ति उत्तम होगी, स्वतंत्र निर्णय लेंगे। समाज में सफलता मिलेगी। व्यापार में अचानक लाभ हो सकता है। स्पर्धियों पर विजय होगी। विवाह हो सकता है। व्यापार संबंधी यात्रा हो सकती है; विदेश भी जा सकते हैं। उच्चपद प्राप्त होगा। अन्य लोग मदद करेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप दूसरों की सहायता करेंगे।

आपके जीवनसाथी को धन का लाभ होगा। आपके पिता को निवेश और सट्टेबाजी

में लाभ हो सकता है। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी; घरेलू सुख रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, निवेश में लाभ, यात्रा, शिक्षा में प्रसिद्धि, भौतिक सुखों का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा के लिए समर्पित रहेगी, दृढ़प्रतिज्ञ होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी, कार्य में लाभ होगा, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं का लाभ बढ़ेगा, व्यस्त रहेंगे। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा, कार्यप्रणाली उत्तम होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी के बजरंग बाण का पाठ करें।

अंर्तदशा :- बुध - गुरु
(03/03/2044 - 09/06/2046)

आपके लिए बुध की महादशा 17/02/2032 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 03/03/2044 को प्रारंभ होकर 09/06/2046 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। किस्मत साथ देगी। बड़े-भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। चाचा से भी उत्तम संबंध होंगे। आर्थिक प्रगति के अवसर मिलेंगे। बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे जिनसे मदद मिलेगी। विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। उच्चपद प्राप्त हो सकता है। लेखन, प्रकाशन और विक्रय से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता को संचार माध्यम से लाभ होगा। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है; अचानक धनलाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, सुख-साधन, शिक्षा में सफलता, यात्रा, तीर्थयात्रा, प्रगति, उत्तम स्वास्थ्य और उत्तम विवाहित जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक कार्यों से लाभ होगा, परीक्षा में सफलता मिलेगी, सम्मानित होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो सुख-साधन उपलब्ध होंगे, साझेदारी से लाभ होगा, यात्राएं होंगी, व्यापार में लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में वातावरण मधुर रहेगा। परामर्शदाताओं और व्यापारियों की आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कान की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ - 2026

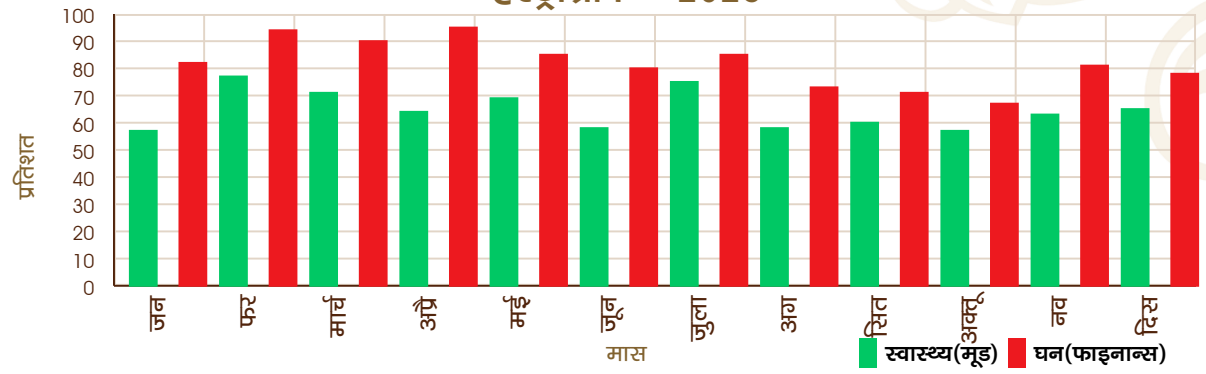

एस्ट्रोग्राफ - 2027

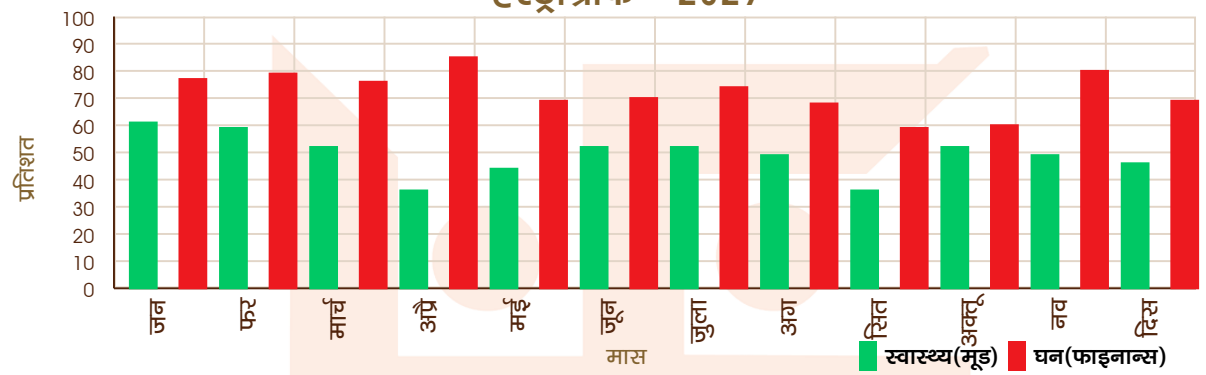

एस्ट्रोग्राफ - 2028

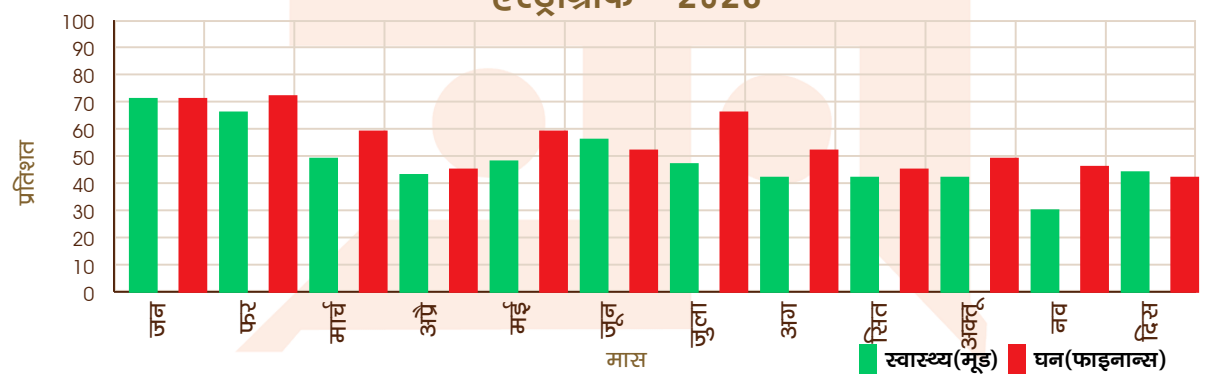

एस्ट्रोग्राफ - 2029

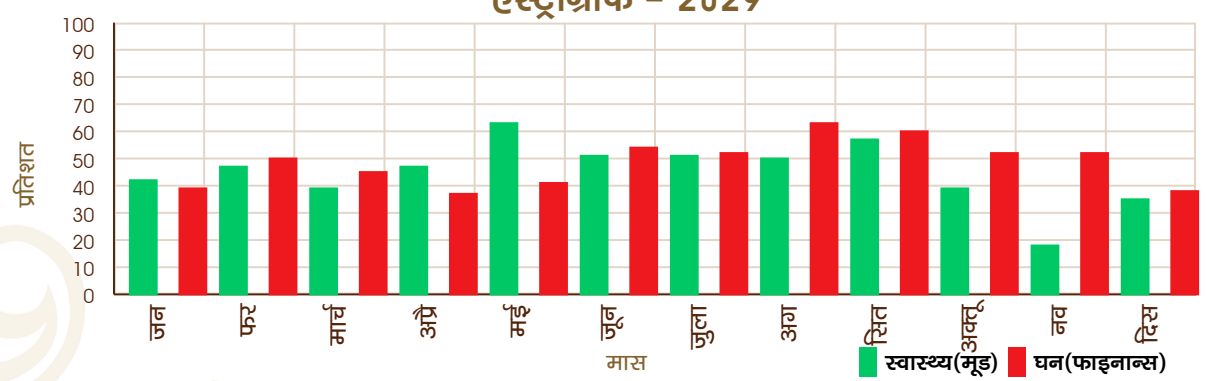

एस्ट्रोग्राफ - 2030

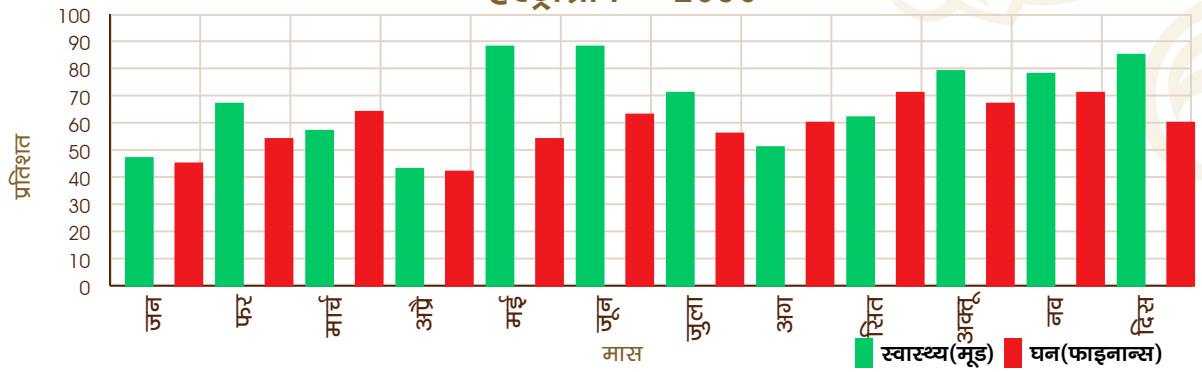

एस्ट्रोग्राफ - 2031

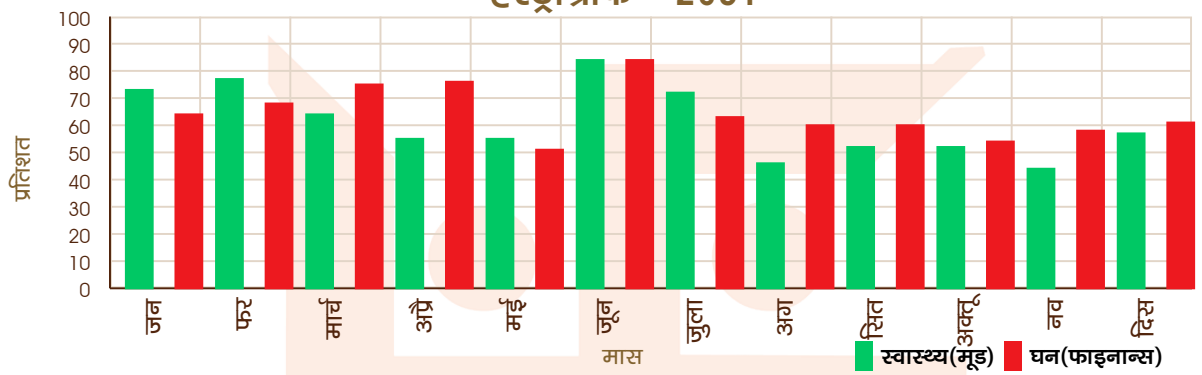

एस्ट्रोग्राफ - 2032

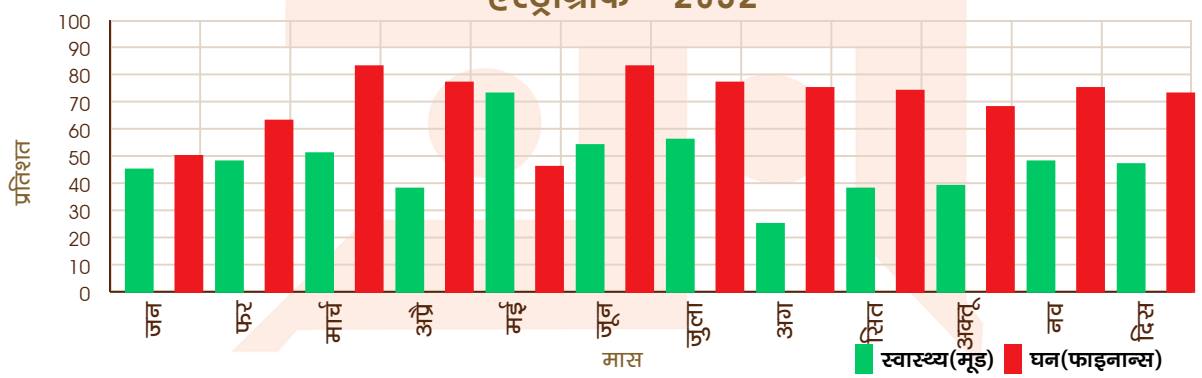

एस्ट्रोग्राफ - 2033

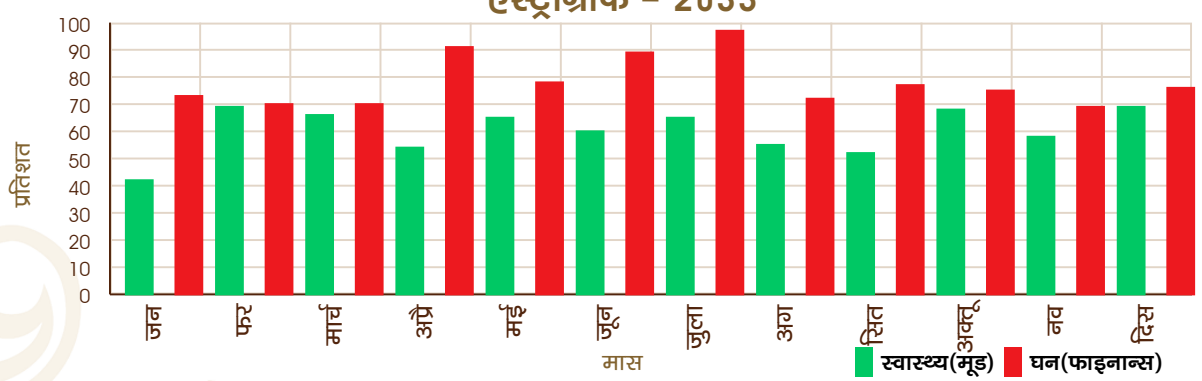

एस्ट्रोग्राफ - 2034

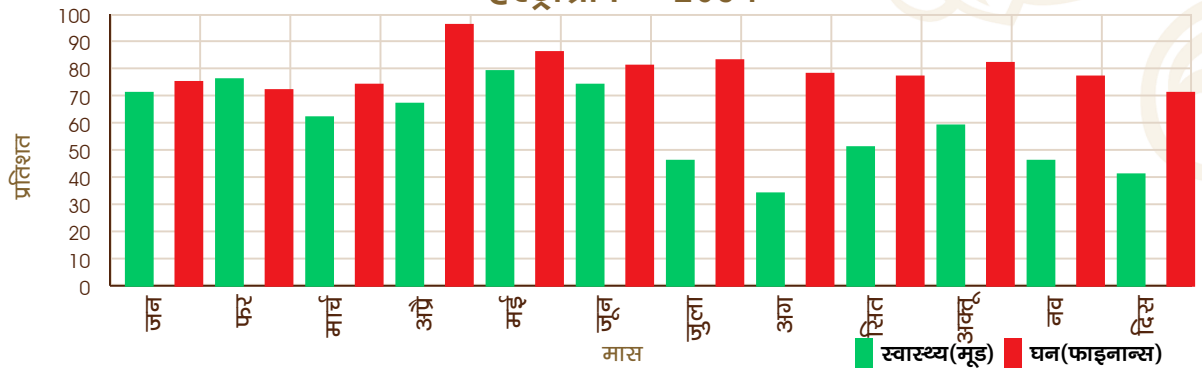

एस्ट्रोग्राफ - 2035

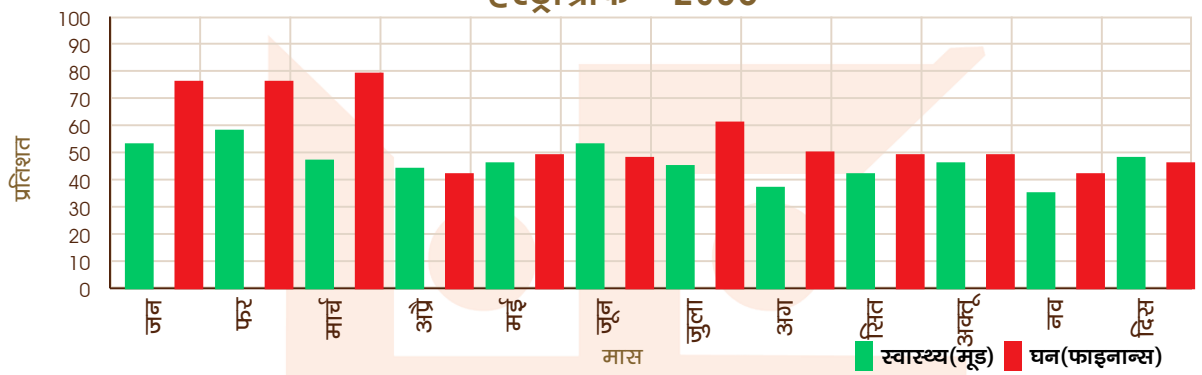

एस्ट्रोग्राफ - 2036

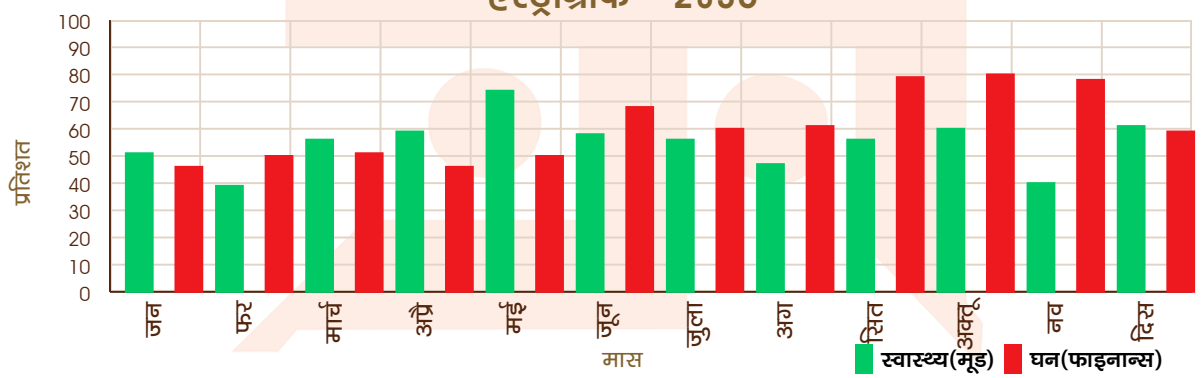

एस्ट्रोग्राफ - 2037

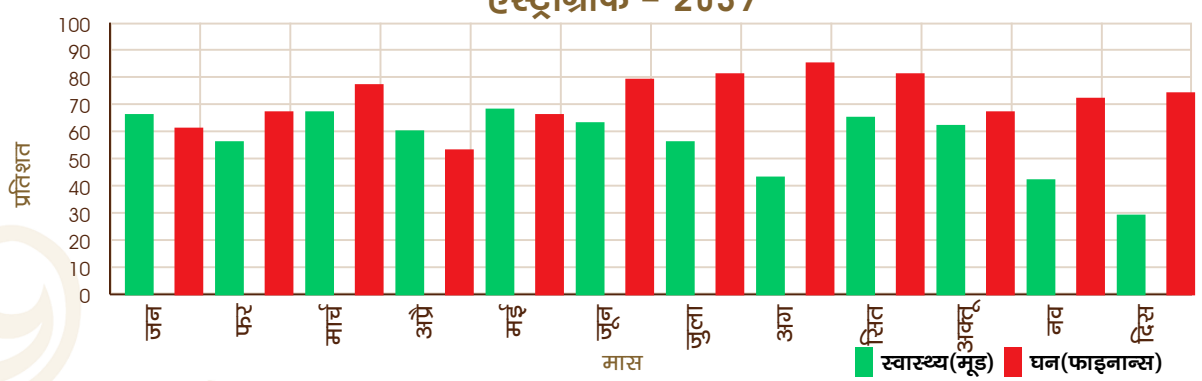

एस्ट्रोग्राफ - 2038

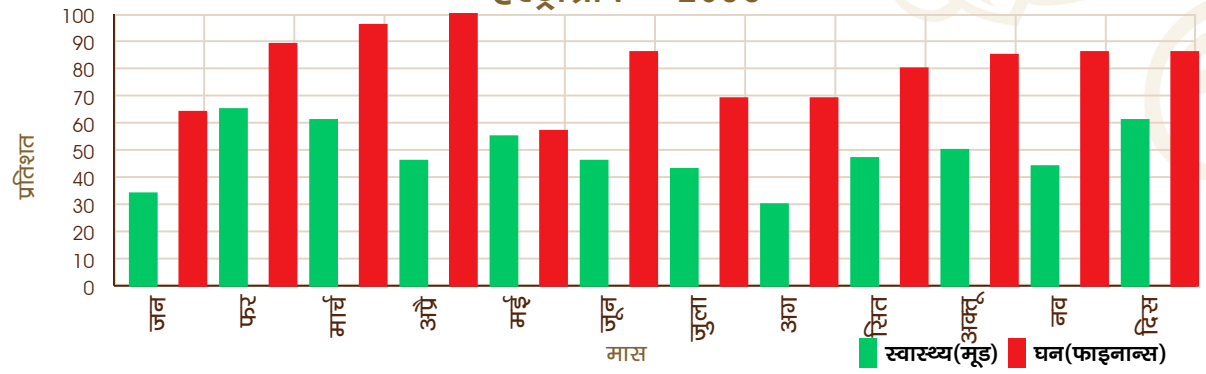

एस्ट्रोग्राफ - 2039

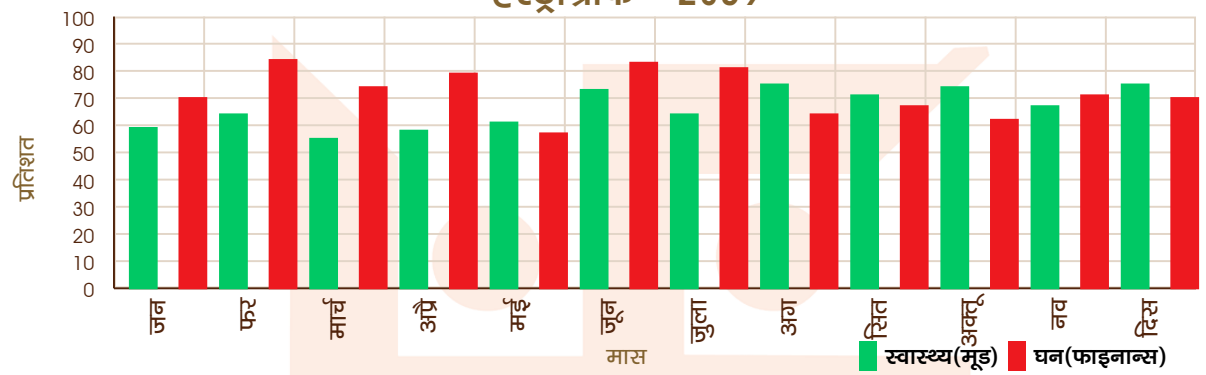

एस्ट्रोग्राफ - 2040

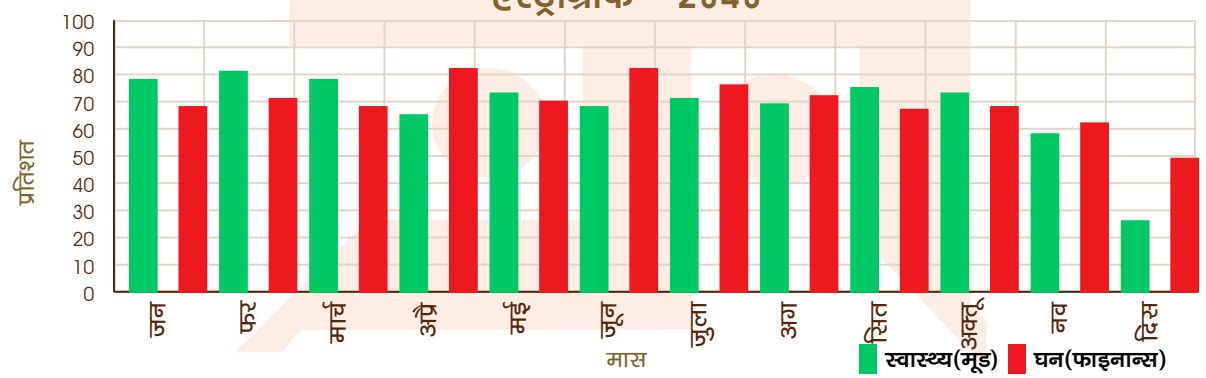

एस्ट्रोग्राफ - 2041

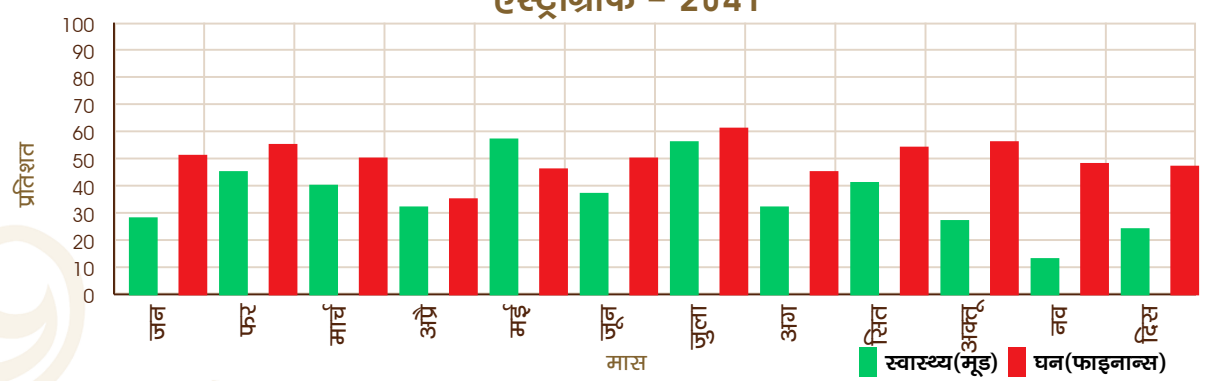

एस्ट्रोग्राफ - 2042

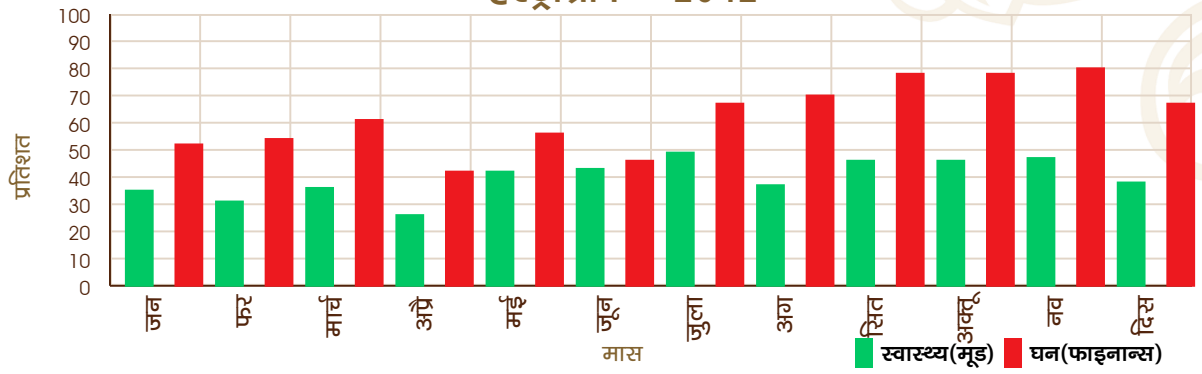

एस्ट्रोग्राफ - 2043

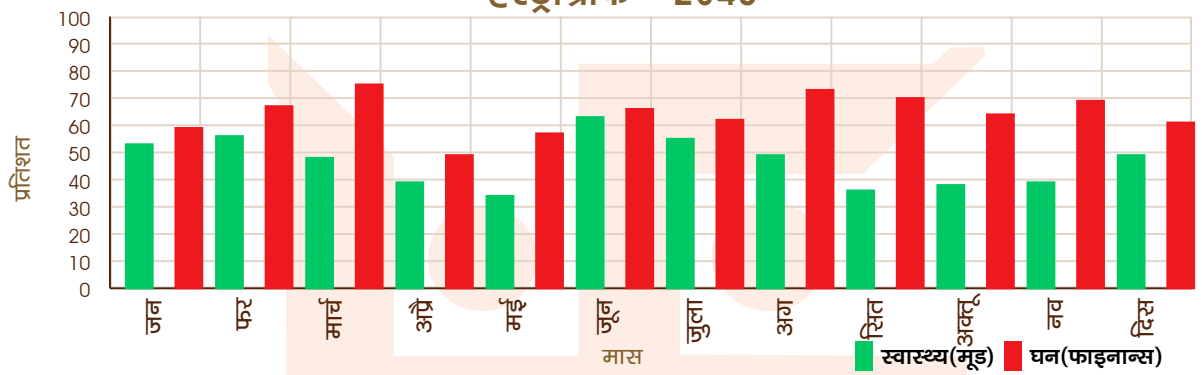

एस्ट्रोग्राफ - 2044

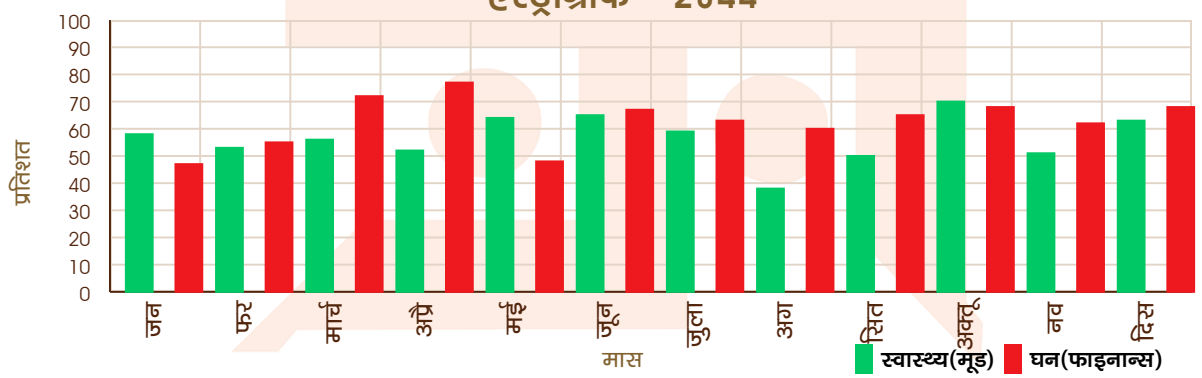

एस्ट्रोग्राफ - 2045

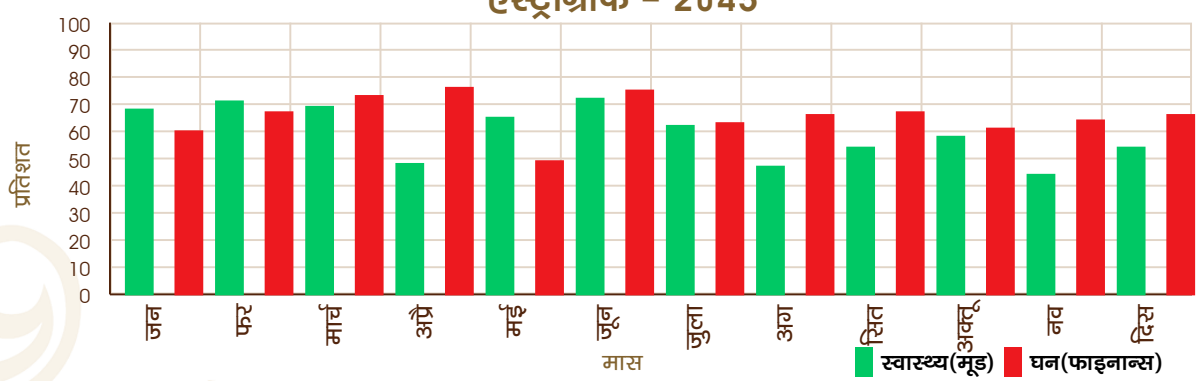

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

छत्रयोग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सुसंसारसौभाग्यसन्तानलक्ष्मी
निवासो यशस्वी सुभाषी मनीषी।
अमात्यो महीशस्य पूज्यो धनाढ्यः
स्फुरत्तीक्ष्णबुद्धिर्भवेच्छत्रयोगे।।
।। फलदीपिका ।। अ. 4/श्लोक 44, 49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव में शुभग्रह हों या शुभ ग्रह से पंचम भाव निरीक्षित हो तथा पंचमेश अस्त न हो और वह स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो छत्रयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सौभाग्यशाली, पुत्रवान, धनवान, यशस्वी, बुद्धिमान, प्रखर वक्ता, तेज बुद्धिवाले और राजसुख से युक्त राजा के मंत्री होंगे। आप राजसरकार से सम्मानित होंगे। आपको पंचम भाव से संबन्धित सभी सुख प्राप्त होंगे।

पृथ्वीपति योग

पत्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे।
शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 3/श्लोक 17।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,गुरु,बुध योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे।

सुनफा योग

सुनफा रविरहितैः वित्तसंस्थैः कैरववनबान्धवाद्विहगैः।
श्रीमान् स्वबाहुविभवो बहुधर्मशीलः
शास्त्रार्थविद्बहुयशाः सुगुणाभिरामः।
शान्तः सुखी क्षितिपतिः सचिवोऽथ वा स्यात्।
सुतः पुमान् विपुलधीः सुनफाभिधाने।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 4।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य को छोड़कर चंद्रमा से धनभाव में कोई ग्रह हो तो सुनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप लक्ष्मीवान्, अपने परिश्रम से धनार्जन करने वाले, धार्मिक, यशस्वी, गुणी, शान्तप्रिय, सुखी, राजा या मंत्री होंगे।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वाहन योग

वाहनार्थतृतीयेषु भाग्यकर्मभवाधिपाः ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-177 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सुख, लाभ एवं पराक्रम भाव में नवमेश, दशमेश एवं लाभेश हो तो जातक को वाहन प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,गुरु योग की संभावना : 1728 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको उत्तम वाहन सुख प्राप्त होगा ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-32 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,शनि योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

शिर मुख या गुल्म रोग योग

बलहीनेऽरिनाथे वा लग्नस्थे वा धरासुते।
मूर्धार्तिर्मुखरोगो वा गुल्मविद्रधिभाग्भवेत्।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि-अ.-5/श्लो.-42 ।।

यदि जन्मकुंडली में षष्ठेश निर्बल हो या लग्नस्थ हो अथवा लग्न में मंगल हो तो शिर में पीड़ा या मुखरोग अथवा गुल्मरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शिर रोग, मुखरोग या गुल्म रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुनर्जन्म योग

महीजोमहीं सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में मंगल हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में मंगल स्थित हो अथवा द्वादशेश मंगल से संबंध स्थापित करता हो तो जातक मरणोपरांत शीघ्र जन्म लेकर पृथ्वी पर आता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत पुनर्जन्म लेकर पृथ्वी पर आएँगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 1 ।।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,बुध योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।